उस जनपद का कवि हूँ (कविता संग्रह 1981)
मरघान (कविता संग्रह 1984)

। 50 गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

ज्वर यात्रा

धनराज चौधरी,

श्याम प्रकाशन, जयपुर

राजस्थान साहित्य अकादमी के
आर्थिक सहयोग से प्रकाशित

सर्वाधिकार धनराज चौधरी
मूल्य पचीस रुपये
प्रथम संस्करण 1986
प्रकाशक श्याम प्रकाशन
फिल्म कालोनी जयपुर-302 003
मुद्रक कमल प्रिंटर्स
9/5866 गांधीनगर, दिल्ली 110 031

JWAR YAATRA (*short stories*)
by Dhan Raj Chaudhary Price 25 00

उस जनपद का कवि हूँ (कविता संग्रह 1981)
प्रस्थान (कविता संग्रह 1984)

ी 50 गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

अनुक्रम

उस जनपद का कवि हूँ (कविता संग्रह 1981)
प्रस्थान (कविता संग्रह 1984)

सी 50 गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

ज्वर यात्रा

(कथा संग्रह)

उस जनपद का कवि हूँ (कविता संग्रह 1981)
अरघान (कविता संग्रह 1984)

50 गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

तनिक सौभाग्य

तग आ गयी मैं तो इस एकरस वातावरण से। स्टाफ रूम पर्दे दपण मेज कुर्सिया दरी टायलेट, इत्यादि सब कुछ वही। सहधर्मिया की वे ही बातें आज अमुक सब्जी बनायी थी मेरे उनको बहुत पसद है—मेरी बला से हमारा बेबी बडा समझदार हो गया है—कमाकर तुम्हे ही देगा मिसरमा का वी० डी० ओ० से चल रहा है—मरी तुम क्या पतली पडी जा रही हो सर्दी मे ऊन गर्मी मे शीतल पेय। इस देश मे स्त्री पुरुष का जीने के लिए जैसे दो ही वस्तुएँ हैं दो ऋतुओं मे।

वह दिन अनुकूल नही था, निबटान को कुछ काय शेष था। तकलीफ के उन दिनो म बाहर जाया जाता है क्या ? मगर इस बार अपने नारी सुलभ नखरे दिखाने का समुचित कारण नजर नही आता। और भला, जब जाना ही है तो चल देना चाहिए।

कितनी प्रसन्नता और पहुँचने की तत्परता थी उस नीरस परिवेश से छुटकारा पाने पर मगर अब न जाने क्यो, कुछ और अवकाश की ऊहापोह मची है। इटरनल का नाम है एम० एम० सक्सेना। कोई मिस एम० सक्सेना तो नही ? क्या लडको के कॉलेज म वही सिलसिला रहेगा—कपडे इस रग की त्वचा पर खूब फब रहे हैं यह साडी किस मिल की है बहना भई तुम्हें तो रोज पसद है मुझे तो जेस्मिन' उफ।

निकट बैठे छात्र की मेरी गोद मे पडी पत्रिका पर नजर है। मागने का साहस नही है शायद। बढाते हुए पूछती हूँ—देखोगे ? वह कृतज्ञतापूवक ले लेता है। पुरुष अँगुली का सस्पश कितना मदिर होता है। या कि यह मिस्टर

एम० एम० सक्सेना काई भारी भरकम से मुझसे पुत्र-पुत्रियों के पिता हैं। निमिष मात्र के लिए वह छात्र कनखियों से मेरी ओर देखता है—एक निरी बालसुलभ जिज्ञासा के साथ। बड़ी प्यारी है उसकी दृष्टि इच्छा होती है वह देखता रहे।

किस कहानी म वह खोजता है मैं लेखा जोखा करने लगती हूँ। अध्ययन काल म न मित्र न साथी, अपना यदि कोई था तो परिश्रम से बनाये नोटस और अब यह निरथक नौकरी नीरस जिंदगी—भाषण झाड दो एम० जो० करवा दो। मिसेज कप्टन वर्मा को भाडा भर आओ सिनेमा देख लो अपनी हीन भावनाओं को प्रसाधनों स ढकने का असफल प्रयास करते रहो।

थक यू मडम। छात्र ने पत्रिका थमाते हुए मेरी गिनती भग की। उसका गतव्य आ चुका था वह उतर गया। दो दिन बाद मुझे भी लौट आना है। जानकर की गयी भूल महसूस हुई। चाची को लिख देना चाहिए था कि मैं पहुँच रही हूँ। अच्छा होता मना ही कर देती कि मैं लडको की परीक्षा लेने नही जाऊगी। ऐसी ही सगत असगत बातें मैं सोचती रही।

इटरनल को स्टेशन पर न देख गुस्सा हो उठना स्वाभाविक ही है। हो सकता है वय म वह बडा हो तथापि तनिक शिष्टाचार या औपचारिकता की अपेक्षा तो की ही जाती है। समझता होगा वसे ही रौब-दाब से अक तो दे जायगी किसी अबला स क्या भय ! ठीक है मैं भी देख लूगी कोमलागी हूँ कोमल निश्चयी नही।

चाची के घर अप्रत्याशित पहुँचना कौतूहल का विषय बन गया। किसे अनुमान था सरला परीक्षा लेने आ रही है वह भी लडको के कॉलेज म।

बेटी, लिख देती तो हम स्टेशन आ जाते।'

'जल्दी म आना पडा चाची।'

कुछ समय तक और घिसी पिटी बातें होती रही। नहाकर आयी तो मोहन घर पर था। चाचाजी का ज्येष्ठ पुत्र—कोई तीन चार वष छोटा

उस जनपद का कवि हूँ (कविता सग्र 1981)
अरघान (कविता संग्रह 1984)
50 गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

होगा मुझसे। तृतीय वष कला का विद्यार्थी है वह। मुझे देखते ही उछल पडा, 'जीजी, तुम लडको का इम्तहान लोगी ?'

'वे मुझे नोच डालेंगे क्या ?'

'डरन की बात नही, मोहन की अपने कालेज म धाक है।' उम्र म छोटा होकर भी कितना बडा है वह—मैं सोचती हू।

'दादा महाशय यह एम० एम० सक्सेना क्या चीज है ?'

कौन सक्सेना साहब अरे दीदी आनद आ जायेगा तब तो।' बडा स्मार्ट हो गया है वह।

क्या मतलब ?'

'सीरियसली कहूँ। विषय से तो हम कलाकारो का उनस कोई सपक नही पर मैं जानता हूँ व एक सज्जन हँसमुख मितभाषी यक्ति है।

होंगे कोई चार पाँच बच्चो के बाप।

'यदि हो तो तुम्हें क्या ?' कुछ स्पष्ट हो मुझे टटोलना चाहता है। दुगुण ही कहिये, जब कोई मेरी बात पकड लेता है तो आवेशित हो उठती हूँ मगर अपना बचाव स्वय ही तो करना है। नही रे, वैसे ही पूछ लिया था।' कुछ शक्ति एकत्र कर कहती हूँ 'दो दिन साथ रहना है कुछ आगे-पीछे की जानकारी तो रखनी चाहिए न।

इस पोच दलील से वह आश्वस्त हो गया हाँ तो ऐसा कहो। बिलकुल गोरे चिट्टे लौंडे है। होंगे कोई तुमस दो साल बडे। जहाँ तक मुझे ज्ञात है, शादी तो अभी नही की है।' उसके स्वर म चचलता है।

इस मोहन से एक बात पूछो सौ कहेगा। बातो का सिर न पैर। सदभ से जुडी हुई फिर भी नितात अनावश्यक कम स-कम इतनी तमीज होनी चाहिए कि बडी बहन के साथ कसे पेश आते हैं! वह बहन जो एक प्राध्यापिका भी है।

थकी थी अत मैंने जल्दी ही सोना चाहा। छत से लटके एक-सी गति से घूमते पखे का प्रेक्षण लेती हू। एक दीघ विरल वत्त तदुपरात इच-दो इच का गैप और एक ठास वत्त। कितने समय स देख रही हू गप भरता ही नही। फुलस्पीड करने पर भी दूरी नही पटती। अपेक्षाकृत दोनो वत्त और अधिक स्पष्ट हो जाते हैं। दोनो वत्तो की परिधियाँ सीमित हैं निश्चित हैं।

स्नातकोत्तर उत्तराध परीक्षा के तुरत बाद ही एक प्रोफेसर ने पूछा था—शोध का इरादा है ? लेकिन नौकरी ही मेरी सर्वोपरि अभिलाषा रही है। रही सही उम्र भी सूना और समीकरणा म गुजार दूगी ? पर य मोहन बडा तेज तर्रार है। कहता था—वे हँसमुख हैं मितभाषी हैं गोरे चिट्टे लौंडे होग कोई दो सात रडे। न जाने क्या क्या बकता रहता है वह।

जल्दी इसलिए लेटी थी कि कुछ अधिक सा लूगी। कल चार पाँच घटे का कडा श्रम है। पर नीद आसपास फटकने तक का नाम नहीं लेती। उधेड बुन म एक चौकान वाली बात सूझती है। इस ट्रिप म एक एडवेंचर किया जाय। महज मनोरजन और अनुभव के लिए उस काल्पनिक योजना म गोते लगाते लगात न जाने कब नीद आ गयी। बस नीद लाने का इससे बढकर कोइ उपाय है ?

उठी तब चाचाजी धधे पर जा चुके थे। मोहन कही मटरगश्ती कर रहा होगा। चाची ने पूछा वेटी कब जाना है तुम्हे ?

ग्यारह बजे।

तब तो तू चाय पीकर नहा धो ले।

हाँ खान म क्या बनाऊ ?

मेरे लिए मत बनाना चाची। एक तो वहा कुछ प्रबध कर ही रखा होगा और वस भी जल्दी खान की मरी आदत नही है। दो एक पराँठे सेंक दो बस।

अच्छा बेटी।' औपचारिकता न बरतत हुए उसन कहा।

नहाकर लौटी तो चाची स जी काट रही थी।

बेटी भाग्यशाली है तू जो अच्छी नौकरी मिल गयी। यह मेरा निखट्टू मोहन न जान क्या करेगा।

मैं चुप ही रही।

अब तो तू घर बसा ल।

'नही चाची इतना जल्दी बँधन का इरादा नही है। मैं जल्दी म कह गयी और सहमी-सी किसी फटकार की प्रतीक्षा करने लगी। पर कोई विशेष

नाद (कविता सग्रह 1980)
उस जनपद का कवि हूँ (कविता सग्रह 1981)
प्रस्थान (कविता सग्रह 1984)
7 50 गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

प्रतिक्रिया नही हुई। हो सकता है वह समझ नही पायी हो अथवा नये परिवेश के साथ स्वय को अनुकूल कर लिया है।

रिक्शा म बैठते ही धडकन बढ गयी। एक उत्सुकता न रक्त-प्रवाह तज कर दिया। बाह्य परीक्षक अतिथि है तथापि एक मानवीय पक्ष होता है। वह गोरा चिटटा मैं गहुए रग की। पस से दपण निकाल सूक्ष्मता से दखती हूँ—सब ठीक ठाक। इससे भली लग ही नही सकती स्वय से कहती हू। रिक्शा चालक के हडिल पर बठा पालतू तोता चिहुँक उठता है। वह डाँटते हुए कहता है— चुप रह बे। अभी गाना नही सुनाऊगा। जानता नही सवारी जनाना है। तोता फुदककर उसके कधे पर आ जाता है और टकटकी लगा मुझे देखता है।

एक दूध धोया सा युवक इधर बढता है। रिक्शा रुक गया। युवक पूछता है आप मिस सरला मैं कुछ कहूँ पर सशय की बहुत सी परतें एक साथ मुझम जमती जान पडती हैं। यह व्यक्ति कौन है। कहाँ से जान लिया इसने मेरा नाम ? कोई आवारा या सी० आई० डी० ? उपफ। कहा फस गयी। मुझे मोहन की याद आन लगी। सामने दीवार पर लग बोड पर नजर गयी कि वह बोला मैं सक्सना हूँ। मदनमोहन ज्योतिषी नही कि आपको पहचान ले। कुछ समय हुए मोहन मिला था। उसने कुछ रूप रग *बता दिया था। मुझे लगा मच पर कहे जान वाले सवाद अयत्र भी यह* व्यक्ति स्वाभाविक तौर पर कह सकता है।

कोमल स्नायुवाली मैं आधुनिकता के बहाव म क्या-क्या सोच बठी थी। अब सकते की वह हालत है कि बोल नही फूटते। या मुझे महज भावुकता म ही बहना आता ह

चलत चलते कहता है क्षमा कीजिय दरअसल मैं और एक मित्र स्टेशन तो समय पूव ही पहुच गये थे पर रिफ्रेशमट रूम म बठे रह गये और आप निकल गयी। टैक्सी स्टड पर किसी महिला से पूछना तो आप समझती ही है खर अच्छा किया कि आपन स्वय ही कोई व्यवस्था कर रखी है नही तो पछतावा रहता। उसकी सहज अभिव्यजना मुझे परास्त करती है।

अहाते के पार इधर उधर खूबसूरत इमारतें खडी है। साफ सुथरा

मानो धोबी की गठरी से अभी निकला हो। विस्तत मैदान कटी घास का लुभावना परिधान ओढे हुए। हलचल नगण्य प्राय-सी। प्रयोगशाला से सटा अध्यापक का कक्ष है। खिडकी से प्रयोगशाला का विस्तार और उपकरणा से सजी मेजें दिखायी देती हैं।

प्रयोगशाला परिचायक को वह आदेश दन लगा तो मैं अपना सुप्त साहस बटारने का प्रयास करती रही।

ठीक ग्यारह पर आरभ कर देंगे ?

अच्छा तो आपको परपुरुष के सम्मुख बोलने का परहेज नही है।' विस्मय की विनादपूण चितवन से मेरी ओर देखत हुए कहता है। कुछ गभीर हो पुन कहता है— छात्र आ चके हैं। अभी बुलाता हूँ।

स्ववश से भरे गिलास रख प्रयागशाला परिचायक चला जाता है। पास ही साइक्लोस्टाइल करेक्टिग फ्लुइड की शीशी पडी है। मैं सोचती हूँ इससे नाखून नही रँगे जा सकते क्या ?

छात्रा का निर्देश द मैं लौट आयी। प्रयोग आरभ करा पास आ वह बोला— आप ता एक कुशल वक्ता हैं ?'

यह मसका लगा रहे है ? न जाने मुझम कहाँ से चचलता आ गयी। भीतर स कुछ सहम गयी। वह अयथा न ले ले।

आवश्यक ही न हा जाये तब तक मैं झूठ का सहारा नही लेता। और आपके साथ यदि झूठ बोलना होगा तो कोई उपयुक्त अवसर देख कर ही बोलूगा। मोहन सच ही कहता था कि वह चतुर व्यक्ति है।

खाना आ रहा होगा। अब मैं जरा सरकारी काम कर आता हूँ तब तक आप इस्टूक्शस पढ लीजिय। उठते हुए वह कहता है।

कितना आत्मीय बन बठा है यह, इतने अल्प समय म ही किसी के मन म स्थान बना लेना इससे सीखे काइ। मैं लिफाफे से निकाल अको का बटन दखन लगती हूँ।

सिगरेट का एक पकेट हाथ म लिये हुए वह लौटा है। एक निकाल कहता है आपको आफर करना तो मुखता ही होगी न। उसकी सहज कही बात प्रिय लगती है। अपने-आपस कहती हूँ—नशीली वस्तु का अनुभव ही करना है तो इससे बढकर नही है क्या।

शब्द (कविता सग्रह 1980)
उस जनपद का कवि हूँ (कविता सग्रह 1981)
अरथान (कविता सग्रह 1984)

े 50, गोरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

धुएँ का एक पफ छोड कहता है, 'आपको परेशानी होगी ?

सह लूगी।' मैं अब बिलकुल नामल महसूसने लगी हूँ।

सिगरेट समाप्त होने पर टीज सा करता हुआ वह कहता है, 'मैंडम, हमारे छात्रो की खबर ल लीजिय यानी कि वाइवा ' वह निर्विकार लगता है।

मैं भी किसी उपयुक्त अवसर के लिए उत्सुक थी एक छात्र से पूछ बैठी, 'उपकरण के तल मे दपण क्या लगा है ? कोई और प्रसाधन सामग्री भी दे रखी है ?'

छात्र निरुत्साहित हो जाता है। वह हौले-हौले स कहता है 'सर सर नही मैंडम ' और शरमाते हुए अटक जाता है।

सक्सेना बचाव करता है 'हुह डरपोक ! बोल मैंडम, यह लडकिया का कालेज नही है। वह उसके कधे पर स्नेह से हाथ रखता है, छात्र मुस्करा उठता है और सतोषप्रद उत्तर देता है।

मेरे आक्रामक रुख के नदारद होते ही वह किसी त्रुटियुक्त उपकरण को ठीक करन म व्यस्त हो गया। अपने कक्ष म लौटत ही पूछ बठा, मैडम परिश्रम से सब स्त्रियाँ थकती हैं तो थकान कस मिटाती हैं ?

देखिय मुझ दो बातें कहनी हैं। एक ता यह कि मैंडम-वैडम कहकर मेरी बेइज्जती न करो। दूसरी यह कि यह प्रश्न आप व्यक्तिगत तौर पर पूछ रहे हैं या सावजनिक तौर पर। बहरहाल, उत्तर यह है कि हम कहती हैं—थक गयी, आह आज तो टूट ही गयी इत्यादि और कुछ समय बाद थकान शु ' मैंने चुटकी बजाते हुए कहा।

वडरफुल !' वह खिल उठा।

भोजन रखन क लिए मज व्यवस्थित करने म वह लगा है। चाहते हुए भी मैं सहायता नही कर पाती। अपने आपसे बातें करने लग जाती हूँ। इच्छाएँ दमित हो चुकी हैं या किसी को अपनाने क अकुर कभी उपजेंगे ही नही ! कितनी रुचि क साथ हम परीक्षक अन्यो का जाँचत हैं कभी अपने-आपका भी टटोला है ? भोजन पर उसक पास कुछ सूचनाएँ हैं।

प्रिंसिपल साहब का आग्रह है कि परीक्षा के बाद हम उनके साथ चाय लें चलेंगी न आप ?

यहाँ पहुच गये अब तो आपके इशारा पर नाचना है।

'गुड गल ! वह मेरी पीठ पर धौल जमाता है। तुरत ही हाथ खीच की गयी भारी भूल के अन्देशे मे मुह नीचा किये राटी चपर चपर करता हुआ खाता है। अब यह भी कहना होगा मैंने बुरा नही माना। नजर उठाकर मेरी व्यग्रता तो तलाशे।

मुरारी पानी लाना। वह लगभग चिल्लाता है।

प्रयोगशाला परिचायक दो गिलास रख जाता है। पानी पी वह प्राय श्चित करता-सा कहता है लडका-सी बचकानी आदतें मुझे छाडनी चाहिए। प्रतिवाद म कुछ भी नही कह पाती, वरन् परेशान हो जाती हू।

आप विश्वास कीजिय मेरा आशय अन्यथा नही था।

प्रौढा की भाति उसके हाथ थपथपा आश्वस्त करती हूँ। वह मेरी आर दख ही नही रहा है। वह भी एक ही अनाडी है। विश्वविद्यालय अनाडिया को ही डिवीजन देती है।

'टेक इट ईजी सक्सना। मेर स्वर म मिठास है।

ढेर-सा पुलाव मरी प्लेट म डाल वह पूछता है घर लौटन का क्या समय बता रखा है आपने ?

कापियाँ देखने म देर हो सकती है। यही कहा था मैंने।'

वेरी गुड। एक आवेदन स्वीकृति क लिए। वह सामान्य दीखता है काइ चार पाच मील पर एक पिकनिक स्पाट है। चाहें ता हम स्कूटर पर चल सकत हैं। आप यहाँ पहले भी आयी हैं क्या ?'

नहीं तो।

तो मजूर है। उसक अनुरोध म जिद्द है।

वह एक स्वीट डिश बढाता है। पर मैं अनिच्छा प्रकट करती हूँ नही बाबा अब बिलकुल जगह नहीं है।

दखो जी, सच बात यह है कि वहाँ पर खाने को कुछ नहीं मिलेगा। पूरी प्लट उडेल मरी ओर ऐस देखता है जसे स्त्री को पहली बार देख रहा हो। प्रिंसिपल की बातें तनिक भी दिलचस्प नही है, लेकिन वह

(कविता संग्रह 1980)
उस जनपद का कवि हूँ (कविता संग्रह 1981)
प्रस्थान (कविता संग्रह 1984)
50 गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

पालतू सा हिज मास्टर्स वॉइस सुनता रहता है। प्याला बढाते हुए व पूछते हैं, 'राजन न कसा किया ?'

'बहुत अच्छा सर।' वह मिमियाता है। लडकिया के आग कसा शेर बना फिरता है।

पी० डब्ल्यू० डी० आर वाटर वक्स के पुरातन बर के फलस्वरूप खुदी सडकें जनसामान्य के लिए कभी उपयोगी हो सकती है, ऐसा मुझे अनुमान नही था। एक झटका लगा और पिछली सीट और झुक गयी। मैं उससे सट गयी। उष्णता की एक तीव्र धारा प्रवाहमान है, पर वह अनभिज्ञ सा बठा है। न म हटी न उसन सरकन का प्रयास किया। वह अनजान है या ऊचा कलाकार!

स्कूटर को दूसरे गीयर म डाल बरसो का मौन तोडता है, प्रयोग शाला की चहारदीवारी स निकलकर स्वच्छद प्रकृति का भ्रमण कितना सुखकर है।'

'आप कवि भी है।' मैं चुहल करती हू।

'हा वह उमर खयाम क्या कहत है एक ठहाक क साथ वह खुलकर हसता है।

यह स्थान वस्तुत मनारम ही नही, आकपक भी ह। साफ-सुथरा सपाट पानी का विस्तार, क्षितिज तक फली हरियाली, चारा दिशाआ स आती पगडडिया का सगम स्थल एक बच की ओर इगित कर पूछती हू कोई एसी बच नही, जिस पर महिला और पुरुष साथ साथ बठ सकें ? बैंचो पर या तो महिला लिखा है या पुरुष।

शायद बच तो नही, पर उधर दख रही ह न वह चबूतरा—एक स्त्री-पुरुष की समाधि है। चलेंगी ?

इस ऊची चौकी पर बठे लगता है मानो दुनियादारी स ही नहीं दुनिया से भी ऊपर उठ आय हो। वायु का वग अत्यधिक है। साडी या तो हटना चाहती है या चिपटना। मैं मध्य स्थिति क लिए प्रयास करती हूँ। चोर नजरो स वह ताकता है। ध्यान विकद्रित करन का एक निरथक

प्रयास करता है।

'यह हवा बडी तग कर रही है।

यहा से चलें हवा आपको कही उठा न ले जाये। कल परीक्षा कौन लगा?' मैं दिग्भ्रात-सी रुकती चलती उसके भावशून्य चहरे को देखती रहती हूँ।

रात कापिया दखन देखत बुरी तरह थक गयी। सुबह चाची ने जगाया तो सात बज चुके थ हडबडी म मुझ तयार होना पडा। पल बक को बगनी रग पसद न रहा हो, मुझे तो वह रुचता है— हल्का बैगनी जो औरो को गुलाबी का भ्रम पदा करे।

परीक्षा आरभ कर वह कनखिया स शरारती मुद्रा म मुझे दखता रहा। वश भूपा उस पसद आ गयी है। शायद एक ही दिन म इस कितना समझन लग गयी हू मैं।

आह मैं तो भूल ही जाता। कल जब घर पहुचा तो मकान मालिक पूछ बैठा एक्जामिनर कसी है?

किसी रहस्य की आशका से हतप्रभ सी रह गयी मैं। अवश्य ही वह लॅब एसिस्टट चुपके चुपके देख रहा होगा। धौल जमात या हाथ थपथपाते देख लिया होगा उसन। बेशम कही का मगर अगर उसन कुछ कहा होगा तो बदनाम करने के लिए थोडे ही कहा होगा।

मेरे चेहरे पर उठती विकृतियाँ वह ताड गया शायद बोला मेरी अनुपस्थिति म कुछ छात्र घर पर आय थे। मकान मालिक स आपक लिए शुभकामनाए व्यक्त कर गय हैं। कह रह थ—भली एक्जामिनर है आप

उफ। यह सक्सना ठेठ श्रृग पर चढाकर धकेल देता है। मैंन डाँटन के कृत्रिम स्वर मे कहा फिर खुशामद।

आपकी स्मरणशक्ति कमजोर लगती है। मैंन कहा था न जब तक आवश्यक हा न हा जाये, झूठ नही बालता जाँची हुई उत्तर पुस्तकें वह पलटने लगा। प्राप्ताक देख प्रसन्न लगता है।

'आप वाकई अच्छी परीक्षक है।

([illegible] 1980)
उस जनपद का कवि हूँ (कविता सग्रह 1981)
भरधान (कविता सग्रह 1984)
50 गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

'ऐसा कीजिये, ये शब्द प्रिंट करा, मँढवा कर मुझे भेज दीजिये। हमारे स्टाफ रूम की शोभा बढेगी।'

हम दोनो खिलखिला पडे।

इस बीच मुरारी चाय की केतली प्याले और ढेर सारा नाश्ता रख गया। आज की फेहरिस्त मे एक नाम की ओर इशारा कर कहता है, इसे पास कर दना। मेरा नितात व्यक्तिगत आग्रह। चाय सुडक्ते हुए टोस्ट मेरी प्लेट म डाल देता है।

नही भई बहुत खा लिया। तप्ति प्रदशन के लिए अभिनय स्वरूप एक डकार लेती हू।

'चरे ता मैं जा रहा हू और पट आपका भर रहा है।'

नही सच कहती हू अब बिलकुल नही चलेगा।

वह घटी बजाता है। मुरारी से तौलन की मशीन मँगवाता है मैं तनिक सबद्ध नही कर पाती।

'अब तौलकर देख लीजिय, किसने अधिक खाया है।

मैं तो आपकी विधि समझी नही। पहेलियाँ हल करना आपसे सीखे कोई।

वरी सिपल। आपका भार ऋण मरा भार तुल्य है जितना अधिक आपने उदरस्थ किया है। समीकरण ता समझती हैं न आप। इस व्यक्ति से कौन उलझे। मैं कुछ कहूगी वह तक से पुन निरस्त्र कर देगा।

ठीक है पर हमारी मनुहार मान दो आप भी ल लीजिये।'

'एक और। दो रखन पर वह कहता है।

प्रिय पाठक एक बात पूछूँ? आपन अस्त होत सूय को दखा हागा, पर पहाडा पर छा रही उदासी पहचानी है?

कुछ क्षणा के लिए एक सौभाग्य जीवन म आता है जो सुख उपजाता है और एक लम्बा अतराल छोड के चल देता है मात्र इसलिए कि उसका महत्व और बढे। एक पागलपन, जा उन्माद का उत्तर प्रभाव अरसे तक छोड द। एक याद जा दिवास्वप्न बन रह जाती है।

कुछ घटा बाद ही मुझे पुन उस सुनसान निर्जीव द्वीप मे लौट जाना है जहा है सब कुछ एक लीक पर।

छाया बद आयी है। उपकरण, मज स्टूल, प्लेटें, करेक्टिंग दक सब मेरी ओर देख रह रहे ह—जान की तयारी मडम।

वाइवा क समय कोई विशेष बातचीत नही होती। वह समेटने की चिंता म है। आज ही वही परीक्षा लेन उसे चल देना है।

रिक्शा मे बिठाते हुए कहता है, भूल चूक लेनी-देनी।

कही अरस का सामीप्य निकटता नही ला पाता वही अत्यल्प अतराल निकटतम पहुचा दता है। बस म बठी दो दिन का लखा जोखा कर रही हू। कापियाँ चाची के यहाँ बचे समय म जाँच दी थी। अब तो भेजनी है।

मनमोहन सक्सेना कितन सारे बिंब उठत है।

किस अपनेपन स उसन कहा था इसे पास कर देना।'

मामान बाँधते समय चाची न कहा था, 'एक दिन और रुक जा बेटी।

मैं नितात स्वार्थी हू। या कैसा थापा हुआ यह अध्यापकीय आदश है। एक पक्षपात जो नितात निरापद है कर मैं पतनामुखी हो जाऊगी? मगर दायरा कितना सीमित है। वह चाहता था जब दखे बिना मुझ हटन नही देता। उसस झगडन का मुझम साहस है? पर पर भौतिकशास्त्र का स्वयसिद्ध तथ्य है—स्तर नही बदलते व प्रेक्षित हैं, पमाना बदल जाता है माडल बदल जाता है। ●

शब्द (कविता सग्रह 1980)
उस जनपद का कवि हूँ (कविता सग्रह 1981)
अरघान (कविता मग्रह 1934)

50 गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

ज्वर यात्रा

अब कितना उल्लसित है यह मन। मुकुलन प्राप्त की गयी है। उपयुक्त डाल झाडी म छाँटी गयी है। भीतरी समथन स उत्साहित हो चश्मा बाँधा गया है। अपनी पसन्द का मुकुलन। इसे पनपाने के लिए सारी पुरानी मूल डालें हटाना जरूरी है। कोई अवाछित अकुर न फूट नजर रखनी है कितनी प्रसन्न हूँ मैं अब जबकि चाही कलम फूट रही है। लो नय पत्ते झोंक—फूल भी उग आयेंगे—प्रतिरोपण व्यवहार कौशल है। यह सफलता स्वय स्वप्न नही क्या। मेरे निकट स्पश से रवि बचना चाहता है, यद्यपि हमारे और पिताजी के बीच काँच की आधा ढँके लोहे की चद्दर है। मा लेटी है। मैं चुटकी काटती हू अलग प्रयोजन स आग कहती यह हूँ—'हटो। वह तो रहा।'

देसी झाडी से कितना मोह जोड चुकी थी मैं। समझती रही घुन लगी है इसलिए वद्धि रुक गयी होगी जडें खोद डी डी टी डाल द मौसम वातावरण उपयुक्त है नयी कलियाँ निकल आयेंगी और फिर ढरो सस्कारित सुवासित गुलाब। वह शहीद स्मारक का लेख था—प्याजी लाल और सफेद गुलाबो की क्यारियाँ बचपन यौवन बुढापे को बताती है। भक्त लाइगज क दूर कोने की उस प्रतिमा म मैंने जाना था सार ही रग घुले मिले हैं। सैकडा दिया म उम स्थिर वर्तियो से उठी नजर मूर्ति पर ठहरी थी। अतक्य शात मुद्रा। रहस्यमय मौन पर चचल मन और न ठहर पाता। इस परिसर मे प्रवेश पर एक हठी ने हम कुछ देर रोके रखा था। वह पूर हाथ फलायगा, अँगुलिया के पोर माथ नाक हृदय म फिसलता फश पर

बिछ जायेगा। आश्चय था कि क्रम से क्रियारत है। इस प्रक्रिया से और कितना गुजरता रहेगा। सिहरन का आना जाना स्पष्ट महसूस करने लगी थी मैं। रवि रोक नही पाया था स्वय को— कितना अच्छा हो कि यह देहरी लांघ जाय अदर का पसीना उलीच आयगा तब। इस तरह तो कोई गारटी नही।' पिताजी ने उस इशारा किया था। रवि मूर्तिया पर पडे नाम पढने लगा था और पिताजी भिक्षु से बात करत। मरी उचटी नजर धूप बत्ती के धुए की तांत स हट माँ के इद गिद भटकने लगी। वह प्रार्थना स्थल के फश की ओर टकटकी बाँधे थी। रवि भी पिताजी के साथ हो गया। उन्हे अगुली से बताया गया था कि बुद्ध के पाश्व की ओर तिब्बत है। उस समय माँ की पीठ की ओर मैं तथा मरी पीठ की आर माँ। 1728 मीटर की ऊचाई पर खिचाव ढीला होना चाहिए मैंन महसूस किया था। इसी दिशा मे बढ रही मैं तालो बजा बजाकर प्रश्नोत्तर कर रहे तामाओ म अपने लिए श्रेयस्कर खोजना चाह रही थी।

गति पर भी मेरा हाथ स्पष्ट न लगा था। पिताजी की बगल म बठे रवि के होठो पर जिज्ञासाए थी। गुडी मुडी माँ पहाडी के बेडौलपन को देख रही थी और मैं कब्रिस्तान जा चुका हूँ लाल-सफेद मटमली छतें जा रही हैं खडे हैं तो चीड क वक्ष जिनका प्रत्येक हिस्सा नुकीलापन लिए है। आश्चय क्या ! निकले भी तो ठोस चटटान के गभ स हैं। वह कोई गाँव था। चढाई की थकान लिए मकान ठहरे थ। हिमाचल पथ परिवहन की बस बिना साइड दिय खडी थी। बचा रास्ता रोक पिताजी ठहर गये। इजन चालू था। इधर की आँखें बस की आखिरी खिडकी पर अटक गयी। नवदपति होंगे। होठ एक आवत कर चुके कि हमारी सवारी ओवरटेक कर बढ चली। भीतर का सघनन कानो पर आ टिका, पिताजी के कानो के बाल तन गये। दबी जबान म रवि न इस भाँति गलत तरीके से चलन पर विरोध प्रकट भी किया था लेकिन शात पिताजी वक्रा पर दृष्टि रखे सयत गति स बढे जा रहे थे। और माँ ? मैंन उधर देखा कि वह चटटानो मे खो गयी थी।

पिताजी की तरह माँ मुख नही मोडती। वह चटटानो स जुड जाती है। कसा नैसर्गिक अवरोध है यह कि जो कहा जाये वह लौट आयगा। तब लगा था कहे बिना उपचार नही। स्पष्ट स्वीकार कर ही मुक्ति प ना सभव

नाद (कविता सग्रह 1980)
उस जनपद का कवि हूँ (कविता सग्रह 1981)
प्रस्थान (कविता संग्रह 1984)
गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

है। याद पडता है कि यह सत्य उस दिन से जानने लगी थी जबकि अपने सार अवकाश चुकते कर रवि काय पर लौट थ। वह दोपहर याद पडती है—पलकें मुदी हैं तन शिथिल हवा का एक झोका आता है। पर्दे की घन्टियाँ बजती हैं भीतर झाँकत झाँकते कुछ भाव वह सहम जाता है। फूल दान गिरा चौखट लांघ जाता है। इसी स्थिति मे मैंने एक बार रवि स कुछ पूछा था (सफल कृत्रिमत) आदमी दना दिया गया तो एक दिन वह मेज पर मुक्का मार न पूछेगा कि मरे अपन सपन ! एक बार ता मेरी ओर उसने गभीरता से देखा था फिर घडी देख कागज-पुस्तकें समटने लगा था। उसकी अगुनियो के पोर फरकन लगे थे और मैं वास्तविकता क धरातल पर लौट आयी थी।

मुह की आद्रता चुक गयी थी पानी की बोतल उठाने तक की सुध न थी। मैं न जाने कहाँ-कहाँ से खोद जा रही थी। ग्रेड के आधे हिस्से को प्राथमिक कक्षा की पाठय पुस्तक का काई पष्ठ ढँके है। उस पर छपे चित्र न धागा ताडती अगुलिया रोक ली हैं पहाड घाटी नदी, समुद्र। ऊपरी भाग पर आखें जा ठहरी। एक ऊँट महिला को बैठाय दर्रे से गुजर रहा है। नकेल से बँधी रस्सी पुरुष के कधे पर है और वह पैदल।

'यह स्वप्न सा नहीं लगता ? मैं पूछती हू।

वह हस देता है। हसी म तनिक उपहास नही समझाता है—'छोटी कक्षा म भूगोल का ज्ञान दन क लिए चित्र है भई।

कितनी खदबद विद्यमान थी भीतर तब पर उस ठस विवरण को चाय के घट के साथ पी लिया था।

सामन स सैनिक चौकिया और धमशाला की बस्ती का ऊपरी हिस्सा पीछे छूटता जा रहा था। प्रकट था स्वर और हृदय पथक हैं। जागृतावस्था म वे एक-दूसरे म घुलत मिलत हैं कभी। पुराने पडे अनुभव का रह रहकर फिर स जान लेन को जी कर रहा था। निवदित नजरे माँ की ओर हो गयी इन्ही म क्षमता है कि मुझे दोबारा सपन करें। कदाचित जनमन की प्रक्रिया मुझम लौट आय। कितनी खाली खाली थी मैं उस अवास्त विकता की चाह म। मुझ पर हावी हो चली थी रवि के साथ की यह प्रात। पूछा था— सपना ब्लक एड व्हाइट हाता है या रगीन ?

आज सवेरे सवेरे 'उसके हाथ जुड गय थे। अभी तो पूरा दिन पडा है।

बडा बुरा लगा था वह हल्का फुल्कापन। साफ साफ टाल जाना कितना सार्थक बहाना है रविवार की प्रात म जमे रूखेपन और अनमनी दशा को वह भाप गया होगा शायद। बिस्तर से हट रही को दोना हाथा स खीच लिया था—'मुझे लगा तुम बोहनी कर रही हो।' वह हँस दिया। मुस्कराना मैंने भी चाहा होगा लेकिन कसी होती है वह मुस्कान। मिन्नत कर पास लिटाते हुए कहा— हाल म दिखा टटा फूटा जितना याद है इजाजत हो ता सुनाऊ।' वह सिर खुजलाने लगा।

मेरे अक्स स्वागत कर रहे होंगे।

चिलचिलाती धूप है। हम स्कूटर पर जा रहे है टायर तले हाल ही बना सडक का सपाट टकडा है। ढलान पर लढके जा रहे हैं और कधे पर से उचकती कहती हो—वह देखो मग-तष्णा। मैं दायें बायें देखता हूँ—कहाँ? कोलतार एकसार तो बिछा है। टूटी फूटी सडक पर स्कूटर फिर हिचकोले खान लगता है। मैं अधीर सी बोल पडती हू। यह तो लैक एड व्हाइट था जिज्ञासा निरतर रखते हुए पूछती हूँ— हाँ आगे?' सपनीली घटना जो है।

तुम्हारी कोहनी चुभी और आखें खुल गयी।

मैं चकित भ्रमित रह जाती हूँ मग जल देख लेती हूँ। इद्रजाल म चातुय नही चमत्कार महसूस करने लगी हूँ। आह्लादित नेत्र पति की ओर होते हैं। छल! मैं बिगडती हूँ— फिर झठ!'

अब तुम्हारे मग रहस्र सपने देखू यह ठीक है क्या।' वह ठहाका लगाता है।

यह निश्छलता मेरा गुस्सा छिटक देती है।

वस्तुत पिताजी के पत्र म हर लगा था डार का खिचाव भरपूर था कि कोई बहाना निमत्रण को टालने की स्थिति म न ला पाया। सायरन से बहुत पहले ही वह अपना सामान जमा चका था। मझे तत्पर न देख अचरज सी रहा था।

क्यो तबीयत ठीक नही।'

शब्द (कविता सग्रह 1980)
उस जनपद का कवि हूँ (कविता सग्रह 1981)
प्रस्थान (कविता सग्रह 1984)
60 गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

'अलग से जमाऊगी।'

'ता वहा से लौटन का इरादा नही ?' रवि न शरारत स पूछा। कृत्रिम पुभलाहट लाते हुए मैंने कहा था—'आप मद समझते तो है नही कुछ। वहा से मिलेगा उस डालने के लिए अटैची भी उन्ही से मागूगी।

सायरन की पुकार तक वह माथा ठोकता रहा था। अच्छा ही हुआ कि इस बीच विशेष बात नही हुई।

सायरन के बाद धुध अपेक्षाकृत गहरी उतरी थी। मा पिता से अलग होने के बाद फिर से साथ रहने क इस पहले अवसर क लिए तैयार न हो पा रही थी मैं। समझ नही पा रही थी पहली बार पीहर जाना कसा होगा। अधर म गणना करती आखें छत ताक रही थी। इस ओर या उस ओर की सभावना पचास प्रतिशत ही ता है। क्या भरोसा कि लडकी न हो एक पुत्री की मां मैं—उफ ! पसीन स नहा उठी थी मैं। तौलिये तक न हिल पायी थी मैं। मूक क्षणा क गोदाम म कितनी दर बद थी याद नही। आधी भरी क साथ पूरी खाली पर नजर जा लौट-लौट आ रही थी। साचा इसे भरना ही हागा नही तो न जाने किस चिता म रवि पड जाय। स्मरण पडता है—खाली बक्स मे झाकती हूँ कोई पहरा है जा मरे वस्त्रो को अदर आने से रोकता है। दूसरे सायरन का समय खिसकता खिसकता पास आ रहा है। ढेरो काम हैं इस घर को छोडन स पहले पूरे होन की इतजार मे। दो-तीन साडी-ब्लाउज तो उठान ही है। निश्चय किया लेकिन तह कर जमान की इच्छा नही हुई। झुझलाकर खिडकी पर टिक गयी। उधर एक गधा अपने स्थान पर डटा था। स्थिति के सम्मुख निरीह खडा था। खिडकी के पल्ल पर सिर टिकाय स्वय का उचित सिद्ध करत तक किया था मैंने—बचाव के लिए कटोल माध्यम को प्रयुक्त करन के अतिरिक्त रास्ता भी तो नही था और

बहुत-बहुत पहले मरा बचपन था। कमजार मा की ओर चख चख कर छँटे बादाम बढाती हूँ। व मुह पर एक साथ थूक दती है और भारी हाथ मर गाल पर पडता है। शरारत पर अदेशा डाट का था झापड की मार असह्य हो गयी। चोट स चिल्ला रही मुह पर वह पसीज गयी थी। गोद म खीच गुचली कडवी बादामो का गूदा अपनी अगुलिया से हटाने लगी

थी। एक आश्वासन है गुस्सा छोड मेर आसू पाछती माँ दूसरा तक है यदि एक ताकतवर चाटा पिताजी के हाथ का पडा होता तो मरा छिनालपन टिक पाता ? वह गति नियन्त्रित पुर्जे सी रहती कि प्रयुक्त होशियारी धुरी स छिटक न पाय।

ऊनती डूबती रहती पर पिताजी ने कुछ पूछा था। बाहर झाका। बायें तिब्बती स्त्रिया द्वारा प्रबधित ऊनी वस्त्रो की दूकान हैं। माँ ऊघ रही थी। एक तो पट्रोल की दुगध और पल पल म सडक का मुड जाने से कस छुट कारा पाये कोई। वन-कटे वस्त्रा के बीच माला जप रही प्रौढा पर से होते हुए नजर भीतर लौट आयी। ना करते ही जीप चल पडी थी। टेढे मेढे उतार म सिर भारी था। जी न चाहा कि कै हो जाय जल्दी से लबी शीप नुमा शकु की सडक शुरू हो जाय जिसक अभ्यस्त है। परवश सी सो रही मा की नाडी टोहने लगी थी। वातावरण ठडा शरीर गम। ज्वर जीवन यात्रा को गतिमान रखता है मैं निष्कष पर पहुँची थी। ताकने लगी थी माँ को—आत्मीय स्मृति म कितना स्वस्थ चेहरा हो जाता है। आखें सरल, होठा पर मुसकान। शन शन अस्त व्यस्त हाती गयी थी। ईर्ष्या हो रही है माँ तुमस। सपन खुद न बटोर लिए और मेरे पल्ले बाँध दी असलियत। अच्छी तरह जानने लगी हूँ कि यही दुनिया मेज पर रखे ग्लोब स कसे भिन्न लगने लगेगी लेकिन शब्द गल तक आ लुढक जात हैं। मेरे, सपाट क आग स्प्रग गत अब नही ? अपना हाथ झटक दिया था। चिढी थी हठ पर। और तब एक साथ रोम राम विद्रोही हो गये थे। वे धिक्कारन लगे और अदर ही अदर खुफ्या तलाश शुरू हो गयी। एक एक कडी जजीर गुथ रही थी दृढ वास्तविकता की।

अकेली हू किसी रोमाटिक पाकेट-बुक म निमग्न। नायक की सवेदन शीलता और नायिका की भावकता की भागीदार बनी। अधलेटी को जान पडता है कि एक परछायी उलटे पडे चप्पल पर हिल डुल रही है।

आप। सुनील का देख मैं कपडे ठीक करती उठती हू।

वह कह नहीं पाता। भीतर नजर दौडाता है आश्वस्त हो माँ नही है जान वह और हडबडा जाता है।

माचिस माचिस चाहिए। हाथ की डिबिया चिगटी है।

उस जनपद का कवि हूँ (कविता सग्रह 1981)
प्रस्थान (कविता सग्रह 1984)
६० गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

रसोई की ओर बढ़ने उस नायिका की भांति हिलने डुलने वाले सारे अगा म लास्य-नृत्य की लय है।—माचिस बढ़ाती हू।

'सारी !' वह लजाता है। 'चूक गया था। माचिस तो यह है स्टोव की पिन चाहिए थी।'

उसका लटका हाथ माचिस का झुनझुना बजाता है। छूटी हँसी को दबाना बडा कठिन है। ध्यान हटाती हू। झुनझुने से हटकर अँगुली और अगूठे को जोडते त्रिकोण पर जहा कि पेन का ढक्कन टिकता है कालिख मिला मिट्टी का तेल लगा है।

स्टोव तो नही है घर मे। वसे गैस पर यहाँ चाय बन सकती है।' प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी म जुटे से कहती हूँ।

निमत्रण मौन रह कुछ क्षणो तक इतजार करता है—तदनतर न मालूम क्या हो जाता है कि भीतरी हीन भावना या होशियार सावधानी छिटक पडती है। पुनरुत्पादन का प्रतिबद्ध प्रकृति रोमाच की आड मे क्या कुछ करवा बठती है।

—और फिर विकलता से लबे क्षण। पुताई के लिए पटोस की दीवार से सीढी सटी है। सिरे दो हैं ऊपर चढती हूँ नीचे उतरती हूँ। माँ की उन बेंधती नजरो का सामना साहस ही कर सकता है। लाछन से परिहार की राह लाछन के अतिरिक्त नही। ऊहापोह के ताने मे उलझी अपनी सारे अवयवो से सलाह लेती हूँ और कोई चारा नही! विनती ? व्यथ है क्योकि सुन चुकी हू— तेरे बाप को आने दे।' कहा जा चुका है 'मुझसे बुरा कोई न होगा माँ।' अपेक्षित है मन का कडा करना। सदेह न हो इसलिए दढता का पल्लू पकडना और कही घूमता नजर आय तो आखें मीचकर बद कर लेना। गलती पर भी लाभ उठाना बुद्धिमत्ता है।

पशो पर कुछ पुकार न एक बार तो झकझोर दिया था। तुम्हारी मा न जा बताया फारेस्ट रेंज अफसर की आवाज मजबूत तन की जड से निकली थी। अँगूठी का काला सप फुफकार रहा था। अपना कहा गूज रहा है मुझ मे— आपको मुझ पर विश्वास नही पापा। बचाव का तरीका है बदल लो। बहुत सी ख्वाहिशें इसलिए बटोर रखी है मैंने एक साथ कहती हूँ। मैं बच्ची तो अपनी भलाई खूब जानती हू—अब कारण मैं क्या

जानू ' कहने के लिए बाध्य हूँ सी अभिनय करते कहती हू, 'दरअसल लायब्रेरी स लौटी मैंने तो मम्मी को वसे देख कुछ तक न कहा और उसका ईनाम अँगुलियो से आखें मसलने लगी थी ।

नाक छिडकत दखती हूँ पुष्ट वक्ष की डालें चौडा गया हैं । व आँखें माँ पर टिकी हैं और माँ की स्थिर अँगुलिया मुझ पर । भापती हूँ पिताजी के चेहरे पर विद्रूप घुमड आया है माँ न साँप दख लिया है 'पापा मैं जाऊ। कुछ ऐसे कहती हूँ कि आभास हो अब यह पति पत्नी तक सीमित बात है और अय जो कि गवाह है के सीमा से परे का ।

—अधेरा छा गया था मुझ पर । आखें मिचमिचा गरदन झटकी थी । विडग्लास के पार कुछ न देख पायी थी । उस आत्मदाह के सन्नाट म पसीजा न गया । भाल स पसीना चू उठा था । पगलाया सा मेरा हाथ माँ की ओर उठा था म म्मी । आखें फटी की फटी रह गयी थी—वहाँ कुछ भी ता नही सब कुछ यथावत । न पिताजी ने मुझम बाढ देखी थी न रवि ने माँ म अकाल । मा सोयी खोयी थी । एक दा जगह पर सहलाया था स्वय को तभी ठीक ठाव मन ने पुन उकसाया—स्वीकार कर ल तनिक क्षेप क बाद सब ठीक हा जायगा । अभी इसी क्षण । जीप ठहरान को एक हाथ ड्राइवर की सीट की ओर तथा दूसरा सोई माँ को उठाने के लिए बढा हुवा म झूल गया । मैं केवल पीठ की ओर लुढक पडी थी—यह न होना है ऐसा जान पडा था ।

पसीना छूटते ही ज्वर शात हो जाता है न । शिथिल मैं सहारा लिए टिकी थी । स्थिति ऐसी कि न कुछ खोया न पाया । सीधे हो पानी पिया था । सेब छूकर छोड दिया था । सहारे क लिए फिर स पीछे की ओर हो गयी थी । मुह म जीभ घुमाई कुछ फीकापन मात्र है । अपनी धडकन गिनने लगी थी ।

इतना जो घट चुका वह स्वप्न नही ? कदाच स्वप्न की अवधारणा ही भूल चुकी थी मैं । बडी देर बाद पहचान लौटी है ।

बोनट खोल पिताजी परिपथ जाँचन म व्यस्त थे । जीप की आँखो की ज्योति चली गयी थी । भीतर अँधेरा था । तटी माँ को छोड मुझे हुआ था कि गुफा म बाहर निकल आना चाहिए । कुछ समय ही तो बीता है ठडी

शब्द (कविता सग्रह 1980)
उस जनपद का कवि हूँ (कविता सग्रह 1981)
प्रस्थान (कविता सग्रह 1984)
60 गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

जमीन पर खडे और मैं पुनर्जीवित हो चुकी हूँ। देखती हूँ आकाश म जितने तारे चूकि का चिह्न बनाते हैं उतने ही इसलिए का।

घुटती श्वास सामा य हो चुकी है। धमशाला पीछे छूट गयी है। क्या कुछ निश्चय हो चुका था। कैसी थी वह धरती। मति भ्रम हो गया था? युवत्व और समद्धि के सगत वह नही था। मा अब प्रौढा है, सतोष उनका धम बन चुका है। ढलान है अब तो, लुढक जायेगी शेष वय। धमशाला की दूरी बताना वह पत्थर गडा है—वीराने म उपस्थित द्विआयामी शिवलिंग मा। अच्छा हुआ वैराग्य श्मशान तक ही सीमित रहा। यह बदलाव आवग युक्त है। उस पत्थर पर बठ जरा सुस्ता लू। जलसभाव छितराना चाहता है। उधर बढती हू लेकिन पत्थर के प्रभाव से क्षेत्र म पहुँचत पहुँचते कौंधता है ना वह गलती न करना वहना। नाम पर बठत ही फिर से अवल साथ छोड दे—यह धूलि झड ही जाय तो अच्छा।

रवि ने इशारे स बुलाया है वह सीट के नीचे ताव का तार ढूढने मे लगा है। क्या-क्या सोच रही थी मैं भी छी। अरस स खडे रोंगटे लेटे है और श्रात मैं रवि स सटती हूँ। कबाडे म मरी अँगुलिया कहा-कहाँ बढती है बिना निर्धारण के ही। •

अशत

आरभ तो ठीक ही हुआ था पर आग की गणनाए गलत सिद्ध हो रही थी। पिछली वरसात म गिरे पुल खड़े न हो पाये थ और हम निर्धारित राह स भिन्न राह चुनने का वाध्य हाना पड़ रहा था। अनुमानत डेढ किलोमीटर हम चल चके थ लेकिन साथी की जिद थी—एक ही तो रोमाटिक जगह रास्त म आयी है, बिन दखे कस चल दें। इस अलग थलग माग पर बस म चर्चा हो रही थी पर सयोजक किसी की इच्छा टालने की स्थिति मे नही था। अपर्याप्त जानकारी व अपुष्ट आधार पर रूट चुनन के कारण इधर उधर से वेधती फब्तिया से वह काफी शर्मिदा था। बस को सहस्र धारा की ओर माडना ही उसन श्रेयस्कार समझा।

खोयल पवत से झर रही अनगिनत बूदो म से मुट्ठी म कुछ एकत्र करन मैं भी चला था। रोमाटिक सा कुछ भी नही था। पिकनिक के लिए आये भद्रजन जा चुके थे। शहर म रावण जलाने की तैयारी हो रही थी। सीढ़िया स उतरत मेरी नजर चप्पल की नोक पर अटक गयी। नवजात अकुर सा एक कोमल हृदयी नग मुस्करा रहा था। वह एक नग थी—मिट्टी अँटी हुई। प्रकाश की मन्द पनी किरणें बिखेरता नग धूमिल स्वण काया सहित मेरी हथली पर जावन और हृदय रेखा क बीच लेट गया। नग हृदय रेखा के समीप था। रक्त ने सात रग धारण कर लिए। तभी किसी ने होले-से कहा—बधाई! कुछ शरमाया सा मैं आसपास देखने लगा। कोई नही था। मैं मुस्करा दिया।

मधु का अपना विशिष्ट स्वर मुझे स्मरण हो आया। न जाने क्या

शब्द (कविता सग्रह 1980)
उस जनपद का कवि हूँ (कविता सग्रह 1981)
प्रयाण (कविता सग्रह 1984)
गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

टपकती उछानी बूँदों का समूह गान उसी स्वर में तो है। मैंने मधु से कहा था तुम्हारा गला सबसे अलग है बठा-बैठा सा' कुछ हँसती वह बठे कंठ से बोली थी 'इसलिए कि पिछले जनम में मैंने गीत गाये हैं।'

उनके बेबी से मेलजोल बढ़ाने के प्रयास जारी थे। टटन —काफी मिन्नत पर ही वह बुन्बुनाया था और अपने पिता के पाँवों से लिपट गया था। 'ना साहबजादे टुनटुन हैं —गोद में उठा दुलराते हुए मैंने कहा, टुनटुन नहीं कचन— अपने कार्डिगन का शाल ओढ़ा रही मधु हँस दी। कचन से *अपने कान पकड़वा गलती स्वीकार करनी पड़ी— माफ करना यार तेरी* बोली समझ में नहीं आयी थी सभावना है हरदत्त अपने परिवार के सदस्यों की भाषा के अतिरिक्त भी पहचानता है, समादर भी देता है जिसका समर्थन कन साथ की अनुमति से स्पष्ट है। वरना धम-कम के लिए निर्धारित समय बच्चे को सँभालने की आफत मोल लेकर पत्नी को अन्य के साथ, सहज टल जाने वाले प्रयोजन हेतु कौन जाने दे।

सत्य आश्रम से निकल पगडंडी होते हुए हम पुल की ओर बढ़ गये। ऊपर की धवल हिम आड़ी किरणों से उज्ज्वल हो गयी। निरंतर जाप करती अलकनन्दा एकसार प्रवाह बनाये रही। धारा के बीच की तीन सीढ़ियों सी शिला से नीली झाँई लिया हुआ स्वच्छ जल टकराकर निष्कलंक फेन बना आगे बढ़ गया। अन्य यात्रियों की अनुपस्थिति में पुल की लकड़ी से, मधु के साल बातें करने लगे वे ही एक दूसरे को दोहराती बातें

वहाँ देखन को तो कुछ है नहीं। कुछ देर में ही यहाँ बदरीनारायण की आरती होने वाली है। एक नया शृंगार देखने का दुर्लभ अवसर तुम यों ही गवा दोगे। पुत्र का कनटोपा पीछे खिसकाते हरदत्त ने मुझसे कहा।

'कुछ नया तो होगा।' मधु की आँखें कुछ ऊपर की ओर उठ गयी। वह उस छवि को निहारती रही जहाँ एक टुकड़ा बादल, हिम को भिन्न सौंदर्य प्रदान करने के लिए बढ़ रहा था।

पंडा कह रहा था एक चट्टान है बस।'

सभी चट्टानें ही तो होती हैं कुछ चेंज हो जायेगा इस बहाने।'

लो अभी चेंज बाकी है। बायी ओर गदन झटकते हुए हरदत्त ने कहा हजार मील मोटरगाडी का लम्बा सफर करने पर भी रटीन म चेंज नही हुआ। उसके जुडे हाठ फलत से कुछ आगे की आर आय और यथा स्थान लौट गये।

हम पुल के सिरे पर थे जहा तायी ओर गम पानी के कुड हैं। पुण्य कुड का सुनहरा कलश चमक लिए नही था। धोने से काम नही बनेगा। माजने की जरूरत है—मैंने सोचा। नहान वाला की भीड प्रात जसी नही थी। एक अकेला लट लतीफ कुड से सटकर बैठा वदन का साबुन बहा रहा था। कोन म इकट्ठे हुए झाग बतिया रहे थे जो अवश्य ही किनारे होंगे अलकनदा के किनारा पर

सच कहू दत्त यहा आकर मरी इच्छा दशन मात्र ही नही रह गयी है। मैं प्राकृतिक बफ दखना चाहती हू एकदम पास से। कुछ परिश्रम करें, मधु कहती रही मर म जनमी हू पहाड नदी, बफ एक साथ पहली बार दखे है—जी भरकर दख लू।

सडक पर पहुचाती सीढ़िया सूखी थी और पाल पर बठे पडे मुक्त भाव स चढ़ती धूप का सेवन कर रहे थे। उन चेहरो से लगता था कोई दिलचस्प किस्सा जारी है। बदरी विशाल की जयकार करता जा रहा सात-आठ व्यक्तियो का समूह पास स गुजर गया।

तुम भी चले चलो हरदत्त चरणपादुका दूर ता है नही। जल्दी ही लौट आयेंगे। प्रसाद की दुकान के आग रुककर मैंने कहा।

बेकार हा थकन को नही जाना यार मुझे।' इस सीमा तक उसका रूखापन मुझ अच्छा नही लगा।

ता जाऊ ? मधु न उतावली म पूछा। जल्दबाजी भी स्वागत योग्य नही थी आखिर कुछ तो

हरदत्त जूते खोलन लगा। सीढ़ी म लगा सपाट चौडी पट्टी पर खडा वचन कौतूहल सहित नय सिरे स सजायी जा रही प्रसाद की तश्तरियाँ दखन लगा। उनक बीच छूट स्थान म एक छुहारा झूम रहा था।

शब्द (कविता सग्रह 1980)
उस जनपद का कवि हूँ (कविता संग्रह 1981)
अरमान (कविता सग्रह 1984)
गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

'सुन अजय। बफ के चक्कर म दूर नही जाना, यह तो बावली है हरदत्त हँसा, 'मरा मतलब मीरा कम प्रताप अधिक है।' कुछ झुककर मोजे का जूत के भीतर खदडन लगा।

कचन की नाक पोछती मधु पति की चुटकी पर हल्के से मुस्करा दी।

कुछ ही दुकाने खुली थी। होटलो पर चाय के प्रशसक भोक्ता जमा थे। इक्का-दुक्का छोड दीजिए, आम दुकानें बद थी। जूती की ठक ठक पुन मुखर हो गयी। मकानो के कुडो म लग तालो पर कपडा सी दिया गया था। सिलाई का मोटा धागा दूरी स भी साफ दिखायी पड रहा था।

कपडा तो सिया है पर सील नही लगी है। मधु ने बात आरभ की।

पोस्ट-पासल थोडे ही करानी है इनकी।' जिस प्रयोजन से मैंन कहा था वह सफल हुआ। कधे उचकाती वह हस दी। मैंन जोडा, 'कहत है कपडा न सियें तो गमियो म लोटन पर ताला खुला मिलता है, पर चोरी कुछ नही जाता।'

इसीलिए न कि भगवान के डाकखान क कमचारी ईमानदार हैं या भगवान की चौकसी म किसी की हिम्मत नही पडती।

सीढियाँ चढ हम ऊचाई पर आ गये—जहा म पूरा बदरीनाथ दीखता है।

तुम्ह विश्वास आता है एसी कल्पना पर?'

क्या कहू! पर हर बात पर अविश्वास करके ही हम क्या पा लत है?

तब तो धिक्कार है महाराज। अपनी मुटठी खोल अँगुलिया फला, पकडे को छोडन की-सी भगिमा बनाते हुए एक ठहाका लगाया।

वर्णानिक होकर ऐसी बात कहत हो तुम छि!'

समातर चल रही वह पाँच छह साल पहल की मधु हो गयी। अत म भी उस काल का अजय बन गया, अविश्वास की बसाखियो की सहायता स तो विज्ञान आग नही बढता मडम।

खुफिया नजर स उसन मरी ओर दखा। उसके कटाक्ष से लगा कि कुछ

सुराग पा लिया उसने। चचलता भरी मुस्कराहट उसके चेहरे पर उभर आयी, इसीलिए विज्ञान मे अबुद्धि तत्व की बहुतायत है।

कुछ रुक वह होठ काटने लगी, 'ना, ना अधूरी पढी हू न, गलत समझ बठी हूगी शायद।'

मैं नजर नही मिला सका।

पगतले पगडडी इतनी चौडी नही थी कि दो व्यक्ति साथ साथ चल सक। फिर भी हम अगल बगल चलते रहे। चप्पी न प्रारभिक विचार को पुन जीवित किया—यह भी क्या पसद। ग्राम्यदेवता के बहान नीरस ठोस, अनघट आकाश के बीच जाना। क्या धरा है यहा ? दानो ओर भूरी मट मली चोटियाँ और बीच म ऊट के कूबड जैसा उतार चढाव। हरदत्त गलत नही था। अपन मूल स इतना दूर आना ही कम परिवतन है क्या। वसे प्राकृतिक सौंदयहीन इस सुनसान म आने पर क्या मिल जायेगा वहाँ से मिल जायगा

गजब ह त्त ने पर इतना विश्वास करत है।'

वाह, तुम्हे ही हिचकिचाहट नही हुई तो मैं और न कह सका—इसी शका स कि अवाछित न कह दू।

कही नाटक का वास्तविकता प्रकट करनी होती है कही वास्तविकता का प्रकटन नाटक की तरह करना होता है और कही अभिव्यक्तियाँ मौन भी तो रहती हैं

ता ? छडी मरी बाह स छुआ वह हस दी। साथ दता हुआ मैं यह अटकल लगान लगा कि नीलकठ की शाखाएँ प्रतिबिंब है या मधु की दत पक्ति।

चढाई खडी हान पर म आग हो लिया। राहत महसूस हुई कि वह पुराना बोध भूल चुकी है। लबा कही एक झटके म ही टूट गयी थी। प्रक्टिकल स पूव के आधे घटे क विश्राम म हम नियमित रूप स कन्टीन जात थ। बहस का नया न होता तो एक-दूसरे की घडी का डायल और बल्ट ताकत। काँट एक स स्थाना पर न होत फिर भी हम बहस म नही पडत। यही बहुत है कि घडियाँ चल रही है एक दिन किसी और के साथ कटीन चला गया था। छात्रवृत्ति की रकम मिली थी, उसी गव मे अपने आपस

(कविता सग्रह 1980)
उस जनपद का कवि हूँ (कविता सग्रह 1981)
घरघान (कविता सग्रह 1984)
गौरनगर सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

उठा हुआ। यह जान ही नही पाया कि मधु उसे अन्यथा ले सकती है। प्रायोगिक कक्षा म पहुँचा तो वह चेहरा *तमतमाया था। निआन नली से* आ रहे प्रकाश का ही वह प्रभाव नही था। स्टाप वाच की सुइयाँ स्थिर थी, काँच की पटटी पर स्पेक्ट्रम बिखरा बिखरा था।

'चाय पी आय।' घुडी घुमाकर वह स्पक्ट्रम फोकस करने लगी। हा म सिर हिला, बुशशट से मैं लेंस साफ करन लगा था।

'ऐसी भी क्या हूक उठी थी और तुम्हारे गले उतर कैंस गयी प्लेट होल्डर से फिसलकर पटटी फश पर आ गिरी थी और अप्रिय स्वर जिस गति म उठे थ उससे अधिक तजी के साथ शात हो गये थे। पास रखे वाली बीकर को अपने हाथो से छुआते मैंने हसकर कहा था, 'ऐसे।' बीकर के पद स मैंने दखा था कि शब्द का प्रभाव प्रतिकूल हुआ था। 'तो ठीक है घर के भी और प्रसन्न होगे। और क्या फक पडता है। है न।'

अपनी उत्तरपुस्तिका उठा वह चल दी थी। चिक उठत ही डाकरूम म बाहर प्रतीक्षा करता प्रकाश एक साथ उमड पडा था। उस चौंध मे मैं कुछ नही सोच पाया था। फडफडाकर कापी का पष्ठ बदला था। जिस पर बने चित्र का अथ था—धारा का भग होना बनने की अपेक्षा बहुत कम समय लेता है। तब तक म इसे आत्मसात करता वह जा चुकी थी। कक्षा म फिर कभी नही आयी। एक बार सडक पर मिली तो मेरा 'हलो' अन सुना कर सामन दखत हुए पास स निकल गयी

लबे अतराल के बाद कल साय होटल पर खाना खाते हुए हम मिले थ। हरदत्त मरा पूवपरिचित है स्कूल मे साथ पढत थे। लेकिन अभी जान पाया कि वह मधु का पति है। गत्रशप के बाच सहस्रधारा पर मिली नथ निकाल मैंन कहा था मुझे रास्ते म मिला है।' मधु हँस दी थी, *तो कुआरे ही हो।* और *तिगलकर हरदत्त न कहा,* 'इसीलिए *तो मिली है।*' इधर के ठहाको के कारण ही, उधर की मेज पर बठे मरे साथी जिज्ञासा सहित घूरन लग थे। टहलते हुए हम लौट रह थ कि चरणपादुका तक अगले दिन प्रात घूम आने की बात चली थी।

चरणपादुका यही कही होनी चाहिए।' मैंन कहा।

तुम्हें भी आरती दखनी है?'

हम काफी चल आये हैं।

अभी तो पहाड़ी पर चलने को पाँव रखे हुए हैं। सब भूल जाओ, बर्फ छूकर ही लौटेंगे।

वह बहुत दूर है। तुम्हें गलतफहमी है, यह मैदान की दूरी नहीं।

तब तो एडवेंचर का और आनंद आयेगा।'

तल की खुरदरी जमीन पर मेरा पाँव ठहर गया। ऊपर से सूखी जान पड़ती घास आशा से अधिक नम और मुलायम थी। पगडंडी से हटकर चलने पर ही यह भान हुआ था। नंगे पाँव होता तो शायद यथार्थ का और प्रत्यक्षीकरण होता। पास की झाड़ी में लगे पीले पीले छोटे फूल देख मैं झुक गया, काँटों से अँगुलियाँ बचा एक गुच्छा तोड़ा। झाड़कर कोट में अटकाने को हुआ कि मधु ने अनुरोध किया, मुझे दे दो।

गोल अंगूठे और पतली दो अंगुलियों से बनाये फूलदान में उसे सजा वह सूँघने लगी। तुरंत ही नाक सिकोड़कर बोली, हूँह गंध नहीं कैसा प्राकृतिक फूल है यह।

दस-ग्यारह हजार फीट की ऊँचाई पर नवंबर माह में खिला हुआ है। इसकी प्रशंसा की जानी चाहिए।' तिरस्कृत का पक्ष लेते हुए मैंने कहा।

आह। सो तो बड़ी बात है। बालों में उसके लिए उचित स्थान बनाने लगी।

भग्न पगडंडी पर साथ नाले के प्रवाह की विपरीत दिशा में बढ़ते रहे। अपनी परिणति से विस्मृत नाले को देख मैंने सोचा—शीघ्र ही यह अपनी विशिष्टता खो बैठेगा। स्फूर्तिमय उन्मुक्त कोलाहल का यह निनाद व्यस्तता ले भिन्न हो जायगा। फिर भी भविष्य के लिए अभी से वह चिंतित नहीं होना चाहता। बचपन में जितना व्यतीत हो जाय वह अच्छा है। मैंने अपना कोट बाँह पर ले लिया और रूमाल से चेहरे का गीलापन पोंछने लगा। आगे की आर नाला फैला था। गतिमान का आधार बनाते गारे काले, गोल चपटे पत्थर निर्लिप्त से स्थिर पड़े थे। ये क्या ठिठुर रहे हैं? इस तपस्या से क्या प्राप्त हो जायगा? अपने आप से पूछकर मैंने मधु की ओर देखा—बालों में ठहरा गुच्छा सांध्यकालीन पहले तारे की

नाद (कविता संग्रह 1980)
उस जनपद का कवि हूँ (कविता संग्रह 1981)
प्रस्थान (कविता संग्रह 1984)

50 गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

भांति शुभ सध्या की कामना प्रकट कर रहा था।

वाह, आकृति !' अपने आप कह मैं मुस्करा दिया।

'क्यों ? मधु ने पूछा।

कुछ नहीं।

कुछ तो है ही। परेशान होती मधु ने जोड़ा 'यही न कि तुम्हारे साथी क्या सोचेंगे या हरदत्त ही '

हां एसा ही कुछ।'

वह सतुष्ट नहीं हुई। मेरा सक्षेपण सन्दिग्ध था।

गभीरता से मैंने पूछा दरअसल मैं यह समझ नहीं पा रहा हूं कि वक्त छूकर तुम ऐसा क्या पा लोगी ?

पहले से अनग ! उसने गवपूवक कहा कुछ इस प्रकार मानो यह कहने को उसके होठ देर से मचल रहे थे।

सकरी पहाड़ी पर स्थित उस मोड का मुझे स्मरण हो आया, जिसके लक्षण उसके नाम से चरिताथ हैं ब्लाइंड कानर—एक ऐसा मोड जिसके आगे का अन्दाज नहीं। चालक को ज्ञात नहीं कि उस ओर क्या है। कितने वाहन हैं किस आकार प्रकार के हैं किस दशा में हैं आदि। वह अपनी धुन में बढ़ता रहता है और यात्रियों की धडकन बढ़ती चली जाती है—हान नहीं दिया स्पीड अधिक है चालक कहीं ऊंघ तो नहीं रहा उसे टोकना चाहिए मधु को झुकते देख मेरा ध्यान टूटा। साड़ी का पल्ला कंटीली झाड़ी में अटका है और तिरछा पांव डाली में तनाव उत्पन्न किये हुए है। बेरी सा एक लाल गरू फल झडकर गिर गया।

पल्ला छुडाने के लिए वह झाड़ी छूने लगी तो मैंने टोका, जरा सावधानी बरतना यहाँ जहरीले कांटे हैं ! कहते हैं, ये आसानी से नहीं निकलते। भीतर पैठते जाते हैं।'

वाह तब तो मजा आ जायगा। पल्ला छुडाकर वह साथ-साथ चलने लगी। न जाने क्या है उसके भीतर कुछ भी तो स्पष्ट नहीं। विचित्र असामान्यता ने मेरे भीतरी तनाव में निरंतर वृद्धि की। माना यह रोमांच भरी है मगर उसका शिथिलीकरण अनिवाय है

अजय, ऐसा अनुभव करने का अवसर कब-कब मिलता है। जोशी

मठ से आगे एक स्थान पर बस ठहरी थी। बिच्छू बूटी की तारीफ सुनकर जी हो रहा था कि छूकर जाना जाय कि इससे बिच्छू के डंक सा दर्द होता है या लोग बस ही हाँकते हैं।

मैं स्तंभित रह गया। यह क्या कह रही है? तो ऐसा कर उसे क्या मिल जाना? न कोई वस्तु कारण जान पड़ता है न तात्विक कारण जान पड़ता है तो यह कि शेखी बघारने का एक टापिक या फिर खाली बेवकूफी

नीलकंठ दबे पांव पीछे खिसक रहा था। वह उतना ही दूर था। पाँच छह पहाड़ियाँ हम लाँघ आये थे। बस से पास का स्थान जहाँ बर्फ थी, वह दायी ओर खड़ी पहाड़ी के सिर से सटी घाटी थी। इन वस्त्रों और जूतों में वहाँ तक पहुँचना मुश्किल है—मैंने सोचा। वहीं एक नाले के पार स्थित सपाट चौकोर ऊँची चट्टान की ओर देखने लगा। उस पर चढ़ने के लिए नाला पार करना होगा बर्फीले पानी और रपटते असमान पत्थरों पर से जाना होगा खड़ी चट्टान पर चढ़ना होगा लेकिन यह जरूर था कि वहाँ से देखा गया दृश्य अभूतपूर्व होगा। मेरे ख्याल से उस पर चढ़ें।

बेकार ही समय बरबाद होगा। बर्फ छूएंगे देखने के लिए सोविनियर लेकर आयेंगे।

कट् कहने को अलग हो रहे होठों को मैंने बलात रोक दिया। यह उसकी निरी जिद है हरदत्त की बर्फ में कोई रुचि नहीं। कंचन के लिए वह कहती तो कुछ समझ में आने वाली बात होती।

मेरी ऊब में वहाँ बैठे कौआ ने कौतूहल जगाया। कौए की चोंच लाल थी। पाँव सुडौल पर गहरे लाल रंग के। हाल ही की गयी पालिश जैसे चमक रहे थे। उन पर बात करने के लिए मधु की ओर मुड़ा तो देखा, वह बीस पच्चीस कदम बढ़ चुकी है। वहीं बैठ आसपास देखता रहा। हल्की वनस्पति ने भी साथ छोड़ दिया है। है तो केवल अनाम पत्थर—ठंडा लबादा ओढ़े हुए। फलतो बर्फ एक सप्ताह में स्वयं यहाँ तक आ जायगी। अच्छा होता एक सप्ताह बाद ही इस बदरीनाथ में मिले होते तो न यह कष्ट होता न जोखिम उठानी होती। यह महिला है मेरी क्षमता की सीमा है साँसों द्वारा साँसें सुनायी दे रही हैं, आक्सीजन की कमी महसूस हो रही

[illegible] (कविता संग्रह 1980)
शब्द (कविता संग्रह 1980)
उस जनपद का कवि हूँ (कविता संग्रह 1981)
प्रस्थान (कविता संग्रह 1984)
40 गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

है, एकजुट पूरा शरीर आगे बढ़न से इन्कार कर रहा है वापस भी तो लौटना है। उफ तक पहुँचना यानी करीब दो सौ फुट की विकट चढाई। फिर घाटी म उतरना

अजय, चलो न। एक वच्चे को मा तुमसे कितना आगे है।'

'है तो मेरी बला से मुझे झुझलाहट हुई। मैं उठ खडा हुआ।

'अब तो कुछ भी दूरी नही रही। वह है देखा।' वह बठ गयी।

कुछ पास पहुँचने पर मैंने देखा वह टकटकी लगाय पूण मनोयोग से हिमाच्छादित पहाड और खडड की ओर देख रही है। मानता हू चमकती रजत म सम्मोहन है इतना दूर आकर उसे छूना और चखना साहसिक हो सकता है—इसस अधिक लेशमात्र भी तो नही।

अब लौट चल। यहाँ स देखना और वहाँ पहुचन म कोई खास फक नही।

वाह साथ वाह! क्या कह गय आप? शाल समटत उसके हाथ बाहर की ओर फल गय।

हतोत्साहित करने के लिए नही कह रहा पर सावधान कर देना चाहता हूँ। यह बेकार ही थकना है। और फिर लौटन पर इतना ही ज्यादा और चलना पडेगा। उठकर वह और आग चलन की तैयारी करने लगी।

इस जिद स तुम्ह क्या मिल जायगा? कुछ रूठ हुए कहा और अपने हाथ का काट कधे पर पटक दिया।

तो तुमने भी दत्त-सी बात कह दी। मिलेगा नही पायेंगे। कुछ समय वह छडी स पत्थर पर हल्का प्रहार करती रही। स्वकेन्द्रित हो कहने लगी बफ को पहाडी पर एकत्र हो क्या मिला? उसने प्राप्त किया है रूप आकार। ताप ग्रहण कर वह गति पायगी। इस परिवतन द्वारा एक और सौंदय प्रकट होगा। सक्रमण की यह कडी निरतर रहेगी। अब यह पूछो यह क्या है? इसलिए कि आवश्यक है। आतरिक माँग है।

कस? उस चिंतक पर मैं हँस दिया।

एक बार घूरकर उसन मरी ओर देखा फिर किसी दिशा को सबोधित करत हुए कहा अपने भीतर खोजो।

एक ओर हिम का शालीन रूप उससे जुडा निमल आकाश तथा दढ

चट्टानों का परिवेश वही निद्रित मधु अब तक जानी हुई मधु से पृथक जान पड़ी। वे अवस अल्हड़पन लिए नहीं बल्कि गढ़ गरिमामयी मद मुस्कान लिए थे। तो यह चितक कब से हो गयी? गृहस्थ हुए कुछ समय हुआ है मगर किसी शिकायत उलाहना का प्रश्न ही नहीं उठता। आवश्यकता से अधिक ही सुख सुविधाएँ उसे प्राप्त हैं जिस पर भी कुछ विचित्र से नयेपन की आकांक्षा रसद के लिए प्रयुक्त हेलीकाप्टर ने मेरा सोच क्रम तोड़ा जब वह गुजर गया तो मैं पुन विचार करने लगा। यह परिवर्तन की आकांक्षा ? कभी नाटक का वास्तविकता द्वारा प्रकट करना होता है तो यह आकांक्षा किसी विलासिता का अंग तो नहीं और आमोद हेतु मैं माध्यम

मेरे भीतर एक झंझावात घुमड़ने लगा। यह विलासिता का ही अभि व्यक्तिकरण है। एक झटके के साथ उठ खड़ा हुआ मैं चलना है तो जल्दी करो वैसे ही बहुत देर हो चुकी है।' बिना प्रतीक्षा किये ही मैं लम्बे डग भरने लगा। कुछ चल पीछे देखा वह सभल सँभलकर बढ़ती प्रतीत हुई। ऐसी दुरूह चढ़ाई पर केवल प्रमातिरेक से ही चला जा सकता है। वह बैठ गयी। घाटी जिसमे बर्फ नीचे उतर आयी है अब विशेष दूर नहीं रही। मैं भी बैठ गया।

छड़ी टेकती वह फिर चल दी।

अब यहाँ आकर ही ठहरना।' पास की चट्टान की ओर इंगित कर कुछ आदेशात्मक स्वर म मैंने कहा।

वह वहीं ठहर गयी और तर्जनी से माथे का पसीना छिड़कने लगी चढ़ाई कठिन है तुम चलो मैं जरा धीरे धीरे आऊंगी।

यह उचित मौका है वापस लौट चलूँ—मुझे लगा। नहीं। किसी भीतरी कोने ने सवेग प्रतिवाद किया। मैं चलने लगा। कोई बीस पच्चीस कदम की दूरी पर पड़े बड़े गोल पत्थर को मैंने अगला विश्रामस्थल चुना। लेकिन पाँच सात कदम पर ही दिल बाहर आने को हुआ। प्रत्येक पग झिझकता बाध्य-सा उठने लगा मांस पेशियाँ चरमराने लगी।

क्या थक गयी?

हाँ तुम चलते रहो।

शब्द (कविता संग्रह 1980)
उस जनपद का कवि हूँ (कविता संग्रह 1981)
अरघान (कविता संग्रह 1984)
50 मोतीनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

कोई भीतर स मुझे धकेल रहा था। कुछ लम्बे डग भरना मैंने उचित समझा। गति द्वारा लम्बाई का सकुचन करना चाह रहा था मैं। लगभग वसी ही नासमझी कि बरसात मे भागते हुए दूरी पार कर दो। वैसे ही टिके पत्थरा पर मेरा बढा पाँव ठहरा था और पिछला उठा कि मैं सतुलन खो बैठा। अनमना पाव कुछ तालमल न बैठा सका और सतुलन होने पर पत्थर ने अपना स्थान छोड दिया। एक माथर पत्थर की चुभन सहता मैं गिर पडा।

'अधिक चोट आयी ?' सहारा दे उठाते हुए वह बोली।

'पीठ मे तो नही पर लगता है पाव मे मोच आ गयी है। अपन बायें सख्त पाँव को फैलाकर मैंन कहा।

एक दूसरे की घडी देखते हम चुप ही रहे। स्थान वही रहा सुइयाँ चलती रही। हाथ स बफ छून के जा रहे अवसर के बारे मे बेबसी प्रकट करती हुई-सी वह बैठ गयी। बारी बारी से मेरे फल पाँव और हिम को देखती रही। इस दखने ने मेरे पूव विश्लेषण म कोई बारीक त्रुटि पायी। न जाने उन आँखा म क्या था, जो मेरे भीतर गहरा और गहरा होता गया। अपना सदेह भरभराता अनुभव होन लगा।

मैं तो शायद न चल पाऊ, फिर भी तुम जरूर जाओ मधु। मैंने जूते के फीते ढीने करते हुए कहा।

तटस्थ हो वह उधर देखती रही जहाँ रोएँदार हिम और चमकते गोल, एक-दूसरे स सटत जुडते ऊपर जा एकाकार हो गय थे। उसने मेरी ओर दखा चहरे पर मिले-जुले भाव आने लग। हिली नही।

जाओ भी भई। तब तक मैं उस सिरे तक पहुचता हू। वही से घाटी म तुम्ह देखता रहूगा।' पीठ थपथपाते हुए मैंन कहा।

मौन हो वह अँगुली से नासिका सहलाने लगी।

जाऊँ ? होठ हल्के खुले।

पहुचो।' अभ्यन्तर शुभकामना सहित मैंन कहा। अपनी नथ निकाल पल्ले से पोछने लगी और साफ कर मेरी ओर बढा दी, 'वह अपनी वाली द दो।'

सहस्रधारा की स्मृति को उसने अपने स्वाँस बीच रोपित कर दिया।

साँस ही तो रक्तप्रवाह नियमित रखती हैं—उष्ण और निर्बाध प्रवाह!

'थक्यू !' वह खडी हो गयी।

पहाडी और घाटी की सीमा पर पहुच मैं लेट गया। ठीक पीछे एक दूसरे को आधार प्रदान करत ढेरा खड पडे थे। इन्ही के नीचे एक पतली धारा बह रही होगी—अलकनदा म मिलने के लिए। मधु नही दिखी। सामने ही ता बर्फ है कहाँ गयी वह ? उसकी लापरवाही अच्छी नही लगी।

मधु ! मैंने पुकारा।

क्षीण प्रतिध्वनियाँ लौट आयी। एक बार और पुकारने पर भी वे अपने साथ विभेदी स्वर न ला सकी कही कुछ अशुभ कि इच्छित आवृत्ति की भनक हुई। मैंने उस ओर दखा—स्काउट का दल पिरामिड बना चुका है और शीप पर खडा बालचर अपनी दल सख्या एव स्थान कह रेफरी की ओर दख रहा है। बस एक पहाड है जिसकी घटक शिलाएँ एक पर एक अपनाप से बैठी है। चाँदनी सी शीतल स्फटिक शिला पर एक ध्वज लहरा रहा है। इधर उधर बिखरे पत्थ को एकत्र करन की चिंता लिए एक नन्ही बालिका खडी है। उसके चारो ओर उज्ज्वल बर्फ है, सेंमल के पड से हाल ही म उडी रुई का दिव्य खड वह मधु है जिसक पाँव कुछ धँसे हैं दाना हाथ भरे भरे हैं एक टक्डा मुख स झांक रहा है। दोना हाथा म भरा उसन मरी ओर उछाल दिया और किसी दक्ष नस की भाँति ड्रेसिंग टबल के एक आर पडी रुई का नया गटठा उठान लगी। एक स्पष्ट रूपातरण उस पर विद्यमान है—आभासित स कही अधिक इन्हे चिह्न अक या शब्द शायद ही व्यक्त कर पायेंगे

लो चखो !' रूमाल म बँधा हिमखड उसने मेरी ओर बढाया। हथलिया एक दूसरे पर आ ठहर गयी और श्रद्धासहित प्रसाद लेने को हाथ बढ गये आधे स अधिक खा चुका मगर प्यास न बुझी।

मेरे तो मन म ही रह गयी। उस अलौकिक मौन को सबोधित कर मैंने कहा। वहाँ स्थाई बसत की मुस्कराहट ही रही।

नीलकठ की शाखाएँ कोहरे से ढक रही थी और धुधलके का लगा

[illegible] (कविता संग्रह 1980)
शब्द (कविता संग्रह 1980)
उस जनपद का कवि हूँ (कविता संग्रह 1981)
प्रस्थान (कविता संग्रह 1984)
८० गौरनगर सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

तार विस्तार हो रहा था। कहीं बरसात या हिमपात न हो हम बिना रुके बदरीनाथ की ओर बढने लगे।

कधे पर आलू का बोरा ले जा रहे पहाडी युवक को राह देने के लिए एक ओर हुआ तो सीढियो पर थका निराश चहरा लिए बैठे हरदत्त पर नजर ठहरी। कचन कधे पर माथा टेके सोया था। उनसे हटकर खडे पडे चायपान कर रहे थे। दूसरी ओर यात्रियो म पूडी खरीदने की होड लगी थी।

हमे देखते ही वह खडा हो चिंतित सा बोला, 'बडी देर कर दी तुमने।'

'रास्ता भटक गये थे। बहुत दूर निकल गये थे हम। कुछ अपराध भाव सहित मैंने कहा।

तो अच्छा ही रहा वरना यह पवित्र सौगात कसे लाते।' अपने रुमाल को झुलाते मधु बोली। कचन को अपनी बाहो मे ले साहस और श्रम की भेंट अपने पति की ओर बढा दी।

'चखो। भीतरी सुख ने मुस्कराते हुए कहा।

थैंक्यू।' हरदत्त कुछ स्वस्थ हो चला था। दाता से बफ तोड टुकडे को घुलने दिया। फिर मेरी ओर हो कहा वही तो स्वाद है यार! गर्मी मे अपने यहाँ पद्रह पसे किलो मनो मिलती है।' और शेष टुकडा अलकनदा की ओर उछाल दिया।

मैं अपनी धमशाला म हूँ। एक तीखी हडफूटन विद्यमान है। अगली प्रात शिमला के लिए प्रस्थान की तैयारी और योजना मे साथी व्यस्त हैं। धार्मिक स्थान हम देख चुके हैं। एक साथ लम्बे टूर के लिए हमने घर छोडा है। बहुत से स्मरणीय क्षण हम बटोरने हैं। ऐसे जो थ्रिल से उठकर हो धडकन के समीप। एक नथ मुझे सहस्रधारा पर प्राप्त हुई दूसरी चरणपादुका और नीलकठ पवत श्रेणी के बीच। सौभाग्य साथ दे, तीसरी जाकू मदिर की राह मिले।

फिलहाल, कुरेदने वाली एक बात है वह नथ मधु पहन रहेगी या उतार फेंकेगी? •

पलायन

कदाचित प्रकृति का वैषम्य ही वह सेतु है कि हम विपरीत क्षण अपना अस्तित्व सजोये एवं नाभिक बने हुए हैं। शोध और कक्ष हम दोनों में उभयनिष्ठ हैं। मैं समर्जित वह समर्पित मैं कुछ अस्तव्यस्त सा वह सुसगठित। रहन सहन आचार विचार वेश भूषा से वह विशुद्ध और उसके सापेक्ष मेरे लिए सबोधन है सकुचितता। निश्चय ही निर्भीकता का श्रेय उसकी सकल्प शक्ति को है। अक्सर अपनी अपनी जीवनचर्या को उचित ठहराते हममें दार्शनिक तर्क होते कुछ-कुछ कटुता के स्तर तक और मिहनत के अल्पावकाश बाद ही एक दूसरे की तार्किक प्रतिभा की प्रशंसा कर हम मित्रवत ही रहते।

उदाहरणार्थ उस दिन वह पूछ बैठा— उच्च शिक्षा से तुम्हारा प्रयोजन क्या है ? तुम शोध कर पाना क्या चाहते हो ?

मुझमें व्यावहारिक के लिए एक ही उत्तर है—आजीविका उपार्जन हेतु। लेकिन वह इसे उचित नहीं मानता—उदरपूर्ति के लिए इतने श्रम की आवश्यकता नहीं।

मैं स्पष्ट करता हूँ अच्छी नौकरी मिले ताकि भले व्यक्तियों की भाँति रह सकूँ। निरतर विकास की ओर बढ़ता रहूँ और मानव हितार्थ कुछ प्रायोगिक उपलब्धि प्राप्त करूँ।

ताकि तुम नोबल पुरस्कार प्राप्त कर सको। उसने निरुत्तर करने के उद्देश्य से ही कहा शायद।

हाँ, शायद। मैंने सकुचाते कहा।

[illegible] (कविता संग्रह 1980)
शब्द (कविता संग्रह 1980)
उस जनपद का कवि हूँ (कविता संग्रह 1981)
प्रस्थान (कविता संग्रह 1984)

40 गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

वह ठहाका लगा हँसता रहा। उसकी व्यग्योक्ति गलत भी नहीं है। जिस व्यक्ति ने डिग्री के लिए तिकड़म भिडाने के अतिरिक्त कुछ भी नही किया वह सर्वोच्च पुरस्कार के लिए लालायित है। फिर भी मै अपनी धारणा को अनुचित नही ठहराता यह मेरी महत्वाकांक्षा है।

मैंने उसकी टोह लेनी चाही तो तुम क्या माथापच्ची कर रहे हो ?

सप ट होने का प्रेक्षण लेत हुए वह छत की ओर दखता रहा। आखें हट कर खिड़की पर लग गयीं। कुछ देर वहीं ठहर उसने अपनी दृष्टि दरवाजे से बाहर की ओर की। जगली झाडियो से परिपूर्ण मदान जो क्षितिज से जा मिलता है। नजर वहा केन्द्रित कर बोला— मेरे विचार मे तो उच्च शिक्षा का ध्येय लाभाकांक्षी होना ही नही है। उपयोगितावादी तो बिन शोध ही बन रहा जा सकता है। किसी उच्च लक्ष्य तक पहुचते ही इससे श्रम का अभीष्ट होना चाहिए। और शोध कर जो पद तुम पाओगे वह तो अब भी मिल सकता है।

मैंने खिसियाते हुए चोट की उपदेश के लिए बहुत सी बातें हैं उमेश वास्तविकता के धरातल पर उतरो। क्षितिज से दृष्टि हटा धरती की ओर देखो! क्या तुम्हें ज्ञात नही कि आज की परिस्थितिया क्या हैं ? क्या अब रिसर्च करना वसा ही नही हो गया है जसा कि बाप बनना है तो विवाह कर लो ? और रही विशिष्ट काय की बात तो पाटनर अमरिका मे इलक्ट्रान को त्वरित करने के लिए 20 किलोमीटर से अधिक लम्बी चनल बनी हुई है और यहाँ बीस किलोमीटर लम्बी सडक बनानी हो तो '

अपनी नत्रिका को समीप के लिए व्यवस्थित कर वह इधर उधर दखता रहा। 'मै तुम्हारे दृष्टिकोण को अनुचित नहा कहता। लेकिन मैं तो चाहूँगा कि पढा लिखा व्यक्ति इतना उन्नत हो कि स्व पर का अतर मिटा दे।'

मैंने उकसाते हुए कहा भाई, मसीहा बनने के लिए, जसा शोध काय हो रहा है वसा करना आवश्यक होगा ऐसा मेरा अनुमान कभी नही रहा। मैं तो यह जानता हूँ कि हमारे समुदाय मे अधिकतर लोग छात्र वृत्ति शोध के नाम पर पा रहे हैं और तैयारी आई० एम० एस० की कर रहे हैं।'

तुम जो कहते हो उसका मैं प्रतिवाद नहीं करता फिर भी अपने लिए कहता हूँ स्वयं को आंतरिक रूप से व्यवस्थित करने के लिए, देश और परिस्थिति के निरपेक्ष शोध सदैव उपयोगी रहा है।

मुझे तनिक संदेह नहीं कि अपने कहे के प्रति वह ईमानदार है। शोध पत्र के लिए इधर-उधर से टीपना या किसी प्रचलित धारणा का अंधानुकरण उसका प्रयोजन कभी नहीं रहा। फलस्वरूप मैं थीसिस लिखने तक पहुंच गया और वह एक परचा भी नहीं छपा पाया। मौलिक काय के लिए वह प्रतिबद्ध है। सारा शैक्षणिक समुदाय तन मन से उसे चिंतक समझता है। व्यवहार में सुशील भद्र उपकारी ऐसा ही उसे अशैक्षणिक कर्मचारी कहते हैं। कटी छँटी दाढ़ी कुछ कुछ बढ़े पर भले सँवरे बाल, खद्दर का पट कमीज, चप्पल हाथ में भूरे रंग की फाइल पूरे विश्वविद्यालय में उसके जोड़ का प्रभावी व्यक्तित्व नहीं। न उसे किसी से शिकायत न उस पर कोई उपालंभ।

आज कुछ अप्रत्याशित ही घटित हुआ लगता है। छात्रावास वह मुझसे पहले ही लौट आया है। विचारों में कुछ-कुछ खोया हुआ मुंह लटकाये उसे देख मैं आश्चर्यचकित हूँ। प्रात तो उसका स्वास्थ्य ठीक था। तो कोई झड़प हो गयी क्या? यह तनाव कैसा? वही तनाव जो आंतरिक क्षोभ के समानुपाती होता है।

मैं पूछता हूँ— जल्दी कैसे उमेश?'

वैसे ही। वह मूड में नहीं है शायद। उसका छुपाना मुझे भला नहीं लगता। चुप्पी मिटाने का प्रयत्न कर सीटी से कोई प्रचलित सिनेमा के गाने की धुन बजाता हूँ। रुककर पूछता हूँ— चाय दूध पियेगा?

नहीं।

हुआ क्या है? कुछ तो कभी नहीं छिपाता।' मैं सीधा पूछता हूँ।

बस वैसे ही। कुछ ठहर वह कहता है 'गाइड का मत है कि यह अभिक्रिया असंभव है। उसे कहने में झुंझलाहट होती है पर संयत हो पुन मुखर होता है मैंने बताया दधिच गणित सही है अत सैद्धांतिक रूप से पूर्णतया

...कविता संग्रह 1980)
शब्द (कविता संग्रह 1980)
उस जनपद का कवि हूँ (कविता संग्रह 1981)
प्रस्थान (कविता संग्रह 1984)

0 गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

संभावित है और इसकी प्रायोगिक पुष्टि किसी उष्ण तारे मे होगी। लेकिन वह परचा प्रकाशन के लिए नही जायगा।' रुआंपने भाव उभारे वह फर्श की ओर देखता रहा।

'कोई झगडा-वगडा तो नही हुआ ?' मैं अटकल लगाता हूँ।

'नही। विषय पर कुछ बहस बस।' अवश्य ही वह कुछ छुपाये है मैं महसूसता हूँ। कुछ अप्रिय हुआ है जिसे वह नही कह पा रहा है। एक सिगरेट बढाते हुए कहता हूँ। आज एक दो गहरे कश खीच ले हल्का हो जायेगा।'

नही! आइ डाण्ट केयर। बिन छुए ही कहता है।

मैं विस्मित हूँ। निश्चयमेव वह आधिग्रस्त है वरना भाषा की पवित्रता का कट्टर समर्थक वह व्यक्ति बोलचाल मे ऐसे ही अग्रेजी की शरण नही लेता है।

'घूमने चलेगा ?'

'चलो।' उठते हुए वह कहता है।

घिसटता-सा ऊबड खाबड सडक पर मैं चला जा रहा हूँ। प्राकृतिक प्रकाश मद्धम हो चला है। ऊपर टगे फीके फीके बल्ब अपनी उपस्थिति का आभास दे रहे है। इक्का दुक्का रिक्शावाला हमारे मौन मे विघ्न डालता है। मैं पूछता हूँ—रिक्शा ले लें ? वह टाल जाता है। उसके परिवर्तित हाव भाव के मापन से लगता है कि पैदल चलना लाभकारी ही है। बाग तक पहुँचते पहुँचते मेरे पाँव दुखने लगे हैं। एक बेंच पर बैठने को कहता हूँ तो वह टहलता हुआ आगे बढता रहता है। निरुद्देश्य भटकना मुझे नही भाता, ऐसा मेरा स्वभाव है। करने को कुछ नही तो चलताऊ उपन्यास ही ले बैठो। या फिल्मी पत्रिका उलट-पलट लो। पर वह उस समय और शक्ति का अपव्यय मानता है।

चहलकदमी करती लुगी पहनी लडकियो को घूरता हूँ। फिर एक आवाज कसता हूँ। तो वह रोषपूर्वक मेरी ओर देखता है। मानो कह रहा है यह क्या आवारापन है ? लेकिन उसकी आँखें सूचक हैं एक हल्कपन का जो कुछ समय पूर्व अनुपस्थित था। वह घास पत्तियाँ देखता रहता है और मैं आगे बढ़ी लडकियो की पृष्ठभूमि का प्रेक्षण लेने लगता हूँ। घोर दृष्टि

से मेरा कृत्य देख वह फटकारता-सा कहता है 'यह क्या बचपना है ?'

अपनी व्यक्तिगत दिलचस्पी में अकारण उसे टाग अडाते देख मुझे बुरा लगता है— देख उमेश तुझे नही भाय तो उधर पेड के नीचे बैठ जा या लेट जा। यह क्या ? पुस्तकालय मे साधु, होस्टल मे साधु विभाग म साधु बने रहो और यहाँ पार्क म भी वही। यह कौन सा तपस्वियो का अखाडा है और मैं भी किस सती सावित्री का बलात्कार कर रहा हूँ ?

ठीक है। लेकिन यह बच्चो सी हरकतें चोरी छुपे क्या करता है ? साहस है तो पटा।

एकाएक यह कैसा पटाखा छूटा जिसकी गूज कान की दीवारो स प्रति ध्वनित हो भनभनाहट उत्पन्न किये है। यह उमेश ने कहा ? य उसके शब्द हैं ? तो वह ललकार रहा है ? अथवा मेरी जानी पहचानी कमजोरियो की चिंदियाँ चिंदियाँ करना चाहता है। यह सही है कि आगे बढना मेरे लिए दुरूह है फिर भी

देख मैं पटा लूगा पर एक शर्त है तुझे भी वही करना होगा जो मैं करूँगा।

वह चुप रहा। राह म बेकार पडे एक पत्थर को ठोकर मार सडक पार करते हुए कहा— एग्रीड। अगर तू पटा लेगा तो जो कहेगा वही करूँगा और तुझसे पहले भी।

तो यह कवच भी निरर्थक रहा। क्या वह अपना शारीरिक सतुलन भी खो बैठा है ? एक साधारण-सा व्यवधान ही तो उसकी प्रगति म आया है। व्यक्तित्व सिद्धात तपस्या का यह पतन कैसा ? नही असभव। अवश्यमेव किसी पाठ क लिए यह नाटक कर रहा है कि मैं चरम बिंदु पर पहुच अपने हाथो परास्त हो उसके अनुकूल स्वय को ढाल लू।

तब ही इधर आती तरुणी न इस सशोपज स मुझे उबार लिया। आकर्षक नहीं, फिर भी बुरी नहीं है। कुछ वय अधिक है पर प्रौढा नहीं है। माँग साफ-स्वच्छ, आगे पीछे कोई नहीं। एक विचार कौंधता है—मैं उमेश की चुनौती स्वीकार करूगा। मगर निमिष मात्र म यह विचार विनाश कारी लगता है। उसन चप्पलें मार दी तो ? थूक दिया तो ? चिल्लाकर भीड इकट्ठी कर ल तो ? बडा अनिष्ट हो जायगा। मगर भागा भी जा

सकता है तब भी जीत मेरी ही होगी। किसी को विवश तो नही किया जा सकता यह तो उस पर है कि वह आमत्रण स्वीकारे या ठुकराय। तक स परिचालित हो कहता हूँ— ले ता पटान चला। अब अपन कहे स हट न जाना।'

जेंटलमस प्रामिस। उसके होठो के मध्य दूरी सदद स कही अधिक है। धक धक प्रत्येक कदम पर सत्वर हो रही है। यह उमश को हो क्या गया है? महज चाँस। नही हा सकता। उसने आज तक असत्य नही कहा, कभी धोखा नही दिया और उसका वचन गभीर था लकिन लकिन अब क्या किया जाय? क्या कहा जाय? कस कहा जाये? अभिवादन करू या लापरवाही मे पूछ डालू। इतनी पुस्तकें पढी हैं कुछ भी याद नही पडता। पानी-पानी हुए जा रहा हू और भय है। यह पसीना रिसता हुआ पट गीली न कर द। मुडकर उमश को आर दखता हूँ वह एक शरारती इगित करता है। उफ! उसे तो अपने कहे पर ग्लानि नही मगर यह दुस्साहस मुझसे कसे हो? उमश तो बच निकलगा, मैं कही का नही रहूगा। तो हार स्वीकार कर लू? नही, अब यह नही होगा। मैं होल होने बढता हूँ पर दूरी अब नाम मात्र ही है। आँखें चार हात ही उसके चहरे पर कोई विशेष प्रतिक्रिया नही दीखती। कोई गहिणी है? किसी का ढूढन ता नही निकली। उम्र भी अधिक नही। हा सकता है यह काई वदचलन ही हा और किसी को फाँसने आयी हो। दूर स्थित नियत्रण केंद्र से प्रभावित काई स्वीच सा दबा और मैं बोला, 'दो आदमी का क्या लोगी?'

एक कंपकपी उठी जो शीघ्र ही बठ गयी। मुझे सावधान रहना है। लेकिन वह मुस्करायी और चलती रही। साहस बढ गया मैं साथ हो लिया। एसे काय किसी सुनियोजित योजना स नही बनत, अनाडीपन ही इसकी राह है—मैं सोचता रहा। य कुछ खामोश क्षण अधिक लम्बे लग जब तक कि होठो क द्वार न खुले।

फोर्टी इन एडवास।

एग्रीड! अभी लाया।

वह वही घास पर बैठ गयी। विजयाल्लास म उठत कदम उमश क पास जा रुके। क्या यह उमश की ही प्रेरणा है कि सकल्प स सब कुछ सभव

है इस धरती पर। मगर अब एक आदर्शवादी का सत्यानाश होगा या वह मेरा लोहा मान पीछे हट जायेगा ? निश्चय ही आज का दिन उसके लिए बुरा है।

वह चालीस माँग रही है एडवांस। अँगुली से दबे अँगूठे को उछालते हुए मैंने कहा।

बटुआ निकाल उसने गिनती की 'चौंतीस, छ तू दे देना। कमरे पर लौटा दूंगा।

कोई बात नहीं पर तुझे याद है न पहले तू करेगा वह।' एक मोटा सा मजाक कर मैंने उसे स्मरण दिलाया।

डोंटवरी ! वैसे तुम्हारी खोज शक्ति पर मेरी बधाई। वह मुस्कराया।

रुपये लिए मैं उधर बढ़ता हूँ जहाँ बैठी वह कच्चे-पक्के झड़ते पत्तों को देख रही है। पर यह उमेश क्या चीज निकला। हो सकता है वह अनुभवी हो और छोटे कार्यों में रुचि न रखता हो। फिर निमंत्रण देती सहपाठी छात्राओं की ओर उदासीन क्यों है ? एकरसता की ऊब अथवा क्षणिक आवेश का प्रतिफल तो नहीं ? मगर वह कट्टर सिद्धांतवादी है और उसकी अदम्य सहन शक्ति की पुष्टि में कई उदाहरण हैं। अथवा प्रत्येक धातु की एक प्रत्यास्थता सीमा होती है जिससे परे वह टूट जाती है। लेकिन उमेश का संघटक धातु की प्रत्यास्थता तो अनंत है। कई उथले-गहरे अनुत्तरित प्रश्न मेरे मस्तिष्क में आंदोलित हैं। इधर उमेश दूर हो गया है और वह स्त्री समीप। एक झुरझुरी उठती है जो घबराहट उत्पन्न करती है। मुझसे व्यावहारिक व्यक्ति के लिए इस आधुनिक कुमार गिरि के द्वंद्व फंद से प्रजनित विचारों की थाह पाना कठिन है। वस्तुतः संभव है उमेश वह कर ले पर मैं तो निवस्त्र करने तक की प्रक्रिया भी पढ़े-सुने अप्रमाणित आधार पर ही जानता हूँ। आगे ? आगे तो स्वप्न में भी नहीं बढ़ पाया। उन दोनों की आकृतियाँ धुंधली और अस्पष्ट होती जा रही हैं। यह सड़क पृथ्वी से लगी नहीं बल्कि पहिये पर खिसकता चलता लम्बा पट्टा है जिसकी गति त्वरित हो उठी है और मैं उन दोनों से दूर अति दूर पहुँच गया हूँ। •

[illegible] (कविता संग्रह 1950)
शब्द (कविता संग्रह 1980)
उस अन्तर का कवि हूँ (कविता संग्रह 1981)
प्रस्थान (कविता संग्रह 1984)
[illegible] सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

बुला रही है

मैं तो ऐसा था मुटियाई थुलथुल इस स्त्री के साथ यही दिक्कत कि जरा नही सोचेगी कि सामन वाले की मनादशा क्या है। सदा असस्कृत। सलाह दी जाय—तमीज सीखो, तो चेहरे का अबाधत्व मुस्कराता रहेगा। एकदम वसा कि मेरा पारा चढ जाय। न जान कब यह समझदार बनगी। उस दिन ना हद ही कर दी। निराश था मैं। मुझे जरूरत थी ऐसी की जो मेरे मूड की चिंता करे। और इधर दखो—वही चिढाता हास्य ! पलके झपकती हा या फैली एक ही सकत। शुक्र है दाँत नही दिखा रही, वरना बत्तीसी खीच निकालू। रिझा रही है ठगिनी आदिम तौर-तरीके स। साफे पर अपन को पटक्त पटकते मैंन मुँह से हवा लीक होन दी। कनखी स इधर जाहा—वही बात, यह गाल मटोल चीज वसी हा कता ही जान किस विशेष तत्व स घडा है। हँसे जा रही है, बिना बात। परिवतन पर बदल जीवन है, मगर इसे देखे कोई, कसम खा रखी है हम नही होने वाले टस स मस। मैं भभक उठा था— लगता है अपन बाप की अर्थी क पास भी तुम ठहाके लगात नजर आओगी। सचमुच ही ठहाका लगा दिया था मरी बात पर। लापर-वाही बरतते हुए कहा था— लगात हो शत व इस वासना पर ता मरन वाल नही। जब साँस की गिनती पूरी हा जायगी तब ही गुजरेंगे और वह सख्या मरजी स बदल सकता नहीं। भाड म जाय ऐसी पत्नी। अपन पिता की मौत की चचा तक परवाह नही। चहर पर कोइ फक नही। सच्चाई तो यह है कि गाल क गोल हडिडया पर तो टिक हैं नही जो चहरे की वक्रता बदले। जूत उठात हुए तिरछी नजरो स देख चल दी थी। चोवार पीठ

तकते मैं सोच जा रहा था कि इस गावदू क साथ क्या माथा-पच्ची करता हू अक्सर। खाल की मोटी परत सोख लेती ह शब्दों को। अपन मोहल्ले द्वारा प्रदत्त उपाधि—फैटी आटी—का निर्वाह इसी तन अक्ल स करना है याद पडता है वह दिन कि जब बाजार म मैंन और मेरे होस्टल के साथी चद्र न एक निश्चय किया था। तरग म थे हम, हमने निश्चय किया था—शादी करेंगे ता एसी स कि लोग जलकर रह जायें अदर-ही-अदर पत्नी दखकर। सयोग दखिय कि मेरी पहली विदेश यात्रा वही को हो सकती है जिस दश म चद्र है। कितने चक्कर लगाय और तिकडम भिडाये कि चद्र जिस सस्थान म काम कर रहा ह वहाँ हो रही कान्फ्रेंस म भाग लू—आर कुछ सेकड म ही गूमडे का काला जादू सब बिखेर गया। हुआ क्या ? जान सक्ती हू ?' पत्नी न मेरे भाल की बाढ टोही होगी। उसे पखा तज किया। वह गूमडा हमारे ग्रुप का एक नबर का दुश्मन है। हमारी प्रयोगशाला के बरामदे से वह गुजरा कि फुस्स बोल गय उपकरण माटी की ही भाषा काम म लू ? क्स फूटे है तक्दीर। क्स मन स्थिति स गुजर रहा था तब मैं चिंता म मैं ता घुल जा रहा था आर वह अपनी चर्बी क रूप म जमा की गयी सारी गर्मी स हस-हसकर मेरा मजाक बनाये जा रही थी। भारी भरकम हाथ मेरे कधे पर पडा था—तुम भी अपनी ही तरह क शुभुनिय हो। खुलकर हस ली तो आँख मटकी—फिर भी अपन नयुने तो बता रहे हैं कि तुम रास्ता निकाल ही लोग। हा जाय शत कुछ अटी ढीली करनी होगी तुम सीमा लाँघोग। दखो इस भडभूजी को क्या पता शाय किस चिडिया का नाम है! फिलहाल गुस्सा तो उस गूमडे पर है जो आरो का सिरदद बना है। सिद्धात पक्ष का वज्ञानिक प्रयोगशाला क पास से गुजरा—अजी छाया तक पड गयी—तो हो गया कबाडा। इस गावदू को क्या पता! इसे तो पति वज्ञानिक मिल गया वरना दूर तक रिश्ता नही इस म्लेच्छतन स ससुराल वालो का। एयर एरपोर्ट पर, पाली यदि वायुयान म हुए और उनके नीचे कोई प्रयोगशाला पडी तो अव्वल तो बिखर ही गया उपकरण वरना वहाँ कुछ तिडका तो जरूर ही। अब इस आनुभविक अध्ययन स इस परिचित करा भी दू तो यह ताना मारेगी—अपन मुह स ही कह दिया न मान गय जनाब। हमेशा नाचन पर तुले रहते हो इस काली डार को। प्रिय जरा दिल

से तो झाना, फरता नही क्या मुख पर—फिर हँसुली पर अँगुली की नाव रख परिधि मापत हुए पास और पास खिसकती आयेगी और गुस्से की सारी गभीरता फुस्स कर देगी।

उस बाजार म आवपक पत्नी की चाहना' हैं अत्ये हमराही चद्र को जान ल।

उसकी पत्नी है इगा। चद्र न हिम्मत की जमनी म जा बैसा। आज्ञाकारिता का तयादा ओढे रहा, सो पछता रहा हूँ मैं। जेमन इगा छरहरी है। वज्ञानिक समाज की पदादश है मगर दिल से ? सिलसिलेवार ही ठीक रहेगी पश्चिमी जमनी म छाटा मगर सुन्र शहर है। मामन का मकान बाहर म शहर की शोभा के अनुरूप ही लग रहा था। चद्र ने घटी का बटन दबाया था। खटका दबा तो मरी आँखें चौखट की बढती दरार पर लगी। तमाखुई सूट म एकदम ताजा इगा सामन थी—ही मा—थु—र। उसके पेंग पर मरे हाथ झूले जा रह थ। मरी अँगुलिया के पोर वह स्थान तलाश रहे थ जहाँ एक अगूठी हानी चाहिए जिस पर आबद्ध हथेलियाँ अंकित हैं। इसी का तो प्रेरण था कि अनचाहे गभपात क बाद लौटी पत्नी के लिए ऐसी ही अगूठी मैं खरीद लाया था। (बस मरी ओर से दी गयी पत्नी के लिए यही भेंट एकमात्र है।) वह दमकती यादगार अपनी जगह मौजूद है मैं खुश था। स्मरण हो आया था सब कुछ दो पुरुष हवामहल की छाया म फुटपाथ पर बठे एक अगूठी बनाने वाल स एक विदेशी नारी द्वारा मामूली चीज की खरीद पर हैरान हैं। जौहरियो की दुकान पर मुह बिगाडती रही वह मगर यहाँ पहली नजर म ही उठा ली और पहना दी अँगुली की बातिक कलापूर्ण कुता मरी बाँह पर फला देख नीली पुतलियाँ चमक उठी थी। आखा के नीचे की गोलाइयाँ इतनी उठ आयी थी कि नाक की पिरामिड आकृति जो कुछ अनमेल थी सतुलित शक्वाकार हो उठी। अपनी मुटली के एस पूर्वाभास पर कि यह भेंट ठीक रहेगी मैं चकित था। बात यह है स्त्रीलिंग होना ही व्यावहारिक है सकेत दे दीजिये चहेती पसद टोह निकालेगी।

भोजनस्थली का पीछे छोड़ गुफा म आ चुके थे हम। बमेल सामान क

साथ वह फिर से पास्ट हुई थी— पडर बस एक मिनट ब्लोअर को फश पर रखते हुए कहा था। वह लिपटी हुई चीजें खोलने लगी थी। पूछा— कैसी है तुम्हारी पत्नी व छुटा तुरत जोडा बच्चा चुची मुह म लिए है या फिलहाल खुली हवा का इतजार है ? लिपटे म अटकी वस्तु से मेरी निगाह नारी शरीर के उस हिस्से पर जा ठहरी थी जहाँ डेल्टा सा बनता है। पालिथीन का थना था जो मेरे नाक पर टकराया था— तुम शरारत मैं तुम्हारी के बारे म पूछ रही हू। रपटन्सा ही गया मेरे हाठो से तुमसे तिगुनी। वह जा चुचे की सरचना बताते मरे फैले हाथ धीरे धीरे स्वाभाविक स्थिति म लौट आय तो मैं सोचन लगा बेहतर रहता कि शरीर का नाम अनरहा रह जाता। चद्र कुछ सामग्री ले आया था। वह मुस्कराये जा रही थी समझता हू उदगम वही है—भोगी का आकार प्रकार। यह भट उसकी लायी है। साफ है तुम जो हात तो उठा लात कोई जडाऊ आभूषण या ढाली धातुई आकृति। उस चेहरे पर प्रसन्नता गहराई थी। और यह मेरी आर से। अभी इसलिए दे रही हू कि फिर भूल न जाऊँ। थान-का थान ही वह फैलाय जा रही थी जिस पर वणक्रम से चुनिदा रग प्रेमपूवक छिन भिन रहे थे। यह उस कधे पर लटकी वस्तु साडी है मैंने पहचाना। वह कुछ तिरछे हुई— आयी अब मैं अपना काम सभालूगी। मैंने देखा था ब्लोअर अगीठी माचिस अनपकी खाद्य सामग्री—कुछ खुली कुछ अधखुली से वह घिरा था। हाथ की बोतल का काक खोलते हुए उसने डच भाषा म कुछ कहा था। मुझे अटपटा लगा कसे हैं निर्देश ? तुरत ही इगा ने मेरे भीतर का भाँप लिया था। मुस्करा दी थी वह कुछेक क्षण पहले के भावो को पोछने के लिए— ना कुछ प्राइवेट नही। कहता है सबके लिए वही पकायेगा। जब होस्टल म साथ साथ थे तब तुमने इस कई बार हाथ से पका खिलाया था। ऐसा क्या ! मैं मुस्करा लिया। चद्र ने अपनी बोतल अगीठी के पास रखी और कहा— यहाँ जरा ठड है। तुम दोनो अन्दर बैठो।' उसकी इगित काँच की पारदर्शी दीवार की ओर थी। कई चीजें थी उधर पर प्रमुख थी टेबल पर पडी तीन बोतलें चकना वलाती।

बाहर की आर कँपकपी थी अन्दर सुहाना लगा। इगा ने गिलास भरे। कुछ सावधानी से मैंने घूट लिया। अरे नही। कुछ भी नही है यह तो। गल

नाद (कविता संग्रह 1980)
उस जनपद का कवि हूँ (कविता संग्रह 1981)
अरण्यान (कविता संग्रह 1984)
0 गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

स नप गया तो एक साथ आधा गिलास उँडेल दिया। कुछ देर इसी आशय से बठा रहा कि इगा कुछ कहे। मगर वह कही और जगह व्यस्त लगी—पता नही लगा पा रहा था कहा है ध्यान। मैं दीवार के चित्रो को ताकने लगा। बहाना ढूढ उठा— बताओगी इनके बारे मे?' एक ग्राफिक तक पहुँचते पहुँचत वह भी साथ हो ली।

भगवान क वहीखाते मे नहो वरना ता मैं यहा चकुन्दर की खेती करती। गिरजाघर के पीछे एक त्रिभुज सा दख रहे हो न—वह। वह मेरे बाबा के घर की छत है। इधर एक वगीचा है और उधर बायी ओर चक्की। वे खेत-ये खेत। इनम से ही एक हमारा भी, एक टीस और फिर एक एक धर शब्द अब तो उस पार है।

सवेदक है वहुत कुछ जानकर खिसक लिया मैं। वह एक फोटो चित्र था। पहली दृष्टि म ही मैंने अपने-आपको विकट स्थिति स उबरा हुआ पाया। यह तो मरा घर है, मैंन इगा की ओर दखा 'एक दो दिन के लिए ही तो मैं उससे दूर हू' घनी हुई आद्रता उन आँखो मे विसरित होन लगी। 'खुशकिस्मत हो', वह हँस दी। अच्छा हुआ कसलापन निथर गया। कुछ पीलापन-सा लिए दाँतो की कतार नजर आयी। सालेक भर पहले एअर इडिया की रियायती पयटन यातना का लाभ उठा दोनो भारत आय थे। स्मरण पडता है कभी मैं एक क नायें हू कभी बायें। दवर न भाभी की आर पान बढाया है। पते पर उसके दाता की छुअन कौतूहल लिए है। सुपारी नही चबा सकती। गले म काई टुकडा अटक गया है कदाच। मुह का अधकुतरा हथेली से इकट्ठा कर रही है। छिटकते छिडकन हथेली रग गयी है। मैं चिढ़ाने की मुद्रा म हू— चद्र भाभी क मेहदी लग गयी खूब ठहाक लगाय थ हमन साथ-साथ। उसकी झुझलाहट बढती जा रही थी। मुझे अपन व्यवहार पर खेद हु आ था। कहो दो-तीन गिलास पानी पीकर ही वह सामान्य हो पायी थी।

काफी क्षणा के लिए मैं खो गया था। जस ही लौटा मैंन अपने आपको अकेला पाया। काच के उस पार दखा तो दिखा कि वह चद्र की अँगुलिया पर फूँक मार रही है। हो सकता है इसस पूव हाथ जलाने की सजा म चपत भी पडी हा चद्र क। आदश युगल है यह और भी तस्वीरे थी मगर मैं

सिनावा की ओर आ गया। यही कोई तीसरा चौथा शीफर होगा कि पास आते पदचाप सुनायी दिये। मानी सब ठीक ठाक। व रुके तो मुड़कर देखा वह घूर ले रही थी चद्र पर टकटकी बाँधे। मैंने काँच से पार देखा, चद्र पसीने म भीग चुका था। पूरी मुस्तदी स सेंक रहा था पलटत जा रहा था। मुझे आते देख उसने गिलास भरा। बैठते बैठते इगा न पूछा—'अब कैसा है तुम्हारा रश ? यह वाक्य बसा ही तो लगा जसा कहिये कसी है तबीयत। और अनुरूप ही हल्का जवाब था— उतनी ही जगह घेरे।'

वह एक बार तो चौंकी मगर मेरी मुस्कान पर हँस दी— ओह ! तुम तो मजे क मूड मे लगते हो।' तो फिर मुटनी का ही चुराया आइडिया काम का निकाला— यह क्या हर बात पर बन रहो। हम कुछ देर हँसत रहे। हम उनम स नही जो आसानी स औरों की नकल पर उतर आयें। इगा न मरी बात पर दस बार ठहाका लगाया। चद्र पर एक नजर डालन पर लगा कि यह बातें राष्ट्र म सबधित ? गभीर रहना था मुझे। मोटी की तरकीबें गुमराह करती हैं। कुछ सोचा तब मैंने गभीरता से कहा— मिसेज चद्र हम कुछ ही समय बाद एकदम बदला नया आधुनिक पाओगी तुम। भीतर म कसमसाती हीनता न उकसाया— हम आपसे खुशहाल नही है। महसूस करत हैं—कितने उन्नत हैं आप लोग। यह खाना-पकाना ही देख लीजिये— जबकि हमारे वहाँ स्त्रियाँ जगल म उपल और लकड़ियाँ बीन रही होगी कि चूल्हा जल ' बहुत कुछ कहना चाहता था लेकिन हिम्मत नही पडी। हम दोनों की ही नजरें उस ओर थी जिधर छल्लानुमा काली पतली परिधि चमकता लाल क्षेत्र घेर थी।

इगा की अँगुली उधर को उठी—'इसकी तारीफ है ? वह जिद है निरा पागलपन, झूठी शान का दिखावा खान म स्वाद तो पकाने वाले का कलेजा डालने पर पदा होता है। क्या मायने ? तब मैं अपने जूते देख रहा था। छँटे छँटाय व्यजन एक एक वस्तु विज्ञान की तराजू स तुली—तो यह गुड़ की दीदानेदर पर तुला है ? अब यह तो प्रकट ही है कि चद्र ने पाक विद्या म दक्षता प्राप्त कर ली है। कदाचित तो खान म मुहावरे पकाने स रहा तो यह श्रीमती किसका पक्षधर है ? आदिम तौर-तरीके से लपटा पर भूना जाय ? सामग्रियों को चीना है ? यह झूठी शान नही है यह

नाद (कविता सग्रह 1950)
उस शतक का कवि हूँ (कविता सग्रह 1981)
प्रस्थान (कविता संग्रह 1934)
सौजन्य सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

विश्वास स्वागत योग्य है। हम पिछड़े हैं मानना चाहिए—सच्ची वैज्ञानिक प्रवत्ति यही है।

विचार शृंखला को चद्र की दखलदाजी न ही तोड़ा—एक्सक्यूज मी! इसका जरा डाट खोलना।' मेरा कंधा झकझारते कहा—कहाँ हो महाराज! इस वक्त भी बढ़िया विज्ञान हो रहा है क्या? उठा इसे गला खखाल ले भले आदमी।' मुझे गिलास थमा बोतल झुलाते वह अपने स्थान को लौट चला। काश! प्रिय चद्रदेव शर्मा जिस दुविधा म मैं फसा हूँ वह बता सकता तुझे। तेरी शिक्षिता पत्नी के उदगार पर तरस खाये हूँ। यह जो चारो ओर गलीकें का है न इसे यह तुच्छ समझती है। हय! यार, वही पुरातन धारणाए लिये हुए सवत्र बिखरी हैं स्त्रियाँ? इस तत्काल सूझ पर मुझे क्षणिक हसी आयी।

उधर पहाड़ी पर एक पवित्र झरना था। गये थे अभी उधर?

'रेडियो से अखबार की खबरों म सुना?'

कुछ खास बात?

तुम गलता के बारे मे ही पूछ रही हो न जहाँ पाप धोने क लिए स्त्री पुरुष नहाने जाते थे।' वह हैरान नजर आ रही थी। तो फिर कैसी है जिज्ञासा? पवित्र झरना एकदम विरोधाभास। इधर, इस बोतल तक म जरूरत का पानी डिस्टलरी मे ही निथारा जाता है और यह गदने पानी की याद लिए है। शालीनता मे ही रहा—

बाढ न उसे नष्ट कर दिया।'

कब?'

अभी महीना भी नही हुआ।

बुरा हुआ। उसे ठीक कराया जाना चाहिए। वह कुछ खो-सी गयी।

—वाह री पडिताइन! मैंने जरा गव क साथ गिलास उठाया।

उस किले पर देवी के मन्दिर म अब भी उतनी भीड़ रहती है?

क्या कहें? अपना तक? फिलहाल नही।

- हाथी और कार जाने का रास्ता तो नष्ट हो चुका इस अनावष्टि स।

पैदल तो जाते हैं।

कैसे रोकें?' मगर यहाँ कैसे तक दू समझ नहीं आता। 'लिबास तो आधुनिक हो चला है पर हमारा दिल गावदू सदियों से पठे अंधविश्वास और परिपाटियों से चले आ रहे अनुष्ठान एकदम तो खत्म हो नहीं सकते। शिक्षा का रास्ता लंबा है—कुछ समय लगेगा समझदार होंगे—हम सुसंस्कृत होंगे विवेक तर्क बुद्धि फटकार क्या क्या न आजमाया पर सध्या और भोर में अपनी मुटली की घंटियाँ टनटनाती जो रहती हैं।

तुम तो निरे ' आगे का विचार होठों से प्रकट था। तो—यह ब्राह्मण धर्म नहीं ऐसा नहीं हो सकता। चंद्र और धर्म !—असंभव।

इधर देश रसाइय की तरह चंद्र सेंके जा रहा था। साथ था तब कहता रहता था एक हाबी होगी मेरी। यही हाबी लगती है उसकी। नहीं चंद्र समयक नहीं हो सकता। एडवेंचर के चक्कर में तो नहीं इगा कहीं? भटकाव? चंद्र को तकते हुए मुझे लगा—हाँ कभी-कभार पति असमय होता है और मित्र के जरिये असंभव काम हो सकता है

हम पढ़े लिखों ने तो निश्चय कर लिया है कि पूरे दम से अनुष्ठानों को धकेल देंगे हिंद महासागर में। अबोध अंधश्रद्धा पर टिके हैं। इगा, अब उनके प्रकाश में आने में कुछ ही दिन बचे हैं। हम तुम आधुनिक पाओगी।' वह जरा उछली हूँ! मरीचिका है मरीचिका। सामाजिक चेतना, आधुनिकता वैज्ञानिक दृष्टिकोण और वे भी तुम्हारे तरीके के सब तुम्हें अंधकूप में धकेल फेंकेंगे। यह नवीनता की चमक दमक पर पर कोई चारा भी तो नहीं एक आह भरते में वह नि:शब्द हो गयी।

कैसा है गड्ड मड्ड? मुझमें गुस्सा भी था और नासमझ पर तरस भाव भी। यह असमंजस की स्थिति लंबी ही रही। खाने की मेज से तश्तरियों की खनक सुनायी पड़ते ही वह काउच से उठी थी। मैं भी व्यवस्था में हाथ बटाने लगा था।

फलों की टोकरी छोड़ बाकी सारा मेरे लिए अजूबा था। हर एक प्लेट में मध्यम आकार का सिका ठोस बेलनाकार सामिष व्यंजन परोसा हुआ था। ट्यूब से पेस्ट सा भूरा व्यंजन वह प्रत्येक प्लेट में डाल रही थी। छोटे

छोटे यद मैंने अपने नजदीक लिए थे यह पेस्ट चटनी ही होगी समझते हुए उसे ही चखने का पहला इरादा हुआ। नमकीन तो दूर की बात, प्याज तक नही मिले थे। मुह म घुलते ही तेज तीखी जलन के साथ आँख नाक मे पानी भर आया। मेरी दशा पर दोनो एक साथ हँस पडे। गले की अल्कोहल से काफी धुलाई पर ही वह तेजाबी जलन हल्की हुई थी—'वैसा नही न पिरामिडिय बनावट की उस चीज की सी तुर्शी नही न ' इगा हँस जा रही थी। समोसे का उल्लेख है क्या ? क्या समोसा गटकने म तीन गिलास पानी पिया था इसने ! पूछू पूछ ही डालू कि कितन दिना तक दस्त जारी रहे ? नही मगर क्यो खिसियाऊ मैं

चद्र की ओर देखते हुए कहा 'यार तुम्हारी पत्नी की ता धारणा है कि हम वज्ञानिकों ने चमडा तो किसी और का ओढ रखा है अदर से हैं एकदम

क्या क्या, समझा नही।' अवश्य वह हैरान रहा होगा कहा तो तीखी जलन और कहाँ यह बेतुका।

नान सुविधा कल्याण के लिए किये गये वैज्ञानिक प्रयास मूर्खतापूण हैं।'

यह तो ऐसा नही मानती।

'अब कोई गदले नाले भवना की भीड अनुष्ठान ऐसी ही जिज्ञासाएँ लिए हो तो मैं कटिबद्ध था कि पलीता भभक उठे मुझे ता विश्वास नही आता चद्र कि इतने घन्ल चुके हो तुम। तुम—तुम मेरे आदश रहे हो चद्र, इगा-सी पत्नी और जमनी सा दश। मुझे अपने काना पर विश्वास नही होता कि भारत के जयपुर की याद मे यही कुछ । भौंचक इगा मुझ पर टकटकी बाँधे रही, बाली नही। चद्र न जरा स्थिति को टाहा और धीरे-स हसते हँसते कहा, तो यह दशन का मामला है। अपना टटा तुम्ही निबटा भाई। वह छुरी स काटन लगा। इगा न एक नजर चद्र पर डाली फिर मेरी ओर हुई— तुम्ह अपने आँकडा पर बडा घमड है साहब। तुम मापते हो और वही होता है तुम्हारा पथ प्रदशक। उसकी हँसी मे पूरी लापरवाही थी।

गले म अटका कौर मैंने द्रव्य स उतारा था। चद्र चिंतित प्रतीत हो

रहा था। उसकी आखें कह रही थी कि हम बेकार के पचडे म उलझते जा रहे हैं। लकिन मुझ चैन नही। सब कुछ तो आशा के विरुद्ध यह उस वज्ञानिक की पत्नी है जो काफी तरक्की करगा। समद्ध देश की नागरिक है सुगठित सुदर कसी सुघड हैं अगुलियाँ छुरी काटा, गुणवत्ता निया खाद्य पदाथ सलीक स खा रही है जरा भी तो ऐसा नही कि बसा लगे। क्या मेल खाता नही है यहाँ ? चद्र ने बहाना ढूंढा था या आवश्यकता थी—खाली बोतल छूत उसन पत्नी से कहा था तहखाने से कुछ बोतलें लाओगी प्रिय। वह जसे ही आँखा से ओझल हुई मैंने हिंदी भाषा म शका प्रकट की यह पुरातनपथी है या फिर हरे रामा हरे कृष्णा स सबधित ?

नही उसन आड़ उठाया।

फिर यह बहरी बातें क्या कर रही है ?"

वह चुप रहा। स्पष्ट है कि मरी जाँच पडताल सबधित कुछ है तो भी वह बताना नही चाहता। कही कोई समझौता है निर्वाह के लिए—धन्यवाद डार्विन मैंने मन ही मन कहा। दुगा बठी तो चद्र ने आधा खाया आड़ टेबल पर छोड दिया। बोतला के डाट खोलन लगा। मुझे फिर से लगा, चिकोटी काटी जाय उकसेगी तो मजा रहेगा। सही बात मानी जानी चाहिए।

मैं तो इसे पचा नही पा रहा कि जाने मान वज्ञानिक की पत्नी मानती है कि अधविश्वास बने रहने चाहिए। विकास अपने आप हाता रहेगा विज्ञान की जरूरत कहाँ। समद्ध गिर हुए को धम-माग पर चलन का उपदेश इसलिए भी ता देता रहता है कि वह उलझा रहे अपना काम सधता रहे। अपनी अगुलिया म डाट घुमात वह बोली मरे भाई जरा झाँको ता कही तुम उपकरणो की परिधि के अदर ही तो न जकड़े हो। मुझे इस पर कुछ नही कहना अपने बारे म तुमसे अच्छा भला कौन जान सकता है। कितना कुछ विस्तत है तुम्हारे चारो ओर भारत म, ताज्जुब तो इस पर है कि किस तरह पूरी आँखें मूँदे रह रहे हो तुम।

एक-एक शब्द मुझे अदर तक बेधता गया। चोट खाये मैंने पूरे दम से प्रतिघात किया—प्रगति विकास विज्ञान कोई तुम पश्चिम वाला की बपौती नही। इस नीव पर हम भी हैं पूरे स्वाभिमान के साथ। भूत

नाद (कविता सग्रह 1980)
उस अनागत का कवि हूँ (कविता सग्रह 1981)
प्रस्थान (कविता सग्रह 19 4)
गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

जाइय फुसलाने की बातें। आज आप लागा के समकक्ष हैं। गिनिये, कोई क्षेत्र ले लो—चिकित्सा, कृषिक, परमाणु ऊर्जा, उपग्रह । अपने उफान को बिखेर मैं कुर्सी की पीठ से सट गया। एक क्षण तो लगा जसे वह मेरे बचपने पर हस रही हो मगर गभीर सी ही थी वह। पारदर्शी दीवार पर आँखें गाडे। मेरे हाथ के काटे ने प्लेट को बजाया ता वह मेज पर फिसल आयी। खाली प्लट मे एक टुकडा रखा और एक खुद के लिए उठाया। चद्र की ओर देखते मेरा कधा दबाते हुए कहा, मरे पति का भैया तो बडा गुस्सल है। हा, इस बात पर तुम्हारा गुस्सा वाजिब है। माफ करना मेरा मतलब लेशमात्र भी उससे नही था।' तब वह मेरी बाह थपथपान लगी। चद्र से पूछा कैसा रहा इनका परचा आज ?' चद्र मुस्कराया था। मेरी आँखा म ताकते वह बोली, बधाई और बेहतर भविष्य के लिए शुभ-कामनाए। मगर मेरे भाई उस बात पर नो तुमन एक घर गहस्थिन को गलन समझा डाक्टर माथुर अपन घर पर भी ऐस ही बन रहते हो ? पूछना उचित तो नही खैर मैं अपना स्पष्टीकरण कह दू—अच्छे विज्ञान का अनुसरण जरूर करो मगर अकला विज्ञान ही न करो। प्रेम की अव हलना, इतना अनादर—प्राकृत नही। एक कौर तोडा, चबाकर घूट के साथ उतारा, फिर कहा पडर ने ही कुछ दिन हुए बताया था। पढाती हूँ न पहले सीखना होता है।' वह कुर्सी मे खिसकी। उसकी अँगुली सामन की पारदर्शी दीवार पर लटक रहे थर्मामीटर की ओर थी। मौसम की सूचना के लिए टगा है बाहर की आर पारे की खडी डोर साफ नजर आ रही थी। तुमन यही तो किया न कि थर्मामीटर का कुएँ म डुबोया और हम बताया कि वह पानी गर्मी का हो चाहे सर्दी का लगभग एक ही ताप मान पर है। एकदम गलत धारणा है कि कुएँ का पानी सर्दी म गुनगुना और गर्मी मे शीतल है। नासमझी म लकीर न पीटो। तुमने आगाह किया, यह रहा उपकरण खुद ही जांच लो अक्ल से काम लो।' गिलास उठा वह आराम से घूट लन लगी। मुझ लगा कि एक दोष है उसकी व्याख्या मे वह यह कि गलत समय इस कारण है कि इद्रियबाध त्रुटिपूण होता है उपकरण द्वारा जांच सही हाती है। सलाद चबा वह बाली यही तुम भ्रम पाते हो। हा सकता है नासमझी म, अनजान म अथवा अपनी

विश्वस्तता पर ऐंठे होने से । अतडियो म उपजे आनद का मजा प्राणहीन थर्मामीटर कभी नही महसूस कर सकता। मेरी झडप मनोभाव को लेकर थी जो तुमसे छूटता जा रहा है। शायद इसलिए कि अपनी वज्ञानिक श्रद्धा को थाम रखने म ही तुमने सारी ताकत लगा दी है।' वह क्षणेक ठहरी पुन कहा बुरा न मानना।

दाढा के बीच पिसान जरा धीमी हो गयी। कुछ देर के लिए मैं हक्का बक्का रह गया। सम्मोहित भाभी की पुतलिया के अधीन था। कुछ स्वा भाविक हुआ तो देखा चद्र आड् से खेल रहा है। इगा की मुस्कान का जनक दभ नही। प्राकृत है वह। सब कुछ सामान्य नैज। पसलियो के पीछे मुझे ढह चुका प्रतीत हुआ। याद आया था—मेरी पत्नी के दादाजी हमारे यहाँ ठहरे हैं। मुझसे कहा गया है कि उनके साथ जाऊँ और कुएँ स पानी खीच लाऊ—बगीची फर्लांग भर दूर है नल पाँच कदम ! पवित्र पानी की बेहूदा माँग पर मैंने पत्नी को झिडका था अवश्य, वह कड़ुआहट घुल चली थी। स्वत ही निकला था मेरे मुख से—हमारे कुछ बुजुर्ग तो अब भी कुएँ का ताजा पानी का प्रयोग ही पसद करते हैं जबकि नल के पानी की टकी छत पर भरी है।

हैं ! चकित थी वह। मिश्री घुलती गयी मेरे काना म, प्रिय भोल लाग बेशकीमती हैं न वे घटिया किस्म के हैं न ही कम सम्माननाय। बहुत मुश्किल है एस हमजोली को पाना जो फैंटेसी के लिए कुछ क्षण दे दे। कहाँ हैं भलेमानस—इस पृथ्वी पर, व ही मूल्यवान हैं। इधर के तक को ठीक कर कहूँ—दूसरा कोई नरक नही यह बडा महत्वपूण है। दूसरा सहारा है सहारा। वह शात थी पर आनन्दित।

इगा को तब निहारा तो लगा जस मेरी गठीली है। हाँ मुटली थुलथुल नहो गठीली। इगा के पजा स उठ रहे मन्द सगीत के साथ लगा कि यह उतने ऊँचे नहो जसे कि कमल का फूल। पापी का फूल है यह जिसकी कोख म खसखस पनप रही है। बीजा का निचोड देता है ठडक और घोल मान्यता।

नगर (कविता संग्रह 1980)
उस अनगर का कवि हूँ (कविता संग्रह 1981)
प्रस्थान (कविता संग्रह 1984)
, गौरनगर, सागर वि वविद्यालय सागर—470003

मैंने तौलिए से हाथ पोछे थे। इगा न कहा था कि यदि गमागर्मी मे भोजन म मजा न रहा तो उसे माफ कर दिया जाय। चद्र हस दिया था तब— 'यानी मैंने तो अच्छा ही पकाया था। मैंने निस्सकोच स्वीकारा था कि वह सब कुछ मुझ पर उपकार था। घडी दखी लौटने का समय लगा था। चद्र क पीछे पीछे चाकलेटी कार की ओर चल दिया। आकाश की आर देखा था। पश्चिम का आकाश कुछ तारे छोड दीजिये, वही चद्रमा है जो भारत म भी चादनी बरसाता है। इगा भी आ गयी थी। मैं आर इगा पिछली सीट पर बठे थे। चद्र न गाडी बढा दी थी जहा विभिन्न दशो क प्रतिनिधि ठहरे थ।

कुछ देर पहले की ही तो बात है।

इगा जानना चाहती है कि मैंने अपनी पहुच का समाचार पत्नी—कमला को भेज दिया क्या। मेरा उत्तर है कि वह फिजूल है चिटठी से कहीं पहले मैं लौट चुका हूंगा। पास से गुजर रहे वाहनो की ओर वह देखे जा रही है। न गुस्सा है, न टीस, न गलतफहमी, न ही बडबोलापन! तियक्तता लेशमात्र नही। न ही वह खुजलाहट कि ऐसा क्या है कि एक विदेशी महिला जयपुर के किसी रिक्शा वाल से शादी कर लेती है मगर ज्ञानी-मानी प्रोफेसर स बातचीत के लिए मिनट तक बरबाद नही करना चाहती। इस समय मुझे अपना सबल मुटली की याद सता रही है। हा वह बुला रही है—गठीली मुटली नही। कार म बैठे मै सलाह चाहता हूं—मुझे एक पिक्चर पोस्टकाड डाल ही देना चाहिए। वह मुस्करा दी है। अवश्य। मेरे ख्याल से तो चाह कोई पहले पहुचे फिर भी दूरी स प्रिय को लिखे शब्दो म कही बहुत कुछ होता है अथपूण।' मैं बहुत खुश हू। मन ही मन विचार लिया है कि कल एक पत्र डालूगा।

अँधियार भाग के पार होत-होते मैं कल्पना म खोया हू कि अब इस समय मेर घर की छत पर बादलो स लदा आकाश होगा। क्या कहर ढाया है इन्होंने, कुछ दिन ही तो हुए हैं। भगवान न कर नहीं वसा अवसर नही होता—जयपुर के इतिहास म ऐसा विध्वस पहली बार हुआ है।

कमला जो नाम है वही उचित है सबोधन—उधेडबुन म होगी कि आँख लग जाय। कुत्ता के भौंकने के साथ या शोर करत परनालो के साथ

वह सहम जाती होगी। न जाने क्या-क्या करती रहती है कि घरेलू संबंधी तनाव घर की चहारदीवारी मे ढीले पड जायें। उसकी परछाइ तक हसती रहती है। और जब अकेली होती होगी तब ! क्या वह मुक्त स्वच्छ पर भरे ओढे गाभीय पर या कि इगा न जिसे सूत्रबद्ध किया है अपनी अति विश्वसनीयता पर ह भगवान !—पश्चात्ताप क क्षणो मे इगा भाभी की भेट म थपथपा रहा हू। भाभी बाहर झाक रही है। उसका अधढका कान एसा प्रतीत हो रहा है माना गेंद का टुकडा है। यदि ऐसी ही स्थिति म सुकेशी कमला होती तो जरा सटीक सोचू—हाँ कान की लट जैसे कटार खीची हो मेरे निशान पर। ना-ना मुझे धमकाते नही—चिढाती मजा लेती उकसाती गिनती क रेशमी तारो का वह फन्दा •

सागर (कविता संग्रह 1950)
उस अवतार का कवि हू (कविता संग्रह 1931)
प्रस्थान (कविता संग्रह 1954)
गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

तलब

'आज स लहसन प्याज हींग इलायची पीपरमट आदि वद । भले आद मियो की भांति रहो, भले आदमिया का खान पान रखो। इलाज जरुर लम्बा है पर ठीक हो जाओगे। डॉक्टर न परचे पर निदान स्वरुप उपचार लिख परचा मरी ओर वढाया। कपाउडर जब तक दवा बनाय मैं एक ओर खडा हो गया। सिगरेट निकाल माचिस जलान लगा।

'इधर आइय। डाक्टर के स्वर म आदेश था, 'देखो होम्योपथिक इलाज करा रहे हो तो तबाकू छोड दो। यह परहेज करना होगा।'

जी ! मैंन सिगरट जेब म डाल ली।

पास पडी बच पर बठ गया और अलमारी म सजी होम्योपथी की विभिन्न पुस्तका पर छपे नाम पढ़ता रहा। सोचन लगा य कसी दवाइया है जिनका गध से वैर है। लहसन, प्याज, हींग, इलायची, पीपरमेंट न खाओ तो भी क्या फक पडता है लकिन सिगरट छाडना तो मुश्किल है—एकदम दुष्कर। डाक्टर की ओर मन-ही मन कहता हू, धुएँ के छल्ला म जादू होता है श्रीमान ! जिस आप घणा करा वाले नही समझ सकते।

जब तक दवाई ले रही हैं पाउडर, क्रीम सेंट सुगधित तल मत लगाइय। पास बठी महिला से डाक्टर कह रहा है। वह हौल से सिर हिलाती है। मैं उस दखता हू। आकपक मुखाकृति पर विरोध क मिल जुल भाव उभर आय हैं। रोग क प्रति, उपचार के प्रति या प्रसाधन की इन वस्तुआ के प्रति ? तभी कपाउडर मरा नाम पुकारता है।

दवा की पुडिया जेब म डाल सडक पर आ गया हूँ। जेब से सिगरेट

निकालता हू । माचिस सुलगाने का प्रयत्न करता हू । एक काटी टूट गयी है। सोचता हू नहीं ही पीयू। निकली सिगरेट जेब म डालने का कोई अथ समझ नही आना । पीनी तो होगी ही । अभी नहीं तो कुछ देर बाद पीयूगा। प्रत्यक चीज क प्रति वैसी ही सख्ती नही बरती जा सकती । अभी ही क्या न पी लू !

धुएँ स बना घेरा बढ जाता है मगर क्षणेक के लिए एक विशेप परिधि पर स्थिर हो गया है। उस धुधले फ्रेम म माला की रेखाकृति उभर आयी है । माला जो कभी मेरी अतरग थी ।

तुम सिगरट पी रहे हो ।

बस वैसे ही भेजा खोखला हो रहा है ।

छी फक दो ! बीमारी स छुटकारा पाने के लिए इस त्यागना होगा ।

माला ! यह ससार त्यागियो क लिए ही है ?

हाथ स सिगरेट गिरने पर ज्ञात हुआ कि मैं साइकिल स टकरा गया हू । चालाक विनम्रता दिखाता है सारी । मैं कुछ भी नहीं कह पाता यद्यपि दोष मेरा ही था ।

धूप की एक पतली लकीर किवाड क नुकील सिरे का स्पश कर फश पर एक स्पष्ट छाया की अपेक्षा अधकार एव प्रकाश की समातर कई पक्तियाँ बना रही है ।

लिकोडमा कष्टरहित फिर भी मनहूस बीमारी है । दिन प्रतिदिन बढ़ता सफेद भूरे दाग उस दिन अपनी पारिवारिक विवशता जाहिर करने माला को पहाड पर ल गया था । हम लौट रहे थ अँधेरा हो गया था । तब माला न कहा था रात्रि म ऊचाई स जगमगाते इस शहर को देखने पर लगता है जैसे कोढ हो गया है ।

मुझे कोढ़ नही है यह तो चमरोग है जिसका होम्योपथी म प्रभावी उपचार है । माला न कहा था फिर भी इस शहर स सहानुभूति है ।

तन भारी है मन उदास है, स्वभाव चिडचिडा है । समझ नही आता

१ नाटक (नाटक संग्रह 1970)
उस अनहद का बंदि हू (कविता संग्रह 1951)
अस्थान (कविता संग्रह 1974)
0 मौरागर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

क्या करूँ ? विचार शून्य कमरे म या बरामदे मे टहलने लगता हूँ। एक विकल्प का आरभ होना कितना सहज है पर उसका निभाना कितना कष्ट प्र" । पत्नी देर से दख रही है। वह पास आती है 'कुछ विशेष तकलीफ है क्या, दवाई बीत चुकी हागी, चलो ले आयें।'

यह रास्ता कुछ अधिक ही लम्बा लग रहा है आज। मेरा मानसिक सूनापन प्रकटत तन से चिपका है। ऐसी ही दशा एक बार पहले हुई थी

'ता कितनी सिगरेटें फूकी अब तक।' डाक्टर के पूछन का अभ्यस्त ढग हा शायद।

जी एक उसकी भी एक-दो फूक।'

प्लीज छाड दीजिय। तबाक के उत्तरप्रभाव मालूम नही हैं शायद आपको। जनाब ! कुछ अरस मे ही इद्रिय-बोध नही सा हो जायगा व्यव हार मूखतापूण हो जायगा, प्रवत्ति निराशाजनक, कोई हथौडा मार रहा है सिर मे वसा लगेगा। दिन म आलस, शाम को धुधला दिखेगा और रात म नीद गायब। बताऊ आपको मकडा रोगिया से ज्ञात प्रमाणित रोग लक्षण।' एक साथ वह कोई पुस्तक ढूढने लगता है।

मैं चुप था।

काई और शिकायत ?

पट गडबड है।

'वह तो एक-दो दिन रहगा। अपन आप ठीक हो जायगा। अब आप कसम ल सिगरेट छोड दीजिय और दखिय इन बारीक गालिया का प्रभाव।' परचे पर कुछ लिख व पत्नी की ओर दखत हैं और हसत हुए कहते हैं, दर-असल जिनकी पत्नियाँ कमजोर होती है उन पतियो को ही गदे शौक पालने की छूट हाती है।

प"नी हँसती नही वह गभीर हो नाखून से फश कुरदन लगती है।

डाक्टर ने अवश्य ही विचारणीय बात कह दी है। मेरी पत्नी सच मुच कमजोर है ? उसने ता कभी सिगरट स घृणा प्रकट नही की। तो मैं स्वय ही अपराध भावना ग्रस्त हो माला स अलग हो गया यानी यानी कि

राह चलत पत्नी क स्वर मे अतिरिक्त मिठास है डॉक्टर का कहा

मान लेना चाहिए आपको। पास ही गोविंददेवजी का मन्दिर है। हाथ-पानी ले लीजिये।

'यह मरी आवश्यकता तुम्हारी समझ म नहीं आ सकती। तुम क्या जानो एक हुडक उठती है जिसकी शांति वह पाकर ही होती है।' कुछ आवेश म मैं कह गया पर नियन्त्रित हो जाता हूँ 'आज दिन भर अपनी परीक्षा लूगा कि सौगध मैं निभा भी पाऊगा या नहीं।

लच स पहले ही बहुत सारे पत्र निकाल दिय ह।

सब लोग कटीन की ओर चल दिय है। नया पृष्ठ चढान की इच्छा नही होती। एक गहरी उदासी क साथ मरे नत्र सजल हो जाते हैं। जीभ तल चुभती मीठी गोलिया स मुह का स्वाद ही बिगड गया है। अब वह कसैलापन चाहती है। वसे ही दराज खोलता हूँ माला का चित्र और माचिस खिच जाती है। एक गोली दाँता बीच दबा अँगुली क कान स हिलाता हूँ। वह टूट जाती है। रद्दी की टोकरी म पडा सिगरट का पकट उठाता हूँ। कागज को सूघता हूँ माला को देखता हूँ। अभ्यस्त पाँव एक दिशा म उठ रहे हैं। वे रक पचास पस निकल पड हैं—पान वाल की ओर बढाता हू। वह पान और सिगरट बढाता है। लार स फिल्टर गीला हो रहा है। माचिस की लौ न उधेड-बुन म शृंखलित विचारा को जला दिया है। एक लम्बा कश खीचता हू, शिरा धमनियाँ सजीव हो गयी हैं। रेडियो पर पुरानी फिल्म का कोई बढ़िया गीत आ रहा है। मैं टहलन लगता हूँ।

पत्नी विशष प्रसन्न है, कोई सुसमाचार होगा शायद। वह जानती है कि मैं चाय म कितनी चीनी पीता हूँ। फिर भी पूछती है आधा चम्मच और डाल दू। ज्याद श्रम करना पडता है न अधिक कलोरी चाहिए।

मैं कुछ नही कहता। मज पर किसी पत्रिका का नया अक है शायद मैं वसे ही पलटता हू। मुझे चाय थमा वह पत्रिका ले लेती है और कोई विशेष पृष्ठ ढूँढती है, 'यह देखो—धूम्रपान पर नग्न प्रहार—तुम्हार काम

नाद (कविता संग्रह 19७0)
उस अगरबत्ती का कवि हूँ (कविता संग्रह 1931)
प्रस्थान (कविता संग्रह 19७४)
लोकनगर ... विश्वविद्यालय, सागर—470003

का निबंध है। लिखा है—ब्रितानी पत्रों में धूम्रपान के विरुद्ध ऐसे विज्ञापन छाप जा रहे हैं जिसमें नग्न स्त्री की आकृति बनी होती है और जिसकी सुर्खी होती है—क्या आपका अपने बच्चे को धूम्रपान के लिए बाध्य करना उचित है ।'

मैं कुछ समझ नहीं पाता प्रश्नसूचक नजर से उसकी ओर देखता हूं।

यदि गर्भवती माताएँ धूम्रपान छोड दें तो प्रतिवर्ष ब्रिटेन में 1500 नवजात शिशुओं की जान बच सकती है।

यह तो तुम्हारे लिए है।

भारतीय स्त्रियाँ धूम्रपान करती हैं ?'

तो भी इससे कई गुना अधिक नवजात शिशु यम देवता को प्यारे हो जाते हैं।'

तुम तो हर बात पर तर्क करने लगते हो जी।' वह चर्चा खत्म कर कहती है एक खत है आपका। वह चिट्ठी बढाती है।

मैं पलटकर देखता हूँ माला की है। मगर अभी इच्छा समाचार पढने की हो रही है। पत्र को मेज पर रख पत्रिका उठा लेता हूँ। पढ़ते-पढ़ते एक अंश पर नजर अटक जाती है। दुबारा पढता हूँ ऐसे समय स्वयं को रोकना जब यह आदत सबसे अधिक लुत्फ देती है।' हां, यह हुई न कोई बात मैं मन को ठोकता हूँ। मुझमें पुन चेतना लौट आती है। मगर उठता विचार मुझे पुन कमजोर बना देता है—ऐसे समय में कैसे रोका जाये जब शरीर थका हो और दिमाग में तनाव हो ? सहसा माला का पत्र उठा कौन से फाड पढ़ने लगता हूँ। •
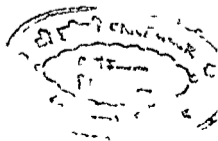
बच था ?

काका या के यहाँ जा रहे हैं न। बच्चा कुछ-कुछ जानते हुए भी पूछता है।

हाँ। बाप अविचलित सा ही कहता है।

पानी भरा लोटा बढ़ाते हुए माँ कहती है पी ले रवि बादी हो जायेगी पेट दुखेगा।

रवि को प्यास नहीं है फिर भी आकर्षण है विभिन्न स्वादों के पानी का वह कुछ घूंट पीता है।

वा तो मर गए न। कुछ सुन-समझे शब्द वह दोहराता है। सम्भवत कुछ और स्पष्टीकरण वह चाहता है।

हाँ

रवि को यह जान संतोष नहीं है वह खिड़की से बाहर झाँकता है। कोई नयी चीज नजर न आने पर पिता की ओर मुड़ जाता है अपन कहाँ रहेंगे ?

वहीं घर है।

घर से तो अपन ताँगे में आये हैं।

इस तर्क से पिता के चेहरे पर कोई प्रतिक्रिया नहीं होती। माँ समझाते हुए कहती है वह तो किराये का है अपन रहने के पैसे देते हैं न।'

रवि को याद है उसकी माँ तार्ईजी को देने के लिए रुपये प्रायः उसी के हाथ भेजती है।

वहाँ पैसे नहीं देंगे ?

हाँ। माँ उसे गोद में खींच लेती है अब सो जा।'

पर वह माँ से छूट बाहर झाँकने लगता है। मुड़ता-सा इंजन दिखलायी देता है काला-काला, बहुत बड़ा। हाथी भी ऐसा ही होता है क्या। वह सोचता है।

कच्ची सड़क जितनी ऊबड़-खाबड़ होती है उतनी ही है। कहीं कहीं गड्ढे कुछ अधिक बड़े हैं। बच्चे को उन्हें लाँघने में आनंद आ रहा है। मुंह नोचा किये मणि चल रहा है। टीला की कोई आकृति तो होती है गड्ढे तो बिलकुल बेडौल। वह अब अपेक्षाकृत खुले में है। हवा के साथ बाप-बेटे की

चोन्चियाँ उडी जा रही हैं। चौराहे पर बच्चा पूछता है 'अब कितना दूर है ?' माँ उसे चुप होने का इशारा करती है। फलस्वरूप आगे आगे भागने वाला रवि बेमन से पीछे हो लेता है।

ताले मे चाबी घुमाते ही मणि का दिल धडका। पता नही कितना समय हो गया अपने ही घर मे बिना आये। चाबी घुमाने मे कुछ कठिनाई होती है। भीतर लगे जग के उखडने की हल्की सी आवाज होती है। वह साँकल हटा किवाड अदर की ओर धकेलता है। चबूतरे से लगा नीम का पेड पत्तियाँ गिराने मे व्यस्त है। एक एक कर कबूतर उड जाते हैं।

उधर आले मे पडी माला और रेत घडी पर मणि की दृष्टि ठहर जाती है। नियति इन दोनो की है स्थिर रहना। कुछ क्षणो के लिए मनके अगुलियो के बीच स्वत आते जाते रहते हैं। वसे ही समय के अल्पाश के लिए ही रेत एक पात्र से दूसरे पात्र मे गिरती है और प्रक्रिया स्थगित हो जाती है जब तक कि कोई उलट न दे। आर्द्रता और उष्णता की तीव्रता लिए हवा का एक झोंका मणि को लगता है और उसका ध्यान बँट जाता है।

बच्चा रवि निमोलियाँ इकट्ठी करने मे व्यस्त हो जाता है। कुछ पकी, कुछ कच्ची कुछ सूखी हुई। झाडते-बुहारते पत्नी की हड्डियाँ बोल गयी होगी और वह कचरे का एक ढेर फेंक दूसरा एकत्रित करने म व्यस्त हो जाती है। मणि को लगता है मुझे भी कुछ करना ही चाहिए पर अतत वह निढाल-सा चबूतरे पर पड जाता है।

कसी विडबना है जिस व्यक्ति को किसी का मोह नही रहा जब तक जीवित रहा उसने अपने साथ औरो की भी अवहेलना की, आज न जाने कहाँ-कहाँ स लोग एकत्रित हो रहे हैं उसके लिए। अनिवाय लोक दिखावा या वयक्तिकता।

मणि अभी बाजार स लौटा है पर पत्नी की फहरिस्त खत्म होने का नाम ही नही लेती। आटा घी मिच मसाला लाया कि जग लगे बतनो को माँजने के लिए इमली लेने जाना है। एडियाँ घिस रही हैं कमर दद कर रही है। नया घर बसाने की अपेक्षा पुराने घर को सहेजना अधिक दुरूह है। लेकिन आगे-पीछे अपना घर ही बसाना होता है। कुछ मेहमान भी आ गये हैं उनके लिए चाय भी बनेगी। उफ ! अच्छा होता औरो की

भी झोला उठा सीधा मांगने चल पडता सब कुछ आसानी से मिल जाता। वह मुह बिगाड कहता है हुह।' और एक नि श्वास छोड देता है।

कित्ते बाल-बच्चे हैं मणि महाराज ?' परचूनिया चाय का पुडा बढाते हुए पूछता है। अपने लिए महाराज सबोधन सुन मणि निमिष भर के लिए परचूनिये की ओर देखता है और हौले से कहता है एक।

भाग्यवान हो मोती महाराज के तुम एक तुम्हारे भी एक।' परचूनिया हँसता-सा कहता है। मणि कुछ और दीगर वस्तुए यत्रवत खरीदता रहता है।

बैठक आज ही होगी न ? बचे हुए पैसे बढाते हुए परचूनिया पूछता है। हाँ थला उठाते हुए मणि कहता है।

दाँये पान वाला है। धुली मिला लोढी दीवार से लगा रखी है। पास पडे मटके पर गीली लुगदी कपडे से ढँकी चिपकी है। कोई ग्राहक बीस पत्ते बढ़ाकर भग खरीदता है। ग्राहक अँगुलियो से खेलता हुआ उसे वसी आकृति देता है जिसका क्षेत्रफल अल्पतम हो। लोटा बढ़ाते हुए पान वाला कहता है 'पहले मुह म घोल लेना फिर पेट म लेना।' मणि पर नजर पडते ही ग्राहक से वह और कुछ न कह उसकी ओर देखता है। और पूछता है अरे मणि आओ तुम तो मडली म शामिल हो न महाराज। लोगे ? रुका हुआ मणि आगे बढ़ने लगता है। पान वाला ग्राहक से कहता है इसका बाप तो बिना नशा किये चौबीसो घटे धुत्त रहता था साहब। और वह कुछ सोचते हुए चुप हो जाता है।

सुनी अनसुनी कर वह आगे बढ़ता है। एक कुत्ता पीछे लग गया है। अपनी खुरदरी जीभ मणि की नगी पिडलियो पर फेर देता है। कुत्ता खुद पीछे हट जाता है कान फडफडा कर साथ चलने लगता है।

मामा तथा कुछ लोग आ चुके हैं। कौए मुडेर पर बठे काँव-काँव कर रहे हैं। भाई आ रहा होगा—पत्नी—मणि की पत्नी सोचती है। रवि पास आ मणि से पूछता है काका गुड लाये ? वह कुछ नहीं कहता। लाया होता तो एक-दो डली मुह म घोल देता—मणि सोचता है।

मामा पूछते हैं 'गाया को चारा और कबूतरो को दाना डलवा दिया मणि ? मणि चुप है। वह मुह म इकट्ठा हुआ थूक निगलता है।

नार (कविता संग्रह 19 0)
उस अनहद का कवि हूं (कविता संग्रह 1981)
प्रस्थान (कविता संग्रह 1974)
गोरनर, [illegible] वि वविद्यालय सागर—470003

'कल से गीता, रामायण का पाठ होगा।'

'हाँ' वस्तुत मणि को भान नही कि क्या कहा। गाल पर एक मक्खी बैठी है जिसे वह उड़ाता है। एक चक्कर लगा वह कंधे पर बैठ जाती है तो वह कंधा झटक देता है।

'बैठक के लिए दरी वगैरह है न ?'

कुछ अबोध से भाव लिए मणि एक बार मामा की ओर देखता है फिर दृष्टि नीचे गड़ाये रहता है। चुपचाप चुप्पी की साधना मे तल्लीन। मामा को झल्लाहट होती है। बहरा हो गया है ? अपने आवेश को नियंत्रित कर कहते हैं मणि तुम मेरी बात पर कान ही नही देते। मेरी ओर तो देखो तेरी मा का क्रिया-कर्म किया, तुझे पाला-पोसा। जितना चाहिए उतना कमा ही लेते हो तुम। ऐसा सोचना अधम है कि बाप ने तुम्हारे लिए कुछ नही किया इस-लिए तुम क्या करो। तुम्हारा भी बच्चा है और जानते हो वैसे ही वह नही बढ़ रहा है। प्रतिक्रिया देखने को रुक वे पुन कहते हैं 'बेटा वे जीवन भर भटकते रहे उनकी आत्मा भी भटकेगी यदि '

मणि को लग रहा है कि उसका मेदा खाली होता जा रहा है। वह भाव शून्य दृष्टि से उधर खड़े रवि की ओर देखता है—कमर से नीचे नेकर को एक हाथ से सँभालते हुए लटक रही किसी पकी निमोली पर नजर गड़ाये हुए। हर साँस पर उसके नाक में अटका रेंट ऊपर नीचे होता है जिसे वह बाहर निकालने का उत्साह नही दिखाता। मणि अपने स्थान से उठ जाता है। लघुशंका से निवृत्त होकर वह कोने मे पड़ी एक खटिया पर लेट जाता है। करीब से गुजरती उसकी पत्नी पूछती है 'क्यों तबीयत तो ठीक है न ? वह कुछ भी नही कहता। पत्नी को आशा भी नही है कि वह कुछ कहेगा मेहमान आये हैं और तुम पड़े हो उठते क्या नही ? कृत्रिम गुस्सा दिखा वह कहती है।

द्वार पर ताँगा खड़ा है। कोई आया है। बच्चे चारों ओर घूम घूमकर शोर मचा रहे हैं। रवि कहता है काका वो जो आये हैं न खुल्ले पैसे मंगा रहे हैं। एक चुहिया कहीं से आ उस पर फुदकती है। वह निश्चल रहता है। अँगुली पकड़ माँ बच्चे को साथ ले जाती है और उसे कुछ रेजगारी दे देती है।

मामा हाथ हिलाते हुए पूछते हैं, 'तुम्हारी तबीयत तो ठीक है न ? बताओ तो सही ?'

उठने का उपक्रम करते वह कहता है ठीक है बस जी नहीं करता '

मणि के साले को देख मामा द्वार की ओर बढ़ जाते हैं। अभिवादन और सामान्य शिष्टाचार की बातों के बीच यह बताता है कि उसका कारोबार अच्छा चल रहा है। साला अपने दृष्टिकोण से मणि की दशा के बारे में सोचता है। कुछ रुककर कहता है, कई सालों से राखी के रुपये बाकी हैं उन्हें और अधिक चाहिए तो दे भी सकता हूं।' स्वर काफी ऊंचा था मणि ने सुन ही लिया होगा मामा सोचते हैं।

लेकिन मणि का मस्तिष्क कहीं और ही व्यस्त है। उस क्षण को क्या कहा जाये जब कहीं कोई छिपी चाह यकायक ऊपर उठ जाती है। एक अनचाहा व्यक्तित्व उभरने लगता है। अपने आपमें हो रहे परिवर्तन से अभिभूत मणि परवश होता जा रहा है जो मोती महाराज की संतान मणि के लिए होता आ रहा था वह अनिच्छित था

उसका साला अपने कहे पर कोई प्रतिक्रिया न देख आश्चर्यचकित है। कहीं उन्हें सदमा तो नहीं पहुंचा। वह आगे बढ़ अपने बहनोई की पीठ थपथपा ढाढ़स के स्वर में कहता है 'धीरज रखो मणिजी उनकी उम्र पूरी हो गयी थी।' लेकिन मणि पर फिर भी कोई प्रभाव नहीं होता।

निर्मल आकाश में शनैः शनैः बढ़ रही तारों की उपस्थिति के साथ ही अड़ोसी पड़ोसी एकत्रित होने लगे हैं। आज मणि का प्रिय भोजन बना है—खीचड़ी और कढ़ी। परोसी थाली दूर से पड़ी है पर वह छूता नहीं। रवि किसी के साथ—बीड़ी माचिस लेने गया है। बैठक के लिए बिछी दरी पर बहुत से लोग बैठे हैं लेकिन वह नीम तले चबूतरे पर पालथी लगाये अकेला शांत बैठा है। चौक वाला हलवाई साथ बैठे लोगों से कुछ मशविरा कर मणि के पास आ जाता है। हाथ जोड़कर कहता है 'मणिशंकर जी उधर चलो आपसे कुछ पूछना है। मणि पर कुछ असर नहीं होता। एकसी उदासी से वह पांव झाड़ उठता है। हलवाई साथ ही बढ़ता है। लेकिन मणि द्वार तक पहुंच गया है कुछ अस्पष्ट-सा कहता हुआ नहीं री सड़ी।

कोई समझ नहीं पा रहा है किसको एसी-की-तैसी। •

ईश्वर (कविता संग्रह 19[illegible]0)
उस जनपद का कवि हूँ (कविता संग्रह 1981)
अरघान (कविता संग्रह 1984)
[illegible] सागर विश्वविद्यालय सागर—470003

सिद्धि

साफ पानी आसमान का गदला करने के लिए चूने के भट्टा से धुआं ऊपर उठ रहा है। पत्थर तोडते स्वर। ट्रको की बेसुरी आवाज। इधर-उधर मल मूत्र त्यागते स्त्री-पुरुष ही काफी हैं सतह को प्रदूषित करन के लिए। लुगी की सलवटें ठीक कर नाक भी सिकोडती एक छात्रा सोचने लगती है कितने गदे हैं य लाग। कसी विचित्र विवशता है कि नसर्गिक सौंदर्य की छटा देखने से पूर्व प्रकृति का फूहडपन भी देखना होता है। अब मदान का विस्तार है। धुए की सतरें पीछे छूट गयी है। दल दल, जगली घास। मच्छर मक्खी से ढँके पोखर, रभाती भसें, और बाजरा मक्ई के खेत। अपने आधार स्तभ से चिपके, बडी बडी मूछो वाल पुष्ट भुट्टे। अहा भुट्टे! छात्रा उल्लसित हो कहती है। पास बठा छात्र सुन लेता है और मन-ही मन कहता है कपडे पहनेगी आधुनिकतम स्वाद है भुट्टा की। भीतर ही भीतर उपहास्यास्पद भाव उठते हैं। वह लडकी तनिक भी आकृष्ट नही करती। वह कोसने लगता है। ऊपर चढ़े व्यक्ति अपनी भडास निकालते हैं और इधर छात्र काल रूखा सूखा हो रहा है। पाठ्यक्रम सुधार के नाम पर प्रति वर्ष कुछ जोड देते है। विषय निरतर नीरस बनता जा रहा है। किसी अच्छी सूरत का दिमाग खराब थाडे ही होगा कि इधर पढने जाये।

अब तक उकताये हुए पीछे बठे छात्रा न लगता है कुछ निश्चय कर लिया है। कुछ देर फुसफुसाहट होती है फिर एक स्वर कहता है चमचो का!" नाश हो!!" सामूहिक स्वर म पिछली दो सीटें मुखर हो उठती हैं। आगे बठे छात्र भी प्रत्युत्तर के लिए तयार हैं। पीछे वाले। हाय-

मामा हाथ हिलाते हुए पूछते हैं, 'तुम्हारी तबीयत तो ठीक है न ? बताओ तो सही ?'

उठने का उपक्रम करते वह कहता है ठीक है बस जी नहीं करता '

मणि के साले को देख मामा द्वार की ओर बढ़ जाते हैं। अभिवादन और सामान्य शिष्टाचार की बातों के बीच वह बताता है कि उसका कारोबार अच्छा चल रहा है। साला अपने दृष्टिकोण से मणि की दशा के बारे में सोचता है। कुछ रुककर कहता है, कई सालों से राखी के रुपये बाकी हैं उन्हें और अधिक चाहिए तो दे भी सकता हूं।' स्वर काफी ऊँचा था मणि ने सुन ही लिया होगा मामा सोचते हैं।

लेकिन मणि का मस्तिष्क कहीं और ही व्यस्त है। उस क्षण को क्या कहा जाय जब कहीं कोई छिपी चाह यकायक ऊपर उठ जाती है। एक अनचाहा व्यक्तित्व उभरने लगता है। अपने आपमें हो रहे परिवर्तन से अभिभूत मणि परवश होता जा रहा है जो मोती महाराज की संतान मणि के लिए होता आ रहा था वह अनिच्छित था

उसका साला अपने कहे पर कोई प्रतिक्रिया न देख आश्चर्यचकित है। कहीं उन्हें सदमा तो नहीं पहुंचा। वह आगे बढ़ अपने बहनोई की पीठ थपथपा ढाढ़स के स्वर में कहता है, धीरज रखो मणिजी उनकी उम्र पूरी हो गयी थी।' लेकिन मणि पर फिर भी कोई प्रभाव नहीं होता।

निर्मल आकाश में शनै शनै बढ़ रही तारों की उपस्थिति के साथ ही अड़ोसी-पड़ोसी एकत्रित होने लगे हैं। आज मणि का प्रिय भोजन बना है— खीचड़ी और कढ़ी। परोसी थाली देर से पड़ी है पर वह छूता नहीं। रवि किसी के साथ—बीड़ी माचिस लेने गया है। बैठक के लिए बिछी दरी पर बहुत से लोग बैठे हैं लेकिन वह नीम तले चबूतरे पर पालथी लगाये अकेला शांत बैठा है। चौक वाला हलवाई साथ बैठे लोगों से कुछ मशविरा कर मणि के पास आ जाता है। हाथ जोड़कर कहता है 'मणिशंकर जी उधर चलो आपसे कुछ पूछना है।' मणि पर कुछ असर नहीं होता। एक सधी उदासी से वह पाँव खींचकर उठता है। हलवाई साथ ही बढ़ता है। लेकिन मणि द्वार तक पहुंच गया है कुछ अस्पष्ट-सा कहता हुआ ऐसी की तैसी।'

कोई समझ नहीं पा रहा है किसकी ऐसी-की-तैसी। ●

उस जनपद का कवि हूं (कविता संग्रह 1981)
अरण्यानी (कविता संग्रह 1974)
सौगरकर सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

सिद्धि

साफ पीन आसमान का गदला करन के लिए चून के भटटा स धुआं ऊपर उठ रहा है। पत्यर तोडत स्वर। ट्रकों की बेसुरी आवाज। इधर उधर मल मूत्र त्यागते स्त्री-पुरुष ही काफी हैं सतह को प्रदूषित करन क लिए। लुगी की सलवटें ठीक कर नाक भौं सिकोडती एक छात्रा सोचन लगती है कितने गद हैं य लोग। कसी विचित्र विवशता है कि नसर्गिक सौंदय की छटा देखन स पूव प्रकृति का फूहडपन भी देखना होता है। अब मदान का विस्तार है। धुएं की सतरें पीछे छूट गयी हैं। दल दल, जगली घास। मच्छर मक्खी से ढँके पोखर रभाती भसें, आर बाजरा, मक्ई के खेत। अपन आधार स्तभ स चिपके, बडी बडी मूछो वाल पुष्ट भुटटे। अहा भुटटे! छात्रा उल्लसित हो कहती है। पास बठा छात्र सुन लेता है और मन-ही-मन कहता है कपडे पहनेगी आधुनिकतम स्वाद्स है भुटटा की। भीतर-ही भीतर उपहास्यास्पद भाव उठत हैं। वह लडकी तनिक भी आकृष्ट नही करती। वह कोसने लगता है। ऊपर चढ़ व्यक्ति अपनी भडास निकालत हैं और इधर छात्र-काल रूखा सूखा हो रहा है। पाठ्यक्रम सुधार क नाम पर प्रति वष कुछ जाड दत है। विषय निरतर नीरस बनता जा रहा है। किसी अच्छी सूरत का दिमाग खराब थोडे ही होगा कि इधर पढने आय।

अब तक उत्ताव हुए पीछे बैठे छात्रा ने लगता है कुछ निश्चय कर लिया है। कुछ दर फुसफुसाहट होती है फिर एक स्वर कहता है चमचो का!' नाश हो!!' सामूहिक स्वर म पिछली दो सीट मुखर हो उठती हैं। आग बठे छात्र भी प्रत्युत्तर के लिए तयार हैं। पीछे वाले। हाय

हाय ।।'

डॉ० मुकेश के चेहरे पर स्मित मुस्कान खेलने लगती है। प्यारो ! चमचा का नाश कभी नही हो सकता है। वह भस्मासुर के कडे से भी बढ कर है जो स्वय को बचाते हुए औरो को नष्ट करता है। चमचे इद गिद हैं रहेंगे। पदासीन व्यक्ति प्रसन्न रहे। सब अपनी तिकडम भिडाते हैं। उन्हें लगा यही कोई कूटनीतिक चाल तो नही है यह। कोई बहाना बना मुझे टाल देना चाहिए था लडको के साथ आना। निकट भविष्य मे ही साक्षात्कार की सभावना है। एक दिन भी दूर रहना हानिकारक है। छात्रा में पॉपुलर होकर क्या मिल जायगा ? अधिक-से-अधिक कक्षा म शरारत कम होगी। खैर ! पत्नी तो वहाँ गयी ही होगी। मैंने उसे कह दिया था

पानी के आधिक्य ने स्थान को रमणीय तथा प्रीतिकर बना दिया है। उन अकातिमय मुखमडला पर, जिनका पूव अबाध, वतमान बोझिल, भविष्य लक्ष्यहीन है प्रसन्नता की लहर दौड गयी। उपकरणो के सग रहते जो निष्क्रिय बन गये हैं उनम प्राण अभी शेष हैं।

'सर ! देखिये। पेड-पत्ते मुस्करा रहे हैं।' एक ठिगना मोटा छात्र जिसे हरियाली भा गयी है कहता है।

सुस्ती मिटाने की दवा बाबूजी। दुनिया म अपनी तरह की एक ही बेजोड। जबान का माल है। दवा का कुछ भी नही।

बकरियाँ चरागाह देख बिखर गयी हैं। ग्वाला टोह के लिए इधर-उधर देखता रहा।

डाक्टर मुकेश को सिगरेट की तलब हो रही है। एकमात्र मली फटी मुसी चडडी पहन उस व्यक्ति म उनकी कोई रुचि नही है। सिगरेट की तलाश म व आगे बढ़ते हैं।

राह के पास खुजलाता हुआ वह व्यक्ति साथ हो लेता है। गम-गम पकौडी बनाऊँ साहब ?

माफ कर भाई।'

कोने पर बटे पनवाडी स सिगरेट ले धुएँ के छल्ले बनाते वे उधर चल देते हैं जहाँ भोजन की व्यवस्था हो रही है। राह मे सिंदूर स लिपटे रग बिरगे धातु-पत्रा का परिधान पहने मूर्ति पर नजर पडत ही हौल-स शीश

k.

उस अतरर का कवि (कविता सग्रह 1981)
अरण्य (कविता सग्रह 19°4)
गोरखपुर विश्वविद्यालय, म र—4,000)

झुकाते हैं। मन-ही-मन गुनगुनाते हैं—स्तुतिगान।

सर। इन लौंडा के साथ कहाँ घसीट लाये ? न सामान का अता पता, न मन्द के लिए कोई आदमी।' रसोइये की शिकायत बाजिब है।

छात्र प्रतिनिधि और प्रयोगशाला परिचायक बरतन आदि लेने गये हैं। व भी उधर चल दत हैं। परचूनिया जो होटल भी चल रहा है, न इकार कर दिया। उधर बडी म बडी सी कढाई पडी है पर वह नही दता। गम हुए तेल म मगोडियाँ डाल कहता है, उस ताज होटल पर चले जाओ वह दे देगा।'

'होत हुए भी तुम मना कर रह हो तो वह कैंस द देगा ?' छात्र प्रतिनिधि माधव निराश स्वर म पूछता है।

अजी वह नाई धधा करन बठा है। साला इधर की उधर करेगा दिन भर। छुट्टी के दिन पाच सात चाय बेच डाली तो कोई व्यापारी हुआ। बरसाती मढक है वह।'

ताज होटल एक टूटा झापडा। एक मूज की खटिया। पत्थर की लबी पटिका। बिखरे एल्युमिनियम के बरतन। चूल्हे म बुझी-बुझी आग। चिलम फूकता होटल वाला नग धडग।

'बाबा कढ़ाइ द दो।' प्रयोगशाला परिचायक मोहन कहता है।

'ना भाइ। यह मेरी रोजी रोटी है।

हम भूल आये। पूड़ियाँ निकालनी हैं। किराया दे देंगे।' माधव कहता है।

सपाट जबडा से चिलम की साफी लगा वह कुछ समय तक कश खीचता है। कुछ सोचता है, 'एक बजा है। ल जाओ। पर मुझे पाँच बज चाहिए। किराय म दो रुपय लूगा। हाँ।'

'झारा-परात भी चाहिए।

अब जब मटका दन पर राजी हो गया तो ढक्कन, गिलाम भी दूँगा। पर एड्वास लूगा दस रुपय। तुम छोकरा का क्या भरोसा। हाँ।

यह तो ज्यादा है। कुल माल सात का होगा और तुम दस एड्वास माँग रह हो। मोहन को जसा लगा कह दिया।

उसन एक बार रोष भरी दृष्टि स देखा। बरतन उठा एक ओर पटक

हाय !!'

डॉ० मुकेश के चेहरे पर स्मित मुस्कान खेलने लगती है। प्यारो ! चमचा का नाश कभी नहीं हो सकता है। वह भस्मासुर के कद से भी बढ़ कर है जो स्वय को बचाते हुए औरो को नष्ट करता है। चमचे इद गिद हैं रहगे। पदासीन व्यक्ति प्रसन्न रहे। सब अपनी तिकडम भिडाते हैं। उन्हें लगा कही कोई कूटनीतिक चाल तो नहीं है यह। कोई बहाना बना मुझे टाल देना चाहिए या लडका के साथ आना। निकट भविष्य म ही साक्षात्कार की सभावना है। एक दिन भी दूर रहना हानिकारक है। छात्रा म पापुलर होकर क्या मिल जायगा ? अधिक-से-अधिक कक्षा म शरारत कम होगी। खर ! पत्नी तो वहाँ गयी ही होगी। मैंन उसे कह दिया था

पानी के आधिक्य ने स्थान को रमणीय तथा प्रीतिकर बना न्या है। उन अकातिमय मुखमडला पर जिनका पूव अबाध, वतमान बोझिल भविष्य लक्ष्यहीन है प्रसन्नता की लहर दौड गयी। उपकरणो के सग रहते जो निष्क्रिय बन गय हैं उनम प्राण अभी शेष हैं।

'सर ! देखिये। पेड-पत्ते मुस्करा रहे हैं।' एक ठिगना मोटा छात्र जिसे हरियाली भा गयी है कहता है।

सुस्ती मिटाने की दवा, बाबूजी। दुनिया म अपनी तरह की एक ही बेजाड। जवान का मोल है। दवा का कुछ भी नहीं।'

बकरियाँ चरागाह देख बिखर गयी हैं। ग्वाला टोह के लिए इधर उधर देखता रहा।

डॉक्टर मुकेश को सिगरेट की तलब हो रही है। एकमात्र मली, फटी, मुची चडडी पहन उस व्यक्ति म उनकी कोई रुचि नहीं है। सिगरेट की तलाश म वे आगे बढते हैं।

रान के पास खुजलाता हुआ वह व्यक्ति साथ हो लेता है। गम गम पकौडी बनाऊ साहब ?

माफ कर भाई।

कोने पर बठे पनवाडी से सिगरेट ले धुए के छल्ले बनाते वे उधर चल देते हैं जहाँ भोजन की व्यवस्था हो रही है। राह मे सिंदूर से चिपके रग बिरंगे धातु पत्रो का परिधान पहने मूर्ति पर नजर पडत ही हौले से शीश

झुकाते हैं। मन-ही-मन गुनगुनाते हैं—स्तुतिगान।

'सर। इन लौडा के साथ कहाँ घसीट लाये ? न सामान का अता पता, न मदद क लिए कोई आदमी।' रसोइये की शिकायत बाजिब है।

छात्र प्रतिनिधि और प्रयोगशाला परिचायक बरतन आदि लेने गये हैं। व भी उधर चल दते हैं। परचूनिया जो होटल भी चल रहा है, ने इकार कर दिया। उधर भडी मे बडी-सी कडाई पडी है पर वह नही देता। गम हुए तेल म मगोडियाँ डाल कहता है, उस ताज होटल पर चले जाओ वह दे देगा।'

'होते हुए भी तुम मना कर रह हो तो वह कैस दे देगा ?' छात्र प्रति निधि माधव निराश स्वर मे पूछता है।

अजी वह कोई धधा करन बैठा है। साला इधर की उधर करेगा दिन भर। छुट्टी के दिन पाँच सात चाय बच डाली तो कोई व्यापारी हुआ। बरसाती मढक है वह।'

ताज होटल एक टूटा झोपडा। एक मूज की खटिया। पत्थर की लबी पटिटका। त्रिछरे एल्युमिनियम के बरतन। चूल्हे म बुझी-बुझी आग। चिलम फूकता होटल वाला नग धडग।

'बाबा कडाइ द दो। प्रयोगशाला परिचायक मोहन कहता है।

'ना भाई। यह मेरी रोजी रोटी है।

'हम भूल आये। पूडियाँ निकालनी हैं। किराया दे देंगे।' माधव कहता है।

सपाट अनडो स चिलम की साफी लगा वह कुछ समय तक कश खीचता है। कुछ सोचता है एक बजा है। ले जाओ। पर मुझे पाँच बज चाहिए। किराय म दो रुपये लूगा। हाँ।'

झारा-परात भी चाहिए।

'अब जब मन्का दन पर राजी हो गया तो ढक्कन, गिलास भी दूगा। पर एडवांस लूँगा दस रुपये। तुम छोकरा का क्या भरोसा। हाँ।

'यह तो ज्यादा है। कुल माल सात का होगा और तुम दस एडवास माँग रह हो। मोहन को जसा लगा कह दिया।

उसन एक बार रोष भरी दृष्टि स देखा। बरतन उठा एक ओर पटक

कर दुत्कारते हुए उवल पडा फूटो यहाँ स। इनसे मेरा पेट पलता है और तुम आये हो मोल करने वाल। मुडकर वह जाँघ खुजलाने लगता है। चूल्हे से एक अगारा उठाकर उसने चिलम पर रख दिया।

डॉ० मुकेश की विचार शृखला टूटी। अब यह सोचन का अवकाश नही कि ताज होटल का मालिक वही व्यक्ति है जो चौक मे सुस्ती मिटाने की दवा का प्रचार कर रहा था, दिलचस्प व्यक्ति है। अभी बरतन चाहिए वरना खाना नही बनेगा।

एडवास मैं दे रहा हूँ। सामान द दो।

उसका गुस्सा कुछ कम हुआ। लकिन आहत स्वाभिमान की तलखी क साथ उसने कहा मैं एडवास लेकर भाग जाऊँगा? दो-तीन रुपये के पीछे धधा छोड दूगा? फिर डा० मुकेश स मुखातिब हुआ 'बारह पढा हूँ साहब! अपना बुरा हाल देख गलत न समझ लेना। सत्रह साल नौकरी की। मन नही लगा। लात मार दी। सच पूछो तो मेम साब से नही पटी। इस्तीफा दे दिया। वह मोहन की ओर मुडा, अकेला जीव! ब्राह्मण देह। आत्मा नही बेचता म।

यह एडवास लो। हम बडी दिक्कत हा रही है भाई। बटुआ खोल नाट बढाते हुए डॉ० मुकेश बोल।

मोहन की आर स नजर मोड पसा लेन स इकार करते हुए हाथ हिला कर वह बोला सा ब रहे दो एडवास। गरीब ही विश्वास नहा करगा तो दुनिया कैसे चलेगी? अब उसका इगित मोहन की ओर था ल जा सामान। चार साल की नौकरी न हुई होगी और लग गयी दफ्तर की हवा।

मालूम नहा इस उपहास स उसने किसे फटकारा नौकर को या गरीब व्यक्ति को।

मोहन माधव चल दिये। डा० मुकेश चाय क लिए कहकर बठ गय। कुछ बातचीत की जाये। यह व्यक्ति दिलचस्प है। उन्होने सोचा।

बाबा तुम ता अक्लमद हो। किसी साधारण बात के पीछे नौकरी छाड देना तो कोई समझदारी की बात नही हुई

साफ साफ कहूँ तुम बुरा तो न मानोगे अफसर बाबू!" उसक मुह

उस जनपद का कवि हूँ (कविता सग्रह 1981)
अरघान (कविता सग्रह 1984)
गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

स धुआँ उठना । चूल्ह म सूखी पत्तिया और कुछ छाल डाल वह पखा झलन लगा। तुम, आप अफसर लोग वडे आदमी हैं। इज्जत, मान-मर्यादा, धम कम से ऊपर उठे। मैं देशी जीव। सीधा माँगने जजमान के यहाँ जाऊँ तो भी मतलब के पीछे झूठ मूठ भला न कहूँ। मुह फट हूँ मैं। हा।'

नौकरी मे अफसर का खयाल तो रखना ही पडता है।'

हूह ! मैं कौन-सी गालियाँ बकता था। दफ्तर का काम भी करता था और अफसर क घर का छोटा मोटा काम भी। पर हद होती है बाबू मेम साब तो ' वह चुप हो गया।

डा० मुकेश चुप बठे है। इस सस्कारी ब्राह्मण पर उन्ह तरस आता है। निरा अव्यावहारिक।

चाय पी डॉ० मुकेश दवी मदिर की ओर चल दिय। बग से फूला की दूनी निकाल हाथ म ले ली। मदिर पहुचकर आठ आने का सिक्का चढाया। मनौती मानी और भभूति को माथे पर लगाकर प्रसन्नचित्त डॉ० मुकश पिकनिक का आनद लेन लौट पडे।

तीन माह बाद यह दूसरी पिकनिक। छाया की नही, अध्यापका की डा० मुकश की पदोन्नति पर उनकी आर स। वे प्रसाद चढान आये हैं। विश्वास है कि दवी के आशीर्वाद से ही व यह पद पा सके।

यहाँ से ताज होटल हट गया है। ढेर सार मोढे पडे हैं। चाय इच्छुका क बठन क लिए। चाय लिए अध्यापका का दल बठा है। हल्की फुलकी, फब्ती, हसी और चुटकुला का दौर शुरू हो जाता है।

डॉ० मुकेश को लगा, कोइ सबोधित कर रहा है, तुम फिर आ गय।'

हूह !

कालिख पुती, फटी मली चड्डी। रानें खुजलाता ताज होटल वाला उनकी ओर बढ रहा है। लाओ मेरे बरतन। होठा पर कुटिल मुस्कान। व ही धँसी धँसी आँखें। बिखर उलझे बाल। सपाट जबडे। हाथ फूला वह कहता है। किराये के दो रुपय भी न दते बन तुमस। [illegible]

अभी तक फूला न समाता मन तलख हो उठा। [illegible] पानी [illegible]

म डुबो न्यि ता मेरा क्या दोप ? किराया उन्हान नहीं दिया तो मैं क्या करूँ ? मैं तो उनके साथ क्वल इसलिए था कि कोई दिक्कत न हो कुछ अप्रिय घटना न हो। उन्हें पिकनिक का आनद आया। इचाज के रूप म अपन सहकर्मियो म मेरी प्रशसा हुई। बडो पर इम्प्रेशन बना। देवी की मनौती मानू यही ता प्रयोजन था मेरा

ए स्वार्थी ! क्या सोच रहा है ? आज भागन नहीं दूगा।'

डा० मुकेश को लगा वह और समीप आ गया है। न दे पाये तो कौन सा गुनाह हो गया। लेकिन मन ही मन वह भयभीत है। दस पद्रह देकर टाल दूँ। वह जेब टटालता है।

बेईमान ! मैंने कहा था न अपनी चीज नहीं बेचता। तू मोल दे रहा है मुझे। इसी के लिए मैंने नौकरी को लात मार दी थी और जब तुम '

डा० मुकेश का लगता है कि वह व्यक्ति पारदर्शी है। हाड मास रहित आकृति उनका गला पकडन को आग बढ रही है।

'बचाओ ! विक्षिप्त से डा० मुकेश चिल्लाते हैं। प्याले से चाय छलक कर पेंट पर फल जाती है।

क्या हुआ डाक्टर मुकेश ! पद स छोट, उम्र-अनुभव म बडे अध्यव सायी डा० गुप्ता उसका कधा पकड पूछते हैं।

तुम डरे स लगते हो डाक्टर। पसीने पसीने हुए जा रहे हो। तबीयत तो ठीक है न।' दाशनिक से दीखत डा० कुमार पूछते हैं। उनका कद जस डिग्रिया के भार स दबकर कम हाता जा रहा है। फिर भी वह डाक्टर मुकेश के अधीनस्थ है।

भयाक्रात डा० मुकेश चुप हैं। स्टोव की आवाज सुनायी देती है। कुछ क्षण बाद साहस कर वे हौले-से पूछत हैं वह, वह चडडी पहने अस्त-व्यस्त हलवाइ

कहा ?

अब तो नहीं दीख रहा है। कुछ रुककर वह सहमे स्वर म कहत हैं, अभी वह मुझसे भीख माँग रहा था न '

कुछ देर सब इधर-उधर देखते रहे। शर्मा ने पास आ चिकोटी काटी अफसर बनने के लिए तुमने कौन क्म नाटक किया था। अब तो छोड

प्रस्थान (कविता सग्रह 1984)
गोरनगर, सागर विश्वविद्यालय सागर—470003

मार मह घया ।'

अभी-अभी बना मनहूस वातावरण ठहाका से भर गया । एक ने कहा, 'द टॉप जोक आफ द डे ।'

डा० मुकेश का चेहरा गभीर हो जाता है । नये आये प्याले से चाय का लम्बा सिप ल कुछ गरमाहट महसूस कर व कहते है 'नही यह सच था । छात्रा के साथ पिकनिक पर जब मैं यहाँ आया था तब इसी स्थान पर एक ताज होटल था । वह व्यक्ति उसका मालिक था

पास खडा छाकरा उन्ह एकटक देखने लगा ।

तो क्या ?' किसी ने पूछा ।

डॉ० मुकेश चुप रहे ।

नीचे रखे कप-प्लट उठा छाकरा बोला, वह ताज होटल वाला राम भरोसे न । बचारा ! अजी उसे ता मरे दो महीन हो गये । गाय बचाते खुद ट्रक के नीचे आ गया '

उस मूक वातावरण म अब कुछ सुनायी दे रहा है तो स्टोव और कप-प्लेटा को धोन की आवाज । ●

सुमति

कहा था न ये पुस्तकें बिस्तर में नहीं समायेंगी। अपनी जिद पर अड़ी हो। तो इन्हें यहीं पटक जाऊँ? नहीं हरगिज नहीं, इन्हें नहीं छोड़ सकती। सारी ही पुस्तकें मुझे प्रिय हैं। इन्हें पढ़ा है आगे भी काम आयेंगी। तकिये ने व्यर्थ ही इतनी सारी जगह घेर रखी है। हटाओ! हो गयी न जगह, सारी ही आ गयीं। बिस्तर को तिहरा लपेटते लगता है, एक भारी बोझ से हल्की हो गयी। बेल्ट कसकर, सीधी तनकर खड़ी हो जाती हूँ और दोनों हाथ कमर पर रख सीना बाहर की ओर तान ढेर सारी साँस छोड़ देती हूँ।

अपनी ऊहापोह को समझाती हूँ—जिद्दी हूँ, पर नासमझ नहीं! कुछ बढ़कर खिड़की तक आ जाती हूँ। सड़क के ऊपर लटके बल्ब से सरल रेखा में बढ़ा किरणपुंज सलाखों की बाधा को पार कर मेरे छायायित खंड को प्रकाशित कर देता है। कुछ देर इधर उधर देखती हूँ और स्वीच के निकट आ जाती हूँ। बटन उठाने से पूर्व प्रश्न उठता है—बड़ी जल्दबाज हो, अब सोओगी कैसे? ऐसे! फर्श पर पड़े तकिये को पलंग पर फेंक कहती हूँ। स्वीच ऑफ कर पलंग पर बैठने को होती हूँ कि वार्डन के फ्लैट पर छायी अमावस्या पर नजर चली आती है। हूँह! लेट जाती हूँ।

कंधे तक कटे छितरे बालों पर होले से हाथ फेरती हूँ। तो बाल भेज दिया? अनायास ही वार्डन का रिमार्क याद आता है। ये बाल इतने आकर्षक हैं? एक बाल तोड़ती हूँ और उसे अंगुलियों में लपेटकर फिर हवा में तैरने के लिए छोड़ देती हूँ। सोचने लगती हूँ—वह पत्र कौन लिख

उस जनपद का कवि हूँ (कविता संग्रह 1981)
मरघान (कविता संग्रह 1984)
सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

सकता है ? होगा कोई मेरी जूनी—पाव सीधे फैला लेती हूँ।

रेखा, अब तो कुछ ही घट और हैं तुम्हारा निकट सानिध्य पाने मे। मुझे अनुमान नही था, यहा आते ही फँस जाऊँगी। अब समझ पायी हूँ आवरण से नज्जित व्यक्ति अनुशासित तो होता है पर जड भी होता है। उसकी स्वायत्तता उभर नहीं पाती क्योकि वह परिचालित है। एक घडी की भाँति जहाँ मिनट मे केवल साठ सेकेंड होते हैं और एक घटा पूरे साठ मिनट का न इधर न उधर। सवेदन के क्षण भी वहा नपे-तुले होते हैं। उल्लिखित से हटा कि वह सन्तोष ठहरा दिया जाता है।

एक दिन होस्टल मे रहकर तुझे निकलना पडा एक रात होम्टल से बाहर रहकर मुझे सदव के लिए निकलना है। रेखा तू निधन है—नही थी, और जब तक जुगाड कर ले तब तक का ही तो आश्रय चाहती थी। तब वाडन का वात्सल्य तुम पर उमडा था— दो चार गाय-कुत्ते भी तो होस्टल व मेस में पलते हैं तुम्हारा भी प्रबध हो जायेगा।' क्षमा करना बहिन, तब हम अपरिचित थी। अत मैं मूक रही यद्यपि तुम्हारे द्वारा वाडन को सुनाया गया कई दिनो तक होस्टलगो के कानो मे कपित रहा। अब तो मेरी पीठ थपथपाओगी न—शायद न भी थपथपाओ। तुम्हारे बडप्पन का क्या भरोसा—आज एक दीघ मौन फूटा है यद्यपि अलग कारण से।

साँस के साथ नाक मे चढ आय मच्छर न क्रम मे व्यवधान डाल दिया है। एक विचित्र-सी सिहरन उठी है मैं एक साथ कई बार छीकती हूँ और बाँह स नाक पोछ देती हूँ। हाँ, यहाँ से चला जाना ही बेहतर है।

प्रिफेक्ट ने कहा था— मैं समझौता करा देती हूँ सुमति कुछ झुकना होगा।'

नहीं डियर उसकी कोई आवश्यकता नही है। मैंने ठडे दिमाग से कहा था।

'आवश्यकता है, क्योकि इस मिसाल के बाद तो वह और सख्त हो जायगी।'

'तो मैं क्या करूँ ? सपाट प्रश्न छोड मैं खिसक गयी थी।

खिड़की म झाँकने के लिए ही चद्रमा पहाड से ऊपर उठ आया है। आरभ मे वह खूबसूरत रहा होगा पर उल्काओ न उसका चेहरा बिगाड

प्रिफेक्ट ने आने का आशय बताया था— मैडम एक रिक्वेस्ट है मिलने का समय कुछ अधिक कर दें। यह जेनरल ओपिनियन है।' खट से प्याला रखत हुए सक्षिप्त उत्तर मिला था नही।'

हम असुविधा होती है। मस मनेजर ने कहा था।

'मुझे बताने की जरूरत नही है।'

माना मिष्टभाषी होने का उनका दावा कभी नही रहा। फिर भी आरभ ही अप्रिय से होगा इसकी आशा किसे थी। कुछ समय के लिए कोई कुछ नही बोला था। हिलते परदे से लटकी घटियो के स्वर सुनते रहे थे। स्वरचित तनाव को ठेलते हुए वाडन ही बोली थी—'तुम्हारा हित अहित मैं भलीभाति समझती हूँ। एक जगह छूट देने पर और जगह मांगोगी और ऐसा मैं नही चाहती।

तो आप हम बाँधे रखना चाहती है। न जाने मेरे मन पर लगा शिष्टाचार का नियत्रण कब हट गया था। अदर-ही-अदर हो रही शृखला अभिक्रिया का ही यह कदाचित विस्फोट हो।

येस' मेरी ओर टकटकी बाँधे कहा था— अभी विजिटर से मिलने क घटे बढाने को कहती हो। कुछ दिनो बाद कहोगी रात मे बाहर रहन की छूट दी जाये। फिर माँग करोगी ' वे उठ गयी थी और नियमित कदमो स टहलने लगी थी।

किसी कैदी के यान्त्रिक होने पर जेलर एसे ही चक्कर काटता होगा— मैंने चुप रहत सोचा था।

हम बच्ची नही हैं मडम ! कौन बाहर रहना चाहेगी और भला कहा रहेगी ?' प्रिफेक्ट लगभग गिडगिडा रही थी।

यह भी मैं बताऊँ ?

तो कॉलेज से कपलसरी अटेंडेंस क्या हटा दी है ?' मैं बीच म ही बोल पडी थी।

लो समझो इसका कहा। यह चाहती है स्वच्छन्दता स्वतत्रता और इस वाक्य का अत एक उपहास्यास्पद हँसी के साथ हुआ था।

जेल म जब तक रहता है असीम धीरज रहता है पर टूटते ही ससीम वास्तविकता उसे निगल जाती है और तब कता विद्रोही बन जाता है।

उस जनपद का कवि हूँ (कविता सग्रह 1981)
अरघान (कविता सग्रह 1984)
रनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

हवा क एक झोके के साथ ही परदा ऊपर उठा था और वे घटियां मूक हो गयी थी, पर गिरते ही दीवार से टकराकर वे एक साथ वाचाल हो गयी थीं।

मडम क्षमा करना है छोटे मुह वडी बात, पर यह धोखा नही कि एक ओर तो हम एजुकेट करो और दूसरी ओर चाहो कि हम भेड-बकरियो जसा व्यवहार करें।'

व कमरे की औसत लम्बाई का माप लेने मे लगी रही।

होस्टल किसी एक का नही है। एक समुदाय है। समुदाय के नियम होते हैं, अनुशासन होना है। उसके भग होते ही ग्रुप नष्ट हो जायेगा। समझा ?' वे मरी ओर इंगित कर कहने लगी—'तुम तो यह भी चाहोगी, आजादी की पुजारिन हो न लडको को भी तुम्हार कमरो म आने की छूट दी जाय।

तब लगा था जसे वहे के प्रेरण से मेरी हडिडयां चुवक्ति हो गयी हा और पिनकुशन से निकली सारी पिनें यहां वहां मांस चम को वेधती अपना नुकीला सिरा हाड मे गाड रही हैं। किसे अनुमान था कि तक परत-दर-परत इतना भीतर पहुंच जायेगा। मैंने खिडकी की ओर दखा था, जगला कह रहा था—प्रत्यक सलाख पौन इच मोटी है।

'मडम यह बहुत लम्बा वहिर्वेशन है, फिर भी जब समय आयेगा, यह स्वाभाविक मिलन इतना प्रतिकूल नही जान पडेगा।

प्रिफक्ट ने झिडकते हुए मेरा मुह हथेली से बद कर दिया था—'चुप रह मरी।'

तुम आवश्यकता से अधिक फास्ट हो, मगर यह क्यो नही समझ पाती, साथ रह रही अबोध छात्राओ पर इसका क्या असर होगा ?'

वे डिस्टब्ड हागी। शिकायत करेंगी ?' मैंने प्रिफेक्ट का हाथ झटक दिया था।

'नहीं उनकी जिज्ञासा वढेगी और व जानना चाहगी '

मैं शायद कुछ नही कहना चाहती थी, पर फूट ही पडे थे अयथा न लें मडम इससे उनकी भलाई ही हागी, क्योकि, क्योकि '

ओफ सुमति !' प्रिफेक्ट और अय मुझे बाहर घसीट लायी थीं।

रेखा ने जब यह मुझसे सुना तब उसने मेरे हाथ अपने हाथ म ले लिए थे। निश्चय ही, वह मेरी निर्भीकता का समुचित पुरस्कार था। उसके हाथो के खुरदरेपन को मैंने मन ही मन प्रणाम किया था। कुछ अतराल के बाद पूछा था— रेखा, तुम तो बधन रहित हो कभी तुम्हारे साथ कोई खिलवाड हुआ है ? नही। जब तक स्वय म ही पोषित दबी इच्छा न हो ऐसा नही होता। वह रुकी थी, एक बात और है। यह निरा भ्रम है कि नियम और प्रतिबध रक्षा करते हैं। समझी हुई स्वतत्रता से बडा कोई रक्षक नही होता है।'

रेखा की आँच से मुझमे घुला सदेह तलछट की भाँति अलग हो गया था और मैं भाप की तरह स्वच्छ हो गयी थी।

शायद मुझ पर व्यग्य करते हुए ही वाडन ने उस दिन कक्षा म कहा था कपलसरी अटेंडेंस क्या हटी लोगो के पर लग गये। रेखा सात दिनो से नही आ रही है। मैंने स्टाफ मीटिंग मे बहुत कहा था कि हम पश्चिमी नही हैं पर नक्कचिया पर असर हो तब न।'

स्पष्ट था यह सबोधन किसके लिए है। मैं कक्षा से उठ आयी थी। शाम तक इधर उधर भटकती रही थी—ताला लगे मेडिटेशन हैट और स्वीमिंग पुल' के आसपास। कटीन की चाय कडवी थी, बरे से कुछ नही कहा था। फिर रेखा से मिलने चल दी थी। वह बिस्तर पर औंधी लेटी थी। मैंने माथा छुआ तो वह बोली नही सुमति छूत लग जायेगी।

लोहे को पारस की छूत लगेगी तो भला ही होगा।' मैं हल्की हँसी थी पर उसने आँखें मूद ली थी। उसे सीधा लिटाकर गीले कपडे की एक चौडी पटटी ललाट पर फला दी थी। आँखें तब भी बद थी। हा खुली आँखो की तरह बद आँखें भी कहती हैं समीप का प्रेक्षक ही इसे समझ सकता है।

रेखा के घर से होस्टल के लिए मैं पदल ही चल पडी थी। कही चप्पल टूट गयी तो ? तो भी पदल ही चलती रहूँगी, मैंने निश्चय किया था।

विजिटस रूम में पाँव धरते ही चौकीदार ने अग्रजी म भद्दी टाइप किये

पत्र की कापी थमा दी थी। तुम रात भर होस्टल मे अनुपस्थित रही। रजिस्टर म नही लिखा है कहा जा रही हो ? यह नियमो का स्पष्ट उल्लघन है। कई न्निा से उल्लिखित समय से देर मे लौटती रही हो। इससे दूसरो पर बुरा असर पडेगा। तुम्हें होस्टल म और रहने की अनुमति नही है—ऐसा ही अथ था उसका। पत्र की तहें कर उसे पस मे डाल न्यिा था और भीतरी सघटो मे उठती गिरती निवत्ति होने मे जुट गयी थी।

रात कहाँ ठहरी थी ? जानकर वाडन तुम कुपित ही होगी। होती रहो मेरी बला से ! मैं बताऊँगी रेखा के घर थी। क्या ? क्यो मेरी मरजी। नही, उसे ज्वर था। तुम्हें ता स्मरण होगा न उसका अपना यहा घर नही है। लडके को पढा किराया पूरा करती है। पाच छह दिनो से वह पढा नही पा रही थी। छात्र को मैंने ज्यामिति के कुछ साध्य बताये थ और कुछ प्रश्न हल कराये थे। तब मुझे लगा था वाडन हम एक समकोण त्रिभज के लब और कण हैं। हमारे मध्य आधार है नियम। और, तुम समझती हो आधार की प्रत्येक इट आवश्यक है, सोच-समझकर रखी गयी है। अतर यही स्थित है—आधार होना चाहिए पर सडी-गली इटो का नहीं। खर जाने दो। जब छात्र चला गया, मैंने रेखा के माथे पर हाथ न्यिा तो वह जल रहा था।

सुमति जा अब देर हो गयी है डॉट पडेगी।

लेकिन तुम्हें ऐसे छोडकर।'

'ताप है कम हो जायगा भई, ज्वर कोई पहली बार तो नही हुआ है।

'मेरा जान का मन नही है नही जाऊँगी तो वहाँ कौन-सी आबादी कम हो जायगी।

पर होस्टल का अनुशासन है और वाडन को नियमो स प्रेम है रिश्ता म नहीं।'

मगर मुझे तो तुमसे है। मैंने बढकर हौले से उसका माथा चूम लिया था और अँगुलियो से फौरन होठ बद कर दिय थे।

बाथरूम से निकलते ही मजू चिहुँकी थी, हाय सुमति,

तेरे चर्चे हर जुबान पर हैं। उसे ठेलते हुए मैं बाथरूम म चली गयी थी और शावर के नीचे देर तक बठी रही।

साथ प्रिफेक्ट मैस मैनजर तथा कुछ और मेरे पास आयी थी। बता रही थी सुलह हो जायेगी वाडन क्षमा कर देगी। उनकी बातो को मैंने विशष महत्व नही दिया था। पर भोजनोपरात मुझ पकडकर वे ले ही गयी। मैडम के चेहर की दमक देख लगा था, मेरे आने के प्रति व आशा वान थी। मैं खडी ही रही। पखे से आ रही हवा ने मेरे निवध बाल और फैला दिय थे जिन्ह मैं समेटने लगी थी कि ड्रार खोल तीसरे मोड पर कटे अतर्देशीय पत्र को बढाते हुए वाडन ने कहा था खूबसूरत बालो वाली तुम्हारा पत्र।

तुम्हारे एक बाल का इच्छुक' अत पढते पढते मैं लज्जित और बेचन हो गयी थी। रक्त का प्रवाह पहले गले पर, फिर गाल पर, फिर सिर म प्रबल हो गया था।

किसका है ? सडर कौन है ?

मैंने पत्र उधर बढाना चाहा था पर वे हाथ जूडे की पिनें ठीक करते रहे।

कोइ चक्कर है ?

अनसुना करते हुए पत्र को चिंदी चिंदी करके उछाल दिया था और उस अनचीन्हे पत्र लेखक का एक एक शब्द चारो ओर गिरने के साथ फलता हुआ फश पर जमा होने लगा था।

रात भर किसके साथ थी ?' इगित स्पष्ट था।

थोऽईऽई मैं चीख पडी थी और उसके साथ ही फश, छत औरदीवार पर अनक फोल्ड और फाल्ट हो गय थे।

पास खडी छात्राएँ भौचक रह गयी थी। वाडन के चेहरे पर विजेता के भाव उभर आये थे। कुछ रुककर मैं स्वस्थ होना चाहती थी। जब उफान दब गया तब सयत हो स्वय को पूरा ही उडल दिया था मैडम दूसरा की चिता देह के लिए ही नही, मन के लिए भी हानिकारक है। व्यक्ति अपने से ही पार पा जाय, तो बहुत है। आप समझी ? खर फिर भी विश्वास दिलाती हू— एक सूय से मरी निकटता है पर हमारे बीच कभी

उस जनपद का कवि हूँ (कविता संग्रह 1981)
घरधान (कविता सग्रह 1984)
स्नातर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

कोई तारा आ पडा न, तब मैं आह नहीं भरूँगी, अपनी निजी धारणाएँ नहीं बनाऊंगी, न उन्हें थोपने का प्रयास करूँगी।'

'गेट आउट।'

अपनी अधिकतम आवृत्ति के साथ वे चिल्लायी थी और इसके साथ ही उनके चहरे की सारी कांति मेरे चहरे पर स्थानान्तरित हो गयी थी। जाते हुए छत, फर्श और दीवार पर नजर डाली थी, उन पर अंकित सारे फोल्ड और फाल्ट मिट चुके थे। •

कही कोई मिल गया था

'मैं आई कम इन सर ?' मैंने कक्ष म प्रवेश की अनुमति मागी। बापू मुझे बाह स पकड सहारा दिए हुए थ। एक प्राध्यापक ने हमारी ओर देखा और अदर आन के लिए इशारा किया। बापू के सहारे आग बढ मैंने साक्षात्कार पत्र थमाया। चश्मे वाले सर न वह पत्र ले लिया।

'तुम रवि हो ?' उन्होने आश्चय से मेरी ओर देखा। मैंने स्वीकृति म सिर हिलाया। इधर उधर पडे उपकरणो म बापू का चित्त भटकता रहा। मैं बापू के बारे म सोचने लगा। जहा मुझे इनका सहारा होना चाहिए ये मेरी बाह पकडे हुए हैं। रवि कब उऋण होगा बापू के उपकार से। मेरी आखें अब भी सर पर लगी थी पर मस्तिष्क कही और काम कर रहा था।

सर पूछते हैं— इतन कमजोर कैसे हो गय ?'

टायफाइड हो गया था सर।' हमारी बातचीत सुन बापू इधर मुडते हैं।

दीनता के भाव उनके मुखमडल पर उभर आते हैं।

य कौन है ? सर बापू की ओर इगित करत हैं।

मेरे पिताजी।' मैं कहता हूँ। और सोचने लगता हूँ कितना निरा मूरख हूँ मैं भी। इटरव्यू मे पिता को कही साथ लाया जाता है। मैं कितना भी अस्वस्थ हू पर इसका अथ यह तो नही कि औपचारिकता का उल्लघन करूँ। पर कैसे कहूँ कि बापू बाहर चले जाओ ये मुझे कुछ प्रश्न पूछेंगे। सामने बैठे बडे प्रोफेसर ने बापू स कहा आप बठिये।' मेरी आखें फटी रह गयी। कितना बडा होता है विश्वविद्यालयी शिक्षक। पद्रह सौ दो

दिगन्त (सॉनेट 1957)
ताप के ताए हुए दिन (कविता संग्रह 1980)
शब्द (कविता संग्रह 1980)
उस जनपद का कवि हूँ (कविता संग्रह 1981)
अरघान (कविता संग्रह 1984)
, , सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

हजार का वेतन मिलता होगा, वह एक सामान्य ग्रामीण के साथ ऐसा व्यवहार कैसे कर सकता है। मैं यहाँ साक्षात्कार के लिए आया हूँ, वैसा वातावरण ही नहीं है। कुर्सी के एक कोने पर मैं भी टिक गया। धड़कन बढ़ गयी अब कुछ पूछेंगे। दो माह से पुस्तक नहीं छुई। स्मरण नहीं आता कि स्नातक कक्षा में परीक्षा पूर्व क्या पढ़ा था। अपने विचारों में तारतम्य कैसे स्थापित करूँगा। सर ने मेरा आवेदन पत्र निकाल पढ़ना आरंभ किया। बापू के हाथ जुड़े से हैं। मेरी घबराहट बढ़ने लगी।

'क्षमा कीजिए, आपको आना पड़ा' सर की इंगित बापू की ओर थी, 'आपका पुत्र योग्य है इंटरव्यू की आवश्यकता नहीं है।' आवेदन पत्र पर कोई नोट लगा उन्होंने मेरी ओर बढ़ाया, 'आप कार्यालय में जाइये। फीस दे दीजिए। सोमवार से कक्षायें आरंभ हो जायेंगी।

मैं उठा—'थैंक्यू सर।' बापू के दोनों हाथ जुड़े थे। उनके चेहरे की शांति संतोष की द्योतक थी। चलते चलते बापू ने अपना हर्ष प्रकट किया—'कितने अच्छे हैं ये प्रोफेसर लोग।'

(2)

अधिकतर शिक्षकों और सहपाठियों का सद्व्यवहार मुझे प्राप्त है। महीने भर से व्याख्यान सुन रहा हूँ पर इस पीरियड में कुछ समझ नहीं आता। ये वेक्टर राशियाँ बड़ी दुरूह हैं। परिणाम और दिशा दोनों होंगे। सब परंपरागत नियम ही बदल गये। सीधी-सादी थी अदिश राशियाँ। हर रोज नयी परिभाषायें दी जा रही हैं। कुछ पल्ले नहीं पड़ता। इस नैराश्य से अभिभूत हो मैं बाहर निकल आया। समझ में कुछ न आये तो कोई क्या करे।

मुझे कक्षा से बाहर आता देख चपरासी बढ़ा। उसे देख आशंकाओं ने मेरा घेराव कर दिया। क्या विभागाध्यक्ष का बुलावा आया है? पर उन्हें कैसे ज्ञात हुआ कि मैं बाहर आ रहा हूँ। विश्वविद्यालयी कक्षाओं में ऐसे उठ जाना कोई असामान्य नहीं। रुचा नहीं बाहर आ गये। पूछेंगे तो बहाना कर लूँगा सिर दर्द का। चपरासी मेरे पास पहुँच गया था। उसने एक चिट पकड़ायी इनको बाहर बुला दीजिए, बड़े बाबू ने बुलाया

कहीं कोई मिल गया

उस चिट पर अपना ही नाम दखता हूँ। टी० सी० के लिए बुलाया होगा। मैंने लिख दिया है आ जायेगा तो दे दूगा। पर वह नही माना तो? दुबलता मुझ पर हावी हा जाती है। बडे बाबू के निक्ट होने पर मैं कहता हूँ 'सर अभी तक टी० सी० नहीं आया है।'

वह मेरी ओर सस्नह देखते है। स्नह मुझे शक्ति प्रदान करता है। एक पत्र और लिख दो भाई। मै अपनी स्वीकृति देकर मुडता हू कि बडे बाबू कहते है, सुनो तुम्ह स्कालरशिप मिल गयी है यही समाचार दने के लिए अभी बुलाया था।' थक्यू बडे बाबू थैंक्यू। मैं उछल पडा।

(3)

मेरे कामन रूम म पहुचते ही शर्मा ने घोषणा की हम सब कटीन चलेंगे। मोती और मुझमे मित्रता है हम साथ हो लिए। मैं उसे खुशखबरी सुनाता हूँ। वह बधाई देता है।

अब ता तू स्वावलम्बी हो गया।

हा टेबल के एक ओर पडी कुर्सी पर बठता हूँ। मोती भी बैठ जाता है। सामने की कुर्सियो पर सुधा और गीता आ बठती है। कटीन वह सगम स्थल है जहाँ शिक्षार्थी अपना दुखडा रोते है या सुख बाटते हैं। मोती कहता है बडा बोर पीरियड होता है।

कुछ भी पल्ले नही पडता।' सुधा पल्ला झाडती है।

लगता है सर ता मेहनत से पढाते हैं, यह विषय ही कठिन है।' गीता अपना दष्टिकोण बताती है।

यह तो बिल्कुल ही गोल है।' मैं निस्सकोच कहता हूँ।

बरा चार गिलास रख जाता है। शर्मा उधर मनजर के साथ गपशप कर रहा है। दोनो की नजर हमारी ओर है, शायद शर्मा उसे कुछ समझा रहा है। मोती आधा गिलास खाली कर कहता है रवि को स्कालरशिप मिल गयी।

'काग्रेटस मिस्टर रवि। सुधा पाँव सिकाडते हुए बधाई देती है। कितने रुपये मिलेगे?

नौ सौ रुपये वार्षिक। मैं मज पर बिखरे पानी से खेलता हुआ

दिगन्त (सान॰ 1957)
ताप के ताए हुए दिन (कविता सग्रह 1980)
गन्द (कविता सग्रह 1980)
उस जनपद का कवि हूँ (कविता सग्रह 1981)
अरघान (कविता सग्रह 1984)
गोरनगर. सागर विश्वविद्यालय सागर—470003

कहता हू ए ह्यू ज सम, ओह माई गाड । सुधा उछलती है। मैं गीता की ओर ताकता हू । वह हल्के स होठ खाल कहती है बधाइ रवि । मज पर ठिक हाथ मिला मैं धयवाद प्रदर्शित करता हूँ । बरा श्रीमराल रख जाता है। काउटर स शर्मा घोषणा करता है, नमकीन और चाय आ रही है ।

मैं जेब टटोलता हू। पर इस शमा का किसन लीडर बनाया एव ऊट पटाग प्रश्न स्वय से करता हू । यदि इसे ज्ञात था ता पार्टी लेन से पूव मुझ ता सूचना द दना। कुल रुपय तीन है पाच स कम पैसे काम बनेगा। मोती की ओर देखता हूँ वह श्रीमरोल का अतिम हिस्सा खा रहा है। सुधा पहल ही समाप्त कर चुकी है। गीता ने एक दो कौर तोडे हाग । मैं भी उठा खाने लगता हूँ । क्रीमरोल रख गीता मनीबेग खोलती है। अदर चलती अगुलिया के साथ उसके चेहर पर हल्की तनाव की लहर उठती है और बेग के बन्द होने के साथ तनाव मद हो जाता है । सुधा मोती का कुछ सकेत करती है कितना मेल मिलाप है दोनो मे—मैं आश्चय करता हू । व एक झपन्टे मे ही हमारा शेष क्रीमरोल छीन खा जात हैं । सारा हाल ठहाका स गूँज उठता है । लगता है कोई पूव नियोजित योजना है। ता वह हमे अप मानित करना चाहता है ? नही, मोती का ध्यय यह कभी नहीं हो सकता। पर यह परिहास लडकियो के आगे   । मैं गीता की ओर दखता हू, उसक चहरे पर तटस्थ भाव हैं । वह अविचलित है । नमकीन खात कोई छीना झपटी नही होती । शायद नमकहलाली करनी पडे । उधर मेजा पर अभी फुसफुस जारी है। शायदकोई कह रहा हागा माती न तो पटा ली। छी छी क्या गन्दी बात साचता हू मैं भी। बैरा चाय रख जाता ह। एक प्याला उठा मैं गीता को बढ़ाता हूँ, थक्यू । मुझ उसका स्वर अच्छा लगता है। कितनी सुशील है गीता। मेरा आदश राकता है—रहन द रवि अपनी आलाचना। कप से चुस्की लेने लगता हू ।

शर्मा हमारी मज की ओर बढा जब पास आ गया ता गीता का हाथ जाडत हुए कहता है थक्यू फार आल दिस। वह कुछ नही कहती । मैं फिर सोचने लगता हूँ यह गीता को साधुवाद क्या ? क्या गीता को पहले स ही सूचना थी ? किंकत्तव्यविमूढहा जाता हू । मोती का एकओरले मैं कहता " यार पाँच रुपये द।' वह पाँच का नोट द दता है। मर काउटर पर -

कहो कोई मिल गया या

पहुचते गीता भी पहुच जाती है।

'प्लीज आप मत दीजिये।

नही यह कैसे हो सकता है। प्रसन्नता मुझे है छात्रवृत्ति मिली है। मैं प्रतिवाद करता हू उस बेग नही खोलने देता। वह मुक्ति की सास लेती है। फिर आभार प्रकट करती है 'थक्स ए लाट।'

(4)

कोआपरेटिव स्टोर होते हुए मैं और मोती होस्टल पहुँचे। मैं प्रसन्न था कि सस्ते म ही छूट गया। वरना कही होटल म जाते तो अधिक खच होता। मैं मोती के बारे म सोचने लगा। कितना स्माट है वह और कितनी चपल है सुधा। दोनो ऐसे घुल मिल गय है मानो अरसे से जानते हो। आंखो आंखो म बात कर किस निपुणता से इन्होने हमारे कीमरोल छीन लिए। एक गीता है पूणत सौम्य शात। इस परिहास पर भी तटस्थ भाव। लेकिन जब मैंने बिल चुकाया तो आगे क्यो बढी ? और मेरे पे करने पर वह सतोष क्या महसूस कर रही थी। मुझे लगा बेबात ही व्यथ की आशकाओ म मैं गुथा जा रहा हूँ।

गेट पर ही शर्मा ने टोका, लो आ गये आशिक।' अय सहपाठी भी खडे थे। मुझे खीझ उठी, यह शर्मा ऐसे शब्दो का प्रयोग क्यो कर रहा है। समझ म नही आ रहा था कक्षा से बाहर चला आया। छात्रवृत्ति मिली थी खिला पिला दिया। मीनू उसी का था और कुछ खाना होता तो खा लेता। पर यह आशिकी '

क्या कहा ?' रोषपूवक मैंने कहा।

मजनू मियाँ, पाँच रुपय म लडकी नही पटती। गलियो के चक्कर लगाने पडते ह। शर्मा मेरे निकट था। अय दूर खडे मौन दशक बने रहे।

'तुम ठीक कहते हो शर्मा पर यह कौन सी लैला का चक्कर है मैं भी जानू।

'लैला नही गीता। हमे मूख मत बनाओ रवि। यद्यपि अय इस वाक् युद्ध का आनद ले रहे थ पर ऐसा नही लगा कि वे शर्मा के समथक हैं।

पर मुझे लगा कि शर्मा प्रहार किये जा रहा है और अय तमाशा

देखना चाहते हैं।

'शर्मा, अपनी जबान पर लगाम लगाओ।' मोती ने उसे चेतावनी दी। मेरा पौरुष जागा। क्या मैं मूर्ख बना रहा हू ? गीता मुझे अच्छी लगती है पर इसका यह अर्थ नही कि मैं मजनूगिरी कर रहा हूँ। इन दिनो कभी भी तो इस दिशा मे जाने अनजाने कोई प्रयास नही किया। प्रतिवाद करूगा। इसे बताऊगा ।

'यह सब जानता था कि वह पार्टी गीता की ओर से है तो प क्या किया ?

मैंने लम्बी साँस ली ओह ! कोई गलतफहमी ही हो गयी। सयत स्वर म बोला, 'क्षमा करो भाई, मैं तुम्हारे प्लान स अनभिज्ञ था। एक तो कक्षा म लेट आया था, फिर मन नही लग रहा था अत जल्दी भी निकल आया। उसी समय मुझे ज्ञात हुआ कि स्कालरशिप मिली है। मैं गलत अनुमान लगा बैठा।'

'पर तुमसे किसने कहा पार्टी दे ?'

'मेरे मन न कहा। अच्छा गलती हो गयी अब शात हो जा यार।'

मोती न आगे बढ़ शर्मा का कधा पकडा कि विवाद समाप्त कर कमरे म चला जाये।

'देख लेंगे, बडे तीसमारखाँ बनते हो।'

'जैसी इच्छा।'

शर्मा मुट्ठियाँ भीचे चला गया। मुझे वास्तव म एक सुखद आश्चर्य है कि इतना साहस भी है मुझमे।

(5)

किसी कोने की सीट ढूँढ़ने वाली गीता आज स्वत ही मेरे पास आ बैठी। भड्म लक्चर दे रही है और मैं बिना समझे नोटस ले रहा हूँ। यह हो क्या रहा है। वैमाने ही मेरे अदर कुछ द्वद्व चल रहा है। मैं बहाना कर उधर देखता हूँ यह अध्ययन म व्यस्त है। या यह दिखावा मात्र है ? ऊल जलूल प्रश्नो म मैं उलझता रहता हूँ। क्या कोई चक्कर तो नहीं, नहीं शर्मा तो वैसे ही कहता है। यह मात्र मत्री का आरभ है जो किसी आदान

प्रदान पर आधारित नही है। मै सर्वेक्षण करता हू । अल्प आय वाले एक सामान्य ग्रामीण की सतान हू । मुझे मन लगाकर पढना चाहिए। मेरे लिए इन सब बातो पा अवकाश कहाँ। चाहे स्तर कितना ही स्वस्थ हो मेरे लिए श्रेयस्कर है बचकर रहूँ।

'एक्सक्यूज मी। गीता धीमे स्वर मे कहती है। मैं महसूस करता हू, स्वर मे भी मिठास होता है। नजर उठा देखता हूँ मुझे ही सबोधन है। वह पूछती है पसिल है ? मैं जेब टटोलता हू। एक टुकडा जेब म पडा है। यह गदी पसिल दे दू ? वह क्या सोचेगी ? इससे मेरी हीनता प्रगट न होगी ? पर मुझे क्या पडी है चाहे तो ल ले वह जो इच्छा हो समझे। तुरत निणय ले मैं पैंसिल बढाता हूँ।

वह पसिल स लिखने लगती है। मेरी आशा के विपरीत उसके मुख पर सतोष है। कितना अजीब हू मैं भी। यह सकीण प्रवत्ति मुझे छोडनी होगी। स्वस्थ परिवश म पले व्यक्ति क विचार वस्तु की उत्तमता पर नही आवश्यकता के अनुरूप होते हैं। किसी अदृश्य शक्ति स परिचालित आदश न मुझम किसी के प्रति आत्मीयता सी जगाई और म तदुपरात निश्शक हो लक्चर सुनने लगा।

(6)

कमरे म आज ही आया बापू का पत्र मिला। वे अस्वस्थ हैं। अब ज्वर शात है। अधिक चल नही सकते शक्तिहीनता है। क्या करू ? चला जाऊँ ? बापू को कोई सम्हालन वाला भी नही है। यहाँ बुला लूँ ? मुझे क्या असुविधा होगी। जलवायु परिवतन होगा उनका मन बहलेगा ही। बडे अस्पताल म भी दिखा देंगे। मैं पोस्टकाड लिखता हूँ। पत्र पटी म डालने चल पडता हूँ। इधर आया तो कुछ समय के लिए पुस्तकालय म बठने की इच्छा हुई। एक पुस्तक ल मैं पढने का प्रयास करता हू। गाँव चला जाऊँ बापू को देख आऊँ ? पत्रोत्तर तक ठहरना चाहिए शायद वे ही आ जावें।

हेलो रवि, सारी टू डिस्टब यू। मैंन देखा गीता है।

नही, नहीं वसे ही बठा था।

बडी एकाग्रचित्तता है आपम, मैं तो दो मिनट से खडी हू। शायद

नवद (कविता सग्रह 1980)
उस जनपद का कवि हूँ (कविता सग्रह 1981)
परघान (कविता सग्रह 1984)
गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

वह उलाहना देती है।

बैठिय।' मैं कहता हूँ।

वह पुस्तक हाथ म ले उलटती है। यह भी एक रहस्यमयी लडकी है। न जाने क्या मुझसे घुलती मिलती है। उस दिन कटीन मे मैंने भुगतान किया ता कोइ उपकार किया ? वह तो एक सयोग था। पर मन म जगह दी नही जाती व स्वय ही ले लेते हैं।

सचमुच मन न लग रहा हो तो चलो चाय पी आयें। वह पुस्तक परख कहती है।

क्षणेक मे निणय लेना असभव है मेरे लिए। हाँ कहूँ या ना। पर यह इतनी आत्मीयता और इस ताने-बाने को तोडता कोई मुझ पर हावी हो जाता है—रवि तेरी मान्यताएँ गलत ह। यह एक सामान्य बात है यह शिष्टाचार है। लडके लडकी म मित्रता होती है। चाय साथ मिल बठ पीना कोई अपराध नही है। अपने पुराने सस्कार बदलने होगे। पर अभी समय लगगा।

मैं झूठ बोलता हूँ 'बस अभी पीकर ही आया हूँ थैंक्स।'

कोई बात नही', वह मुस्करा दी। यह मुस्कराहट अक्सर बेचैन कर देती है मुझे। मैं झेंप गया। कक्षा म गभीर और मितभाषी यह लडकी तो चपल नही होनी चाहिए कि मेरा असत्य ताड जाय। फिर भी कितना अच्छा व्यवहार है इसका।

आप लाकस तक चलेंगे ?' वह अनुरोध करती है। मैं उठ गया। मन ऊल-जुलूल बाता म फिर रमन लगता है। यह इतनी सहज क्यो है ? इसका बर्ताव मेरे प्रति इतना अच्छा क्या है ? आशकाओ की असख्य दीवारें मन म खडी हो जाती हैं। लाकर से एक पुस्तक निकाल मुझे देती है 'इसे शर्मा को द दीजिय। सर ने कहा था एक दिन म नोटस बना इसे शर्मा को द देना।

हम पुस्तकालय से बाहर आ गय। ऐसे समय न जान क्या मैं भोंडी सी शक्ल बना लता हूँ। गीना हँस मुख है कितना शांत है इसका चेहरा।

सुधा और मोनी म अच्छी मित्रता है ? मैं गीना का ध्यान लान पर बठे उन दोनो की ओर आकृष्ट करना चाहता हूँ।

मित्रता ही है-दुश्मनी तो नहीं है।' वह एक शब्द जजाल फैला देती है। यह प्रश्न है या उत्तर। यदि लान पर छात्र छात्रा बैठे वतिया रहे हैं तो इस बार मे जिज्ञासा क्या होनी चाहिए। अब बोलने की बारी मेरी ह।

'आप घर ही जा रही ह न ?

हा क्या ?

वसे ही पूछ लिया।' मैं सोचने लगता हूँ यह पूछने की क्या आवश्यकता थी।

चाय तो नही पीनी ?

'नही

अच्छा तो डयू रही।' वह हाथ हल्का सा हिला चल देती ह। मैं उसे जाते हुए कुछेक क्षण देखता रहता हूँ।

(7)

यह प्रोफेसर साहब की किताब' पुस्तक बढाते हुए मैंने शर्मा को कहा। वह पुस्तक ले खोलकर देखने लगा।

तुम्हें किसन दी ? उसने पूछा।

मिस गीता ने बडी मुश्किल से तीन शब्द निकल पाये। तत्क्षण शर्मा के चेहरे पर बदले तेवर उभर आये। मैं स्मरण करने लगा वे क्षण जब पार्टी के बाद हमारे बीच गर्मागम शब्दो का आदान प्रदान हुआ था। मैं फिर साहस बटोरने लगा। गीता से पुस्तक ल अब पछता रहा था। पर अब कुछ नही हो सकता। केवल तब ही सकता था जब उसने लाकर से निकाल पुस्तक दी थी।

'तुम क्यो लाये इसे ?' मेरी कल्पना के विपरीत उसने एक हल्का प्रश्न किया।

उसने मुझे दी।

पर मैं पूछता हूँ तुम क्यो लाये इस ? उसने पुस्तक उछाल दी। किसी विद्वान के लिखे सूत्र घास चरने लग।

उसने कहा शर्मा को दे देना।' मैंने कहा।

वह कहेगी कि शर्मा को छुरा घाप दो तुम करोग ? वह बटन खोल

शब्द (कविता सग्रह 1980)
उस जनपद का कवि हूँ (कविता सग्रह 1981)
अरण्यान (कविता सग्रह 1984)
गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

वाहें चढाने की प्रक्रिया मे लग गया।

इसका मेरे पास कोई रेडीमेड उत्तर नही। नबर एक ता गीता छुरा घोपन का आग्रह करेगी क्यो? नबर दो इस काय के लिए मेरा ही चयन क्या?

नबर तीन

शर्मा इसम इतने गुस्से होने की बात क्या है?

'तुम मेरे और गीता के बीच मे क्या टपक पडते हो?

धरातल जब नजर आता है। ता मैं अवाछित पुरुष शर्मा की योजना म रोडा हू। वह कोई माध्यम बनाता है और मैं बीच म टपक पडता हू। पर म दोषी कहा हूँ। वस्तुत मैंने कभी भी आडे आन की चेष्टा नही की।

यार शर्मा मुझे गलत मत ल। मेरे मन मे ऐसा लेश मात्र भी विचार नही रहा। सच पूछा तो मुझे अवकाश ही कहा है? अल्प आय वाले ग्रामीण का बेटा हू मुझे भविष्य की चिंता है। म इसके समथ नही।' मेरा गला रुध जाता है।

उसका पारा कुछ नीचे उतरता नजर आता है। पर अभी भी वह सामान्य के चिह्न से ऊपर है।

ता तुझे हीनता का अनुमान है। तू जानता है एक बार सपक स्थापित हान क बाद परिणति क्या होती है।'

बच्चू पढा करना सारी उम्र पछताओगे।

भला कोई शुभेच्छु इससे भी भली क्या सलाह दे सकता है। घनिष्ठता स्थापित करने के बाद क्या परिणति होनी होगी मुझे विचार करना चाहिए।

'लो इस बार फिर माफ करता हूँ। पर इस शत पर कि तुम पुस्तक लौटाते हुए उससे कहो—म नही मिला।'

उस समय म बडा उपडा सा था। खाना नही खाया। चारपाई पर औंधा पडा म सोचता हू। गीता घनिष्ठता बढाने के लिए ही मेरे स खुली हुई है? क्या शर्मा का अथ है कि वह नादानी करती है ता मुझे उसके अनुरूप नही होना चाहिए। सुराही से एक गिलास भर पानी पीता हूँ फिर लेट जाता हूँ। यह घडी निणय की है रवि, मेरा आदश जागता है। मैं कहता हू मानो से मिलना है, हम नोटस आपस मे लेत-देत हैं। क्या इस लिस्ट म गीता का

नाम दूमरा नही हो सकता । आखिर कुछ से तो मुझे बनाकर रखनी होगी
मेरे मन म कोइ मल नही तो क्या डरूँ शमा से । मुझम कौन-सी हीन
है शर्मा की तुलना म । यदि शर्मा ने कुछ गडबडी की तो म देख लूगा ।

मैं प्रयास करूगा कि एक कवच बन जाये चार पाँच सहपाठियो
ग्रुप । बस शमा बिगाड ही क्या लेगा मरा ?

(8)

शमा से मैं नही मिल पाया सारी । कल रात शर्मा से प्राप्त मुर्ख
चढा मैंने पुस्तक लौटाते हुए कहा । यद्यपि मैं अपनी बौखलाहट छुपाने
सफल हो गया पर मरी अतरात्मा धिक्कारी—बस इतनी ही हिम्मत ?
दर रात तक कितनी योजनाएँ तयार की थी तूने । रपट गया न । रक्त प्रव
चेहरे पर तेज हो गया ।

तू इसे शर्मा को दे देना । गीता ने पुस्तक सुधा को द दी ।

'इस शर्मा के बच्चे को पुस्तक से क्या लेना देना ?' सुधा ने प्र
किया ।

सुधा ही सँभाल सकती है उसे । गीता की आँख अब भी मुझ पर ग
हैं । मैं शकित बटोरता हूँ कि कही कुछ कह न बैठू ।

आज पढोगे नही क्या ? वह थोडी सी खिसक जाती है कि एक के लि
बठन का स्थान हो जाये ।

ललाट पर हाथ फेरते फेरते कहता हू 'आज पीछे बठूगा ।

लडकी के पास बठने स घबराहट होती है ।' सुधा किसी को बख्श
के मूड म नही है । न जान कब हेरिसन वपनी वाले इसक मुह का तार
बनायेंगे ।

हाँ ऐसा ही समझिये । मैं सम्मोहित सा कहता हू ।

परवाह नाट गीता के पिता मनोचिकित्सक हैं । और वह नकर
गभीर मुद्रा बना गीता स पूछती है तेरे क्लास फैलो से भी व फी
लेंगे ?

तू सिफारिश कर देना । गीता मुस्काती है ।

सुधा मेरे हाथ से फाइल छीन मेज पर पटक दती है । मैं झेंप मिटा

1 ...
शब्द (कविता संग्रह 1980)
उस जनपद का कवि हूँ (कविता संग्रह 1981)
प्रस्थान (कविता संग्रह 1984)
नगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

हुए बठन को समझता हू कि शर्मा हाथ पकड घसीटते हुए कहता है—'वहा से बोड पर लिखा नही दीखेगा । इधर आ जा पढाकू ।'

सर कब आये पता नही । मन कहता है यदि शामा इतना ही इच्छुक है तो स्वय का इतना सभ्य क्यो नही बनाता कि कोई आकृष्ट हो। मैंने कभी आग्रह किया है ? लेशमात्र भी झुकाव है ? यदि वह मुझे मित्र योग्य समझता है तो क्या दोष । सुधा और मोती भी मेरे मित्र हैं। यह शामा मात्रा म ही मेरा दुराव क्यो चाहता है । इस बीच नोट बुक पर कुछ लिखता रहा।

चलोग नहीं क्या अगला पीरियड खाली है।' मोती न मेरा कधा छूते हुए कहा । मुझे लगा जैस किसी सपन म खो गया था । मैं उसके साथ चल पडा। कटीन म गीता, सुधा बाट जोह रही थी।

अमीर बाप के बेट होते ही अनसिविलाइज्ड है ।' सुधा गीता के किसी प्रश्न का उत्तर दे रही थी शायद।

तो मरे पर व्यग्य बाण छोडे जा रहे हैं ।' मोती ने आरोप लगाया।

'कुछ बादाम बादाम खाया करो। बुद्धू देव ।' और वह एक ठहाके के साथ हस पडी । मोती-सुधा के बीच इसी भाषा का चलन है, सब जानते हैं।

मिस्टर रवि, इफ यू डाट माइड। सच कहो तुमन शर्मा को यह पुस्तक नहीं दी ? गीता के स्वर में आक्रोश था।

मैं तपका गया।

'तुम साफ क्यो नही कहते रवि । सुधा मेर कमजोर तम को झक झोरना चाहती है शायद । पर यह सुधा विनान क्यो पढ रही है। थानेदार हो जाय तो अच्छे-अच्छों के राज खोल दे । अपनी हीन ग्रथि को कुचलते हुए मैं बोला ही रिफ्यूज्ड ।' सयम रखते हुए आगे कहा यह तुम से ही पुस्तक लेना चाहता है।'

ब्लडी बास्टड ।' गीता ने हाथ मेज पर पटके । अपने द्वारा कहे वाक्य की ओर मेरा ध्यान गया। यह आप शब्द से तुम तक कब पहुँच गया मैं और गीता के तमतमाये चेहरे को निहारता रहा। गुस्से म भी कितनी अच्छी लगती है यह । पर यह शर्मा से रुष्ट क्यों है। उसने कहीं मिस...

कहीं कोई मिल गया था

रिक्शा वाला खडा पैडिल चला रहा था। चढाई अधिक होने से वह नीचे उतर रिक्शा को हेडिल पकड खीचने लगा।

'अच्छा हुआ तुझे वजीफा मिल गया।'

'हाँ बापू, वरना शहर के खर्च भारी होते हैं।'

'भगवान जो करता है वह अच्छा ही करता है।'

निचली मजिल पर कोने का कमरा होना बापू के लिए सुविधाजनक रहा। पूर्णत एकात, सामने हरी भरी कटी घास। मैस म कह दिया कि एक गस्ट हाउस्ट कमरे म भेज दिया करें। बापू का मन लगने लगा। उन्हे कुशल देख मैं प्रसन्न हूँ।

उस दिन मैं कक्षा से लौटकर आया तो बापू ने पूछा गीना कौन है बेटा? उनकी आवाज म कुतूहल ही थी कोई जाच पडताल नही। फिर भी मैं हतप्रभ रह गया। यह बापू क्या पूछ रहे हैं। यह शर्मा का बच्चा यहाँ तक पहुच गया?

'मेरी कक्षा म पढती है बापू।' मेरे स्वर म सकोच था 'पर आप से काई मिलने आया था?

कौन है अपनी पहचान का यहाँ। मैं तेरी मेज पर बिखरे कागज ठीक कर रहा था। उस कापी पर नजर पड गयी। बैठे-बठे कुछ तो करने को चाहिए। 'ओह।' राहत की लम्बी सास ली और बोला 'बडी कक्षाओ मे हम विषय पर नोटस बनाते हैं और आपस म सरकुलेट करत हैं। ये गीता के लिख नोटस हैं बापू। मधावी छात्र है वह।' यह कस कह गया मैं, मुझे मालूम नहीं। एकमात्र यही विशेषण उसके उपयुक्त क्यो है मालूम नही। वस्तुत वह मेधावी लगती है मालूम नही।

'अच्छा है। पर शहर है बेटा।'

इस शहर' शब्द ने मुझे विचलित कर दिया।
होता है कि उसमे हो रहे प्रत्येक कृत्य पर सिवाय सदेह
जाये? इतना गदा है शहर? सारा कूडा यही भरा पडा
यहीं आ गयी है? निष्पाप व्यक्ति के लिए यहाँ कोई
जान [illegible] है कि कोई फदा डाल देगा?

'बापू, आप ऐसा क्यो सोचते हैं।' शायद मैंने

कहीं

मुझ पर विश्वास नही है आपको ?

ऐसा मत सोचो रवि बटे मेरी धारणा यह नही है। दरअसल ठाले बैठे मस्तिष्क म शतान का वास होता है। तू एक अखबार मँगा लिया कर।'

मैं आज से कह दूगा। पर कुछ भ्रम व्यथ मे उत्पन्न न करना बापू। मैं शहर मे आकर भी वही हू जो गाव मे था। मैंने पुन विश्वास प्राप्त करना चाहा।

मुझे तेरे पर पूरा विश्वास है बेटा। जा, हाथ-मुह धो आ।

(10)

अगला पीरियड प्रेक्टिकल का था। व्याख्यान कक्ष से हम चारों लग भग साथ-साथ निकले। सहसा मुझे अपनी आँखो पर विश्वास नही हुआ। यह क्या देख रहा हूँ। बापू कार्यालय के द्वार से कुछ हटकर बठे हैं। हक्का बक्का सा मैं तेजी से उधर बढा और बापू को इशारा किया कि वे चले आयें। पोच से बाहर पहुचते पहुँचते मेरा बनियान गीला हो गया। मैं आवेश म सोचने लगा यह चुपचाप जासूसी हो रही है ?

यदि गीता से मरी मित्रता है तो इसम कौन सा अपराध है। यह बापू म अवांछित अविश्वास पनप क्यो रहा है ? तभी मेरा आदश मुझे धरातल पर पटकता है—तो तू भागकर क्यो बाहर आ गया ? मिला देता बापू को गीता से। वह भी देख लेती तरे म्तर को। तुम गुप्त क्या रखना चाहत हो अपनी हीनता को। तेरी गाव की सादगी कहीं घुटन टेक रही है ? जरा एक बार बापू को देखकर गीता की प्रतिक्रिया तो देख ले ? बापू ने पास आकर कहा पडा पडा शरीर दुखने आ गया था सोचा उन प्रोफेसर से ही राम राम कह आऊ। ज्वार की लहरो से टकराता तट सा मेरा पीडित मन कुछ शात हुआ। यह बापू भी रहस्यमयी है। कभी कभी कितना सकते म डाल दते हैं मुझ। अच्छा हुआ कि मर सयम ने साथ दिया, वरना मैं आवश म कुछ कह जाता और न जाने उसका पश्चाताप कब तक करता।

प्रोफेसर रोज नही आत जब उनकी कक्षा होती है तब ही आत हैं। वे चश्म वाले मर थ न बडे अच्छे हैं। मैं मिलाऊँगा बापू तुम्हें।

यात्रा

गीता ने शिकायत की, आज शर्मा ने फिर शरारत की। गीली च्युगम कुर्सी पर चिपका दी। यह देखो सारी कमीज चिपचिपी हो गयी।' च्युगम लगे स्थान को उसने मसला।

तो फिर हमसे क्या शिकायत करती है कहती क्यों नही हैड से।' मेरा हारा-सा मन कहता है।

धन्यवाद दो शर्मा को गीता।' सुधा उछली और मेरी ओर मुडकर बोली रवि तुमने तो कभी बताया ही नही कि पिताजी यहाँ आये हुए हैं।' उसकी शरारती आँखें गीता से चार होना चाहती रही।

मुझे जोर का झटका लगा मानो किसी ने फुलस्पीड में ब्रेक लगाया। इस धूर्त शर्मा ने किस आशय से सूचना दी है? मेरे अंदर का गरुड उत्तेजित हो चीत्कार उठा। कहा से इतना गरल प्राप्त किया है तूने शर्म तुमको आती नहीं मगर। मेरे अंदर से गुस्से से झाग उठे आ रहे हैं जैसे किसी ने कोका कोला की शीशी में नमक डाल दिया हो।

'कब मिला रहे हो हमें। लडको के होस्टल में लडकियो का प्रवेश निषेध है?' शिकायती गीता अपनी मूल शिकायत भूल गयी थी। मेरे अंदर झाग बढने लगे।

'आशीष प्राप्त करनी है?' सुधा ने चुहल की। पूरी शक्ति से गीता ने सुधा की चोटी खीची और औंधे होते-होते बची। मैं इस समय कठिन मन स्थिति में हू क्या कहूँ?

एक दिन मिलाऊँगा भाई। वे अभी अस्वस्थ हैं जरा सँभल जायें। फिलहाल बात टालने के दृष्टिकोण से झूठ का पुट लिया।

होस्टल में आया तो बापू सो रहे थे। एक कुर्सी पर पसरकर बैठ गया। सामने टेबल पर ही मेरा पहचान-पत्र पड़ा है। उस पर चिपका फोटो कहता है—रवि अब तो स्थिति कुछ स्पष्ट है तुझे एक निश्चय लेना चाहिए। मैं कहता हूँ—क्या निश्चय लू रवि वस्तु स्थिति इतनी सहज नही है। यदि सच्चा स्नेह है तो क्या न मिला दू बापू को।

फोटो—बापू इतने स्वच्छंद प्रकृति के नहीं हैं। उन्हें इच्छा न हो तो भी व तेरी इच्छा के विरुद्ध कुछ नही करेंगे।

कहीं कोई मिल गया था

मैं—नही बापू का दुखी होना पसद नही है मुझे।
फोटो—एक बार मिला तो दें ?
मैं—और यदि उन लोगा ने मेरे प्रति कोई और धारणा बना ली तो।
बापू ने करवट ली, आ गया बेटा।'
'हा बापू।' मैंने शायद कहा।
बाथरूम जाता हुआ कोई गा रहा है—वह अफसाना जिसे अजाम तक लाना न हो मुमकिन उस एक खूबसूरत मोड देकर छोडना अच्छा। ए गायक मुझे अवकाश चाहिए!

(12)

इधर डेढ दा महीन हुए शर्मा कक्षा मे नही आता। इन दिना मेरा अध्ययन भी ठीक हुआ। डस्टर भी ढेर सारी चाक खा गया। लगभग तीन चौथाई कोस पूरा हो चुका है। हमारे नोटस नित नया घर आबाद करते हैं। मैं बापू को तो भूल ही गया उन्होंने भी वाडन साहब के पिता के साथ घूमना और बैठना आरभ कर दिया है।
उस दिन तिरगे ने मुझ चक्र को पुन घेर लिया।
कल चौदह जनवरी है। याद है दिनाक तो, मकर सक्राति है। हम पतग उडायेंगे गीता के घर। सुधा न सूचना दी।
आओगे रवि। गीता के स्वर म आग्रह था।
बापू' इतने दिन के सजोये सयम की रक्षा कर मैंने अपना कवच आगे किया।
तू तो बिल्कुल बच्चा है रवि। कोई व्यथ की चिता करन से रिकवर होता है ? बुढापे म समय लगता है।
मोनी अनुभवी स्वर म बोला।
पढते पढते बोर हो गये हैं कुछ चेंज हो जायेगा। तो आ रहे हो न।'
गीता ने पुन आग्रह किया।
'आ जाना दद्दू शकर।' सुधा शायद मेरी कमजोरी सबसे अधिक समझती है। उसने अपने स्वर मे चपलता ला कहा— इसके पिताजी से डायगोनिसिस भी करा लेना।

का कवि हू (कविता सग्रह 1981)
(कविता सग्रह 1984)
सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

बीफाना

सान मार्को चौक के एक कोने पर बस की इंतजार म खडा था कि सूझा चल, बच्चा के साथ हो जा इन्हे ऊब चीरन का सौभाग्य प्राप्त है। दिया तो होगा किसी परी न अपने चहेत आरा क ठुकराय, बच्चे को यह वरदान किंतु उस बच्चे ने अपन स सगी-साथिया को स्मरण रखते मागा होगा—यह सौभाग्य सभी बच्चो को मिले। परी न पूछा होगा—और ? ठोढी पर अँगुली टेक चुकन के बाद शिशु मुस्कराया होगा—बडे जो हमारे साथ हो उन्हे भी खुशी मिले। बारी बच्ची की है। उसने पत्ता उलटकर ढेरी पर रखा। झुककर देखन लगी फिर बेपरवाह हाथ झटक दिया—न मिला तो न सही। ताश नही है यह—हीरो की, खिलाडी की, फुटबाल की कप आदि की चौकोर सादे गत्ते पर छपी तस्वीरें है—बच्चे जिन्हे बटोर एल्बम बनाते हैं। हवा के झोके के साथ नम ठडे आगन पर बठे बच्चे और सट गये। च च च, लडके का भी नही मिला दोना की पतली गडियाँ जाचत मैंने अपने से कहा। तीसरे ने हाथ की उलटी गडडी से पत्ता उठाया। घुघराले बाल कैसे गुथे हैं टोपा बेपरवाह उकडूं है। बस्तो का हाल तो देखो ! पाठशाला और घर की बात और है रास्ते म तो इन्हे भी छूट है। बेटे तकदीर के सिकदर हो पत्ते समेट गडडी का मुटापा दबाते देख मैंन उससे मन ही मन कहा। मोड पर पहुँचकर लौट आया, बस का कोई अता पता नही। नया खेल ! एक पत्ता जरा मोड फुटपाथ पर रखा। तिरछे हो ताली बजायी लडकी ने। पत्ते ने आलस-सा तोडा बस। साथी न हल्के गुस्से म बच्चे के कान पर चपत छुआयी और घुटनो पर बैठ गया। मुझे

[illegible] 1980)
उस जनपद का कवि हूँ (कविता संग्रह 1981)
अरघान (कविता संग्रह 1984)
गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

हँसी आयी, जूते म गीली मिटटी के अलावा कुत्ते का मल भी चिपका है। वह एक हाथ की ताली भी बेअसर रही। गुड्डी स बिना आँख मिलाये उसने गरदन झटक दी। प्रतिद्वंद्वी को तेज पवन का लाभ न मिले इसलिए दोना सट गये। जेब म गडडी ठूसे अब तक विजेता रहे, ने अगुलिया मे अँगुलियाँ फँसा हथेलियो को फुर्ती से मिलाया कि हवा इस तरह छूटी मानो जान बची। पत्ता उलट गया। वह जरा तना सफलता के बाद का डेविड इसमे मिलता-जुलता रहा होगा। मैं चौंका—क्विक्वा ? लपका कि पीठ थपथपा दू, परतु हाथ जेब म ही रहा। जरा खिसक बस का समय पढ़ने लगा—अतराल लिखे हैं। क्या करें! आकाश सदव की तरह आज भी चटकीला रग लिए नहीं है। वे बद मुटठी थटकवर सामने आयी अँगुलिया का पूव कथन करने का खेल खल रहे हैं। लडकी उछली सियोग्निा जिओवाना आ गयी। कौन-सी महिला ? यह तो हमारी बस है। किस विषय की अध्यापिका एसी उपेक्षित सुस्त होगी!

पहिये के ऊपर की यह सीट है—उठी हुई। क्विक्वो के कधे पर न वस्त पर छपा इ दच्चा काफी घिसा है। नीली पैंट पर कमर से टखने तक खिचा सफेद सीरा मला है। चमडे की कोट आस्तीन से फट रही है। जरा पास चलू यह कौन-सा खेल है!

सिन्यारे हरिरामा कस हैं ?

बन! और तुम फ्रांचेस्का ?

ठीक ही, धयवाद। मुस्कान का इत्ता-सा अरसा! वह गभीर हो सम्य होने के प्रयत्न करने लगा। मैंने नन्ही की ओर देखा वह मेरी ही छान-बीन कर रही है। मेरे मुस्कान पर वह मुस्करायी नहीं। क्या, कुछ-कुछ काला हूँ इसलिए या क्विक्वो न अपन साथियो को मेरे बारे म बता रखा होगा मैं फ्रांचेस्का की ओर पलट जाता हूँ—'क्विक्वो घर चल रहे हो ?

माँ रखो हयबकाया। प्यार का नाम 'क्विक्वो बहुत दिनो बाद' मुह पर आया था।

ग्रातिया। माँ के पास ', खरबूजे के भीतरी रग-सा वह चहरा मन मन बदलने लगा।

अन्य यात्रियों को मार्ग देने का बहाना बनाते हुए स्टॉप नजर आते ही मैंने हाथ हिलाया— जाओ चिक्को।'

अविवेची सिन्यार।' विदा, पर अपनत्व नहीं। वहा उतरकर, भूख की फटकार खाते काफी चलना पड़ा था। शम जो हावी हो गयी थी कि बस ठहरते ही उतरना उचित लगा।

उबलने को रखे पानी में अधपीसे नमक की डलियाँ फेंकते कहीं खिसक गयी भूख को बार बार पुकारा था। इस नन्हे से दूरी बढाने पर अपनी स्थिति सुधरी या बिगडी? वित्तोरी —मकान मालिक, खुश रहा तो वह मकान बदलने को नहीं कहेगा जरा-सी नाराजगी पर जो सुविधा है वह नहीं मिलेगी। परन्तु वित्तोरी ने कब कहा कि चिक्को से प्यार नहीं करूं? पानी उबलता देख मैंने स्पगहेटी डाली थी। पिता की उपेक्षा बढ रही है अतः पुत्र से दूरी रखने पर बचाव रहेगा—यही तो था तुम्हारा परिकलन। इससे कहीं पहले था एक अनुमान इसी बालक के प्रति—इटली की लोक कथाओं में वर्णित स्पेन का राजकुमार जिसकी सुंदरता लोग झेल नहीं पाते थे राजकुमार को चेहरा सात पर्दों से ढका रखना पडता था। चिक्को की वे बातें, उसके प्रश्न भारत में खेल रही अपनी बच्ची को उसमें देखना अब जबकि और जान पहचान हो चली, समय गुजारने के साथ जान लिए तो भूल चले अकेलेपन के दिनों के एकमात्र साथी को। पनीर का टुकडा हाथ से फिसल गया। मैंने कचरे की टोकरी की ओर निशाना साधा था। कम्प्यूटर की बारीकियों में दक्ष जरा अंदाज तो लगा चिक्को ने तुमसे दूरी बढा दी या तुमने चिक्को से और उपलब्धि? मैं उठा था कि कहीं मीठा मिल जाये। अलमारी का किवाड धकेला—कहाँ होगा? चिक्को के बहाने टाफी बिस्कुट पेस्ट्री मिल जाती थी। अब, इधर जो भारतीय स्वाद भूल चले न, खरीद पर आस्था भटक गयी तो जुडे हुए से रीझो! मैंने माथा झटका, नहीं। इस तरह दिन बिताने में घबराहट होती है। बच्चों की सोहबत आँकडों से खोखले विचारों से, अवकाश दिलाती है।

हे भगवान! ये दस महीने कैसे कटेंगे? अनजान तौर-तरीके हैं इस देश के,

(कविता संग्रह 1980)
का कवि हूँ (कविता संग्रह 1981)
(कविता संग्रह 1974)
सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

वह मा ? क्या वह वही राजकुमारी है जिस पर शाप है किसी डायन का ? अवधि पूरी होते ही बेटा बिछुड़े हुए पति पत्नी को आलिंगनबद्ध करवा देगा। मगर किसका है वह शाप—सद-कुछ एक साथ जी लेने की चाह ? अह ? ऐसी कई सारी गठानें डालते हुए स्वय को सबोधित कर कहा था—हरि उस इटेलियन लोक कथा को कभी मत भूलना जिसमे बुद्धिमान सालोमान सीख के तौर पर नौकर स कहता है—दूसरो के टटे मे मत उलझो। मगर आखें मूद लो और बालो स उन्हे ढक दो फिर भी जटिल सामान तो खदबद करता ही रहता है। इधर, रोमाच छिटक अलग हो गया मगर भुगतन को रह गया किक्को। अबोधत्व की उम्र म ही तौलने को बिठा दिया उस दुकान पर। आज मा-बाप के प्यार म बासीपन कुछ बडा होगा तब कोई किशोरी इस सभलत सभलत दिल को लात मार द तो—उफ। नही।

उस शनिवार की दोपहर किक्को घर म नजर नही आया था। सोकर दुपहरी काट ली कल रविवार भी ऐस ही गुजारना होगा ? वित्तोरी स मैंने पूछा था—'किक्को स्वस्थ तो है ? तुम लाये नही।' 'तुम्हारा क्या ? तुम्हे थोडे ही पालना पडता है, समय देना होता है, खर्च करना पडता है।' सलामी के गोल टुकडे को दो स्लाइस के बीच दबा कुतरने लगा था वह। मुझे न जाने क्यो लगा था कि उबलकर दूध बिखर रहा है मैं गस की ओर भागा था। कहाँ स उबल जायगा। अभी बढाकर ही तो पलटा था किक्को का हाल जानन के लिए। यो ही आच को घटाते बढाते वह दृश्य स्मरण हो गया। कुछ दिनो पहले ही किक्को की गिलास से रस छलक कर फर्श पर गिर गया था। वित्तोरी का तमाचा अधिक ताकत लिए था—कौन साफ करेगा ? चुपचाप गिलास उठा किक्को अपने कमरे म चला गया था। साहस नही जुटा पाया था कि देख आऊ कि बच्चा अब भी सुबक रहा है ? इधर के व्यवहार से लग रहा था कि पिता के पुत्र के प्रति ममत्व म औपचारिकता आ रही है। चाँटा, इस मामूली बात पर चाँटा ! तो वित्तोरी भी अलग नही कि इतालियन अक्खड होता है ? तो आद्रेया तर तान, व्यग्य बाण, चुटकियाँ रग ले ही आयी। वित्तारी झेपू किस्म का, भला-सीधा आदमी। मिलनसारी स दूर काम-स-काम। अपने खाली समय म पढ़कर यत्र ठीक

जनपद का कवि हूँ (कविता सग्रह 1981)
(कविता संग्रह 1984)

करेगा या कुछ बनायेगा। और यह सनक बाध्य कब
या मूलत ही है ? आद्रेया के अनुसार ही जानता हूँ
राजी न रख पाया इसलिए तलाक हो गयी।

इस घर म प्रवेश के आरंभिक दिन याद आते हैं
जायेंगे। सकस, हालिडे आन आइस, प्रदशनी दि
देखेंगे। नया महीना लगत ही खिलोना या मौसमी
आयेगा। रविवार को नहलाने मे मदद करेगा पि
सिखायेगा बेटे को। ठूँस-ठूँस कर खिलायेगा। नन्हें
बारीकी भरेगा। कुछ गिर गया तो हँस देगा उठाते
फूगा नहीं और जरा-सा रस इधर झलक गया त
निठल्ले बहानेबाज आंद्रेया का जादू असर दिखा
कहेगा 'वित्तोरी तो बूढ़ा हो गया' या 'इधर-उधर
तुझे कुछ नही होता ?' वित्तोरी काम कर रहा
'इसकी औरत भाग गयी फुसत ही-फुसत।' दिन मे
पटनी नही गया' या 'फ्लोरेंस मे प्रेमिका की कमी
सांता क्रोचे के उधर ही चला जाया कर यार ग
प्राय हँसते रहते थे आंद्रेया की फब्तियो पर।

गम-गम दूध से ठड तो हटी ही, ताकत भी ब
भागने की तयारी आंद्रेया क बताये रास्ते के कारण
सना फिर कांच मे निहारना, यह शादी का इराद
कि नपुसक तो न हो गया हूँ ? वित्तोरी ने ही किवा
माफ करना तो बहुत दूर की बात, नमस्कार या
उस रात निणय लिया था—इस घर म रहना है
उचित है। किक्को, उसका बच्चा है तुम्हारा नहीं
दूसरों के टटे में मत फँसो। मकान की तगी
मकान मालिक खुश हो उसी मे तुम रहो। टहलने
था मैं उस रात से।

रपन के कारण आयी
कि वह चुस्त स्त्री को

। बाप-बेट पहाडी पर
त्तोरी फ्राचेस्को अवश्य
कपड़ा किक्को के लिए
ना फिर नाश्त की कला
िमाग म उपकरणा की
लाड स कहगा—टूटा
इतना भारी चांटा
गया ? काफी पीते हुए
जब लाग चिपटते हैं ता
हागा तो टिप्पणी होगी।
लच पर छेडेगा कोई
हा हा-हा' या रात म
मीं पान। आसपास बठे

गयी। सूखा ठडा खाकर
है ? नहाकर सुगधि उडे
है या कि महज जाँचना
ड भिडाया है मैंने देखा।
शुभरात्रि भी नही। मैंने
तो वित्तारी की पसद ही
सोलोमान की सलाह है—
लिए इस शहर म जिसम
के लिए स्थान छाँटने लगा

मानो मर्मी की ओर पीठ हो और विया क्वूर हात हुए बिया मारतली पहुंच तो दायें जम संग्रा मग्रह का स्माप है। साथ खडे वित्तोरी को क्या पता कि मिर्वेरो महाशय इस बात को 'सि योरिना जियावाना' नाम से पुकारते है। वस की इतजार म खडे हम दोना म से वित्तोरी दुआमो की सुदरता मे ज्या मिति देखना रहा है। निस्सदेह फ्लारेंस की इस केन्द्रीय चच की नोवो गोथिक स्थापत्य कला को बरसो तक निहारते जाओ। परतु मैं खिलोना की दुकान म सजावट देख रहा था। मुखौटे ठस शो-केस स बाहर डलिया म नन्हो के लिए बहुत सारे आकपण है। कपडे के रग बिरगे अजगर प्लास्टिक क बल्ले, तलवारें, चमचमाते कागज लिपटी छडियाँ। एक अकेला लडका निरीक्षण कर रहा था। वह तलवार भरे डलिय के समीप रुका। इधर-उधर देख एक तलवार उठायी। हाथ मे तौला और दोनाताले के डेविड की मुद्रा म खडा हो गया। जरा हाथ खोला तलवार उलटने-पलटने लगी। मूठ अपने सीने स सटाय हुए सचेत कदमो से वह एक मुखौटे की ओर बढ़ा था कि काच का दरवाजा धक्के के साथ खुला। उस व्यक्ति ने भागकर बच्चे का कधा दबोचा था। हाथ से तलवार छीन डलिया म पटक धक्लते हुए बच्चे को फुटपाथ पर ले आया था। व्यक्ति की चिल्लाहट से वित्तोरी भी इधर मुड गया था। बसा की इतजार म खडी भीड पास खिसक आयी थी। टमाटरी चेहरे वाली महिला की अँगुलिया मे फँसी सिगरेट का धुआ बच्चे की श्वास मे जा रहा था। व्यक्ति न झकझोरते हुए कहा— इसे पुलिस म दूगा। फूले सीने की तरस आ रहा था समुदाय पर कि कोई प्रतिक्रिया नही। वह कडका—'न काम करता है, न पढता है, न मा-बाप का पता— चोर है। महिला के हाथ की सिगरेट गिर गयी। उसन बच्चे को पकडा बाबीनो। बच्चे का जी मचल गया होगा छोड दीजिए।' व्यक्ति को मानो इसी की तलाश थी— तुम्हारा है? महिला सकपकाई। ठहरी कारा की आवाजें हावी हो गयी। एक क्वारी बढी— चोरी नही करोगे। बस ही देख रहे थ न। लडका स्तब्ध मानो उसने कुछ सुना ही नही। मैंने मन-ही मन कहा—एक ही गधा है। अभागे न अभी तो हम सब तेरे प्रति सहानुभूति लिए हैं। व्यक्ति बडबडाने लगा— रोज आता है। न जाने कितना माल उडाया होगा। लडके के चेहरे पर भय का नाममात्र भी नही, जरा सा

... 1980)
... का बिंदु (कविता सग्रह 1981)
... न (कविता संग्रह 1934)
सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

ग-सा मुख है—भद्रजन की संतान नहीं, गदी
ला कोट। हाठ पर हाल ही नयी नयी चमडी
। मिची मिची आँखें कभी-कभार उठा लेता
गोरा, 'उठाईगीर, चोर बनेगा ? पाठशाला
— छोड दीजिये महाशय माफ कर दीजिये।'
विन का मन ढुल मुल हुआ। मगर दो पुलिस
ह फिर कडक हो गया। बच्चे का हाथ उह
ाम पाउलो है और अपना परिचय काड बढा

ा स्टॉप पर आ गये थे। अवश्य ही इस बीच
था। दाये खडा वृद्ध बडबडाने लगा—'बच्चे का
या उह तो ' मैं गाल पर छिडके थूक को
य है, इस लडके ने पुलिस से क्या है मेरे पास'
क्या नहीं कहा मैंने देखा विक्तोरी ? कहाँ चल
उडाते कहता है पकडे रखना वरना विक्तोरी
। मुझे बिना कहे कहाँ चल दिया वह ? अभी
बात-बात में कहा था बुरी नीयत तो नहीं थी
ती ओर हागी। चर्च और वाप्तिस्तेरी के बीच
सी बालक के हाथ से मक्का के दाने चुगने की
हैं। उस पाउलो का भी दाने चुगाते हुए फोटो
कधे पर बिठाया होगा और निर्देश दिया होगा
तो कब आयगी, पैदल ही चलते हैं, मैंने सोचा।
र भी यही खडा कभी लेखा-जोखा लेते हैं। यह
भिखारी बच्चे की तरह फुटपाथ पर क्या नहीं बैठ
ारे सिक्के हैं। राहगीर डालते ही हैं। अभी मदक
नक मनोरंजन हेतु। नित नया खिलौना होना है

ा चोरी का मंतव्य था ही नहीं। क्या मैं शुरू से
क्रियाएँ सरेआम की, अपने में मग्न था कि इस

व्यक्ति न पकड़ा था। मैंने जो देखा, कुछ-कुछ समझा वही कह देता। एक विदेशी के कहने से वह खेलता बच्चा बच जाता चलो दुआओं का परिक्रमा ही की जाये, सोच या विषय बदले शायद। हरे और सफेद संगमरमर मध्युता बना है, सुंदरता वह कहाँ ? डीजल की भाप की कितनी परतें जमी हैं। नाखून से खुरचें तो कितनी उजली हो जाय यह इमारत। खुद का नुक्सान न हो जाय, इस सावधानी के कारण। कहीं कोई निस्वार्थ काम करता भी है। आज भी शनिवार है, किक्को साथ घर होगा। गुमसुम अपने आपमें व्यस्त। वित्तोरी किसी निर्देश की पालना करता लायेगा खिलायेगा सुलायेगा। उस जंजीर की कोई कड़ी बनाता मैं भी औपचारिक बातें करूंगा। मोड़ देखकर मैंने स्वयं से कहा—चलते ही हैं। इधर सिन्योरिया पियाताजा होते हुए आरनो नदी के समानांतर चल बूढ़े पुल पान्तवेक्यो का पार कर सीधा बढ़ूंगा तो पित्ती गलरी और फिर अपने घर की गली। मगर कदम इस ओर बढ़ना नहीं चाहते। किक्को से डर लगता है। चालीस साल के तुम छह वर्ष के बच्चे से घबरा गये ? कितना सरल था— देखोगे मुझे स्कीइंग करते हुए ! वह तेजी से मेरी ओर भागेगा और पाँच सात कदम बढ़ने पर गिरकर फिसलता आयेगा। अथवा आज तो नाचते हैं — ला ला की धुन के साथ हाथ झूल उठेंगे तथा मचल गये पाँव गिरते गिरते सभलेंगे।

फ्रांचेस्को से दूर रहने का मंतव्य सहज हो जाय इसलिए शो रूम शापिंग करना मट्रल मर्कातो के पास के हाट बाजार के चक्कर लगाना गैलेरियाँ छानना कोई बच न बच जाय बिन देखे। फिर भी एक ही बात है कहीं हावी कि वित्तोरी इशारा कर दे मैं लिपट जाऊंगा किक्को से। उस दिन अजायबघर में वह मूर्ति देखने लगा था कि यह मिट्टी की खिलौना गाडी किक्को के पाँव में जरा हटी हुई उलटने को है। उछला कुत्ता अपना पंजा उसके नंगे घुटने पर टिकाने को है। अधखायी रोटी का दायाँ हाथ उठा है।

फ्रांचेस्को के उत्तेजित गाल पर असमर्थता भरा एक आँसू ! गर्दन झटकते हुए मेरे बाल बिखर गये थे। हम बड़े, अपनी असफलता के घाव हुए कहीं गुस्सा न निकाल सके तो बच्चों को धकिया देते हैं। मैं स्टेशन की

...1980)
अनपढ़ का कवि हूँ (कविता संग्रह 1981)
(कविता संग्रह 1984)

मगर हो नही पाता। वित्तारी कुछ कह देगा, वह बात नही, क्यो से निबटने का तो साहस है मगर अवाध से जिसके साथ छल कि सयाना हूँ चालबाजी की ही विधि आती है। वह लचीलापन कहाँ दू—बहुत बुटटी हो गयी यार अब दोस्ती करते हैं। कौन मा जा टॉफी भरा कपडे का जूता चिमनी के पास छुपा आया हू। ऐसी मुझे कि उसे अभी पता न चले सवेरे छत टटोले और बीफाना का पाकर वही मस्त चाल चल दे। जैसी कि मेरे भाई के पुत्र के लिए छाटते समय किक्को चल रहा था।

क्या पकाता है का सयोजन बठाता रसोई म आ गया था। स लिए कुम्हला गये पत्ते हटा रहा था कि दरवाजा खुला। 'आओ।' की मुस्कान भली भली थी। हाथ पकडे फ्राचेस्को ने आदर के साथ न किया— ब्वानेसिरा', बहुत अच्छी सध्या रह उससे बढ़कर प्रभात बाला म खेलती मेरी अँगुलियाँ कह रही थी। मैंन सोचा, बस न बहाना बनता नहीं अब प्रयत्न कर—असफल रहे तो रहे। 'हरे राम सिरका सरसा जालिव तेल हो। यह बनायेगा सलाद। क्या किक्क स्तभित रह गया था वित्तोरी के परिवतन को देखता। वित्तोरी ऐसा ? तो राड तो रडापा काट दे पर रडुए काटने द तब न। देख टालने के मन से नही छोडा है। किक्को उधर सीटी पर जो धुन स ठीक जुड़ी न होते हुए भी दिन की वह टिप्पणी वित्तोरी पर असर क क्या ? चोरों की घटना के समय दिन म, गिरजाघर को देखते-देखते ही तुक्का लगाया था मैंने— समर्थों की पुरानी आदत है दण्डित करत पर लटकाते समय ईसा की तुलना भी तो चोरो स की गयी थी।'

किक्को उजला उजला है आज। या ही हसा फिर मुस्करा दिया पनती नजर आ रही है। मगर शुरुआत ? मैं अटके को धकेलता अधिक जाल मत बुन कह भी डाल। फ्राचेस्को बडा ट्रैफिक है सड बुडढो को—बच्चा को परेशानी रहती हागी।

कुछ न समझती किक्को की उजली आँखे एकटक हैं।

ऐस भीड भडक्क म बुढ़िया बीफाना उपहार कस पहुचा पाती बच्चा का। लुकुटिया टेके झुकी कमर लिए झुरियाँ मलती खुद क

न रखे या हरी-पीली-लाल बत्ती देखे।'

वा ध्या क्को के मुख पर मुस्कान खेल गयी मैंने खुद को बधाई दी—बच्चा त वह ही दी।

सी वा मेरे हिसाब स तो उसका यह काम जनवरी स मार्च तक बढ़ गया।' मैंने टोहा। तो मुख वनानिक की गणना म उसे कुछ-कुछ सच होगा आन लगा है। बस यही क्षण है, अपने चोर को धकेल दे।

नजर 'मुझे तो भरोसा है, कल सुबह वह तुम्हारा उपहार छोड़ेगी छत जरूर।' असमजस मे किक्को के उजले दांत थकित हैं। अगले पल ही वह शेयन ना नजर आता है। मैं गाजर धोने लग जाता हूँ।

सोच छत पर खट-पट क साथ हमारी नजरें एक साथ ऊपर उठी हैं। किक्को हल ही कोई पहुंच गया? कल छत पर कुछ न मिला तो मेरी गणना स पा नाथ भी उखड जायेगी। मेरी धडकन तेज हो उठी। किक्को उछला री ओ। ओ हो हो, तब ता कोई परेशानी नही। किक्को के बाजू मेरी स्या र बांधने को हैं। मैं पीछे हाथ बांध उसे सटा लेता हूँ। हम अगल बगल कम जाते हैं। उसकी पकड से तेल लगा काँटा फिसल जाता है जो मेरी बठ परपपा अपने गतव्य पर लुढक जाता है। 'नियत कुछ नही कहत मैं पेट ा उठाता हूँ। वित्तोरी को आते देख मैं छत की ओर काँटा उठा पूछता कांट – बिल्ली थी?' वह हस दता है। सेब उठा दो टुकडे करता है। फ्रान्चेस्को है ाठों को छुआता है आधा अपने दांतो की ओर ले जाता है। अपन र ारी पर अविश्वास किये मैं बार-बार जानना चाहता हू इस घर म भीर ीत आरभिक महीन हो इतन आगे बढकर लौट जाय हैं?

सि चारे हरेरामा, हरेरामा—भगवान के नाम के साथ केवल खिंच रहा है। माना सपन म अक्सर सिलसिला नही होता किंतु इतना ऊटपटांग भी ता नहीं। किक्को के मुख पर रसा तज है मानो अभी-अभी तो एक बी दो ल्ड हुआ हो। मुर्गा-सा आकार बनाये सोना हाथ बीफाना का उपहार है डिया की तरह हिला रहे हैं। मेरी प्रसन्नता की पीठ पर असमजस झांक दा रहा है। दा य मे? मैं तो एक ही तो क्या अनचीन्हा चमत्कार भी

होता है ? अनजाना वह माध्यम द्वारा नहीं करवाता स्वय ही पुष्टि दे
है ? 'बुनजोर्ना' शुभ दिन की कामना करता वित्तोरी आधा भीतर आ
बाहर है। तो ? भऽऽ ऐसा ? चप्पल म अगूठा फँसाते पीठ थपथपात हा
हवा म फडफडाता रह गया है। फ्राचस्को ने भागकर पिता को बाँध लिय
है। दोनो हाथो म उपहार मानो सही का चिह्न बनाये हैं। और सही क
चिह्न इतना मोटा ताजगी लिए होना भी चाहिए। •

□□

नाम   धनराज चौधरी

जन्म   १८ सितम्बर १९४२

स्थान   जालोर (राज)

शिक्षा   भौतिक शास्त्र म पी एच डी

सम्प्रति   राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर
म भौतिकशास्त्र के प्राध्यापक

प्रकाशित कृतियाँ

प्रवाह, तीसरा पहर (उपन्यास)
गौतमबुद्ध और एक दुखी आत्मा (व्यग्य सग्रह)
ज्वर यात्रा (कहानी सग्रह)